स्वस्ति-याग

पुरु त्वा दाश्वान् वोचे, ऽरिर् अग्ने! तव स्विद् आ ।
तोदस्येव शरण आ महस्य ।। ऋग्वेद १.१५०:१

समर्पित मैं तेरा प्रभूत स्तवन कर रहा हूँ। हे अग्नि! समर्पक सदा तेरा ही हुआ करता है, मानो कि महान शिक्षक की शरण में वह रहता हो।

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं
भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते
हन्यमाने शरीरे।

(भगवद्गीता २/२०)

यह आत्मा कभी जन्म नहीं लेता और न यह कभी मरता ही है। इस आत्मा का अस्तित्व कभी समाप्त नही होता। यह अजन्मा, शाश्वत, नित्य और पुरातन है। शरीर के मर जाने पर भी यह नहीं मरता।

The soul is never born nor does it die; nor does it exist on coming into being. For it is born, eternal, everlastin, and primeval; even though the body is slain, the soul is not.

(Bhagavadgita 2/20)

स्वस्ति-याग
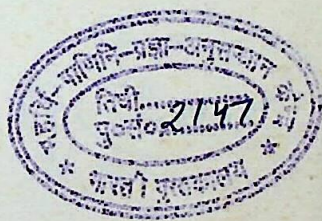
स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'

वेद-संस्थान
नई दिल्ली
२००२

कहाँ-क्या?

आवरण परिकल्पना : रजनी वर्मा (प्रोमिला)

शुभारम्भ

भारत की जनता जहां धर्मप्राण है वहां यज्ञप्राण भी है। यज्ञ में इस देश की जनता की विशेष श्रद्धा है।

यज्ञ विश्वव्यापक है। 'यज्ञ' के अनेक अर्थ हैं। यज्ञ की असंख्य शाखाएं हैं। यह जो अग्नि में घृत और हवि की आहुतियां देकर यज्ञ किया जाता है यह यज्ञ की बड़ी उपयोगी और महत्त्वपूर्ण शाखा है।

यदि वैज्ञानिक रीति से, विधिपूर्वक अग्नियाग किये जाएं तो जहां राष्ट्रों और जनपदों को नीरोग और स्वस्थ रखा जा सकता है वहां जनता के मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक विकास का मार्ग भी प्रशस्त किया जा सकता है। साधन उपलब्ध होने पर इस दिशा में वेद-संस्थान की ओर से अश्वमेध-पर्यन्त अनेक यज्ञपद्धतियां विधिवत् प्रकाशित की जाएंगी जिनमें यज्ञों के विषय में प्रभूत वैज्ञानिक विवेचन होगा।

सर्वप्रथम इस 'स्वस्ति-याग' को प्रकाशित करने का एक विशेष कारण है। गृहस्थों और संस्थाओं द्वारा जो बड़े-बड़े यज्ञ कराए जाते हैं उनकी अन्तर्निहित भावना स्वस्ति, सुख और शान्ति होती है। इस उद्देश्य की पूर्ति करनेवाली अभी तक एक भी यज्ञपद्धति नहीं है। इस अभाव की पूर्ति के लिए ही यह 'स्वस्ति-याग' है।

इस यज्ञपद्धति के लिए चारों वेदों का सतर्कता तथा मनोयोग के साथ पारायण करके चारों वेदों में पठित स्वस्ति, शमु, शान्ति और ईशनमन के ऐसे समस्त मन्त्रों का संकलन किया गया है जिनका अग्नियाग में विनियोग विहित हो सकता है।

आशा है, यज्ञप्रेमी विद्वान् तथा जनता इसका यथोचित स्वागत करके वेद-संस्थान का उत्साहवर्धन तथा साधनपरिवर्धन करेंगे।

—विद्यानन्द 'विदेह'

पंचम संस्करण का प्राक्कथन

श्री स्वामी विद्यानन्द 'विदेह' ने लगभग ४८ वर्ष पूर्व, १९५४ ई. में स्वस्ति-याग का संकलन किया था। विगत वर्षों में यह याग काफ़ी प्रचलित हुआ है। स्वस्ति-याग के इस पंचम संस्करण में मंत्रों के अर्थ दे दिए गए हैं जिनकी कि जब-तब मांग रहा करती थी। मात्र शब्दार्थ दिया गया है, जो व्याख्या-सापेक्ष है जैसे कि वेदों का प्रत्येक मंत्र होता है। बिना व्याख्या के, मात्र शब्दार्थ स्वयं में अपर्याप्त होता है।

यह संस्करण श्रीमती नरेन्द्र आर्या जी की अन्तःप्रेरणा का सुफल है। उनकी अभिलाषा को साकार करने में उनकी भतीजी, श्रीमती सुनीता पालिता ने स्वस्ति-याग के इस संस्करण को अपने कुल-परिवार के पावन दान से प्रकाशित कराया है। श्रीमती नरेन्द्र आर्या और श्रीमती सुनीता पालिता का वेद-संस्थान आभारी है।

स्वस्ति-याग का यह परिवर्धित संस्करण याग-प्रेमी जनता की सेवा में उपहृत है।

—दिनेश मिश्र
मन्त्री, वेद-संस्थान

"ओ३म्"

भाव-भीनी स्मृतियाँ

अध्वत्ये वो निषदनं पर्णे वो वसतिठकृता।
गोभाज इत् किलासथ यत् सनवथ पूरुषम्।

ऋ १० ९७.५
य० १२-७९
३५ - ४

ऐसे स्थान पर तुम्हारा निवास है जहाँ कल का भी भरोसा नहीं है। यह शरीर जो पर्णशाला के समान है उसका ऐसे संसार में बसेरा है जहाँ क्षण का भी भरोसा नहीं है। मानव जीवन तो पीपल के पेड़ के पत्ते के ऊपर पड़ी पानी की बूंद की भाँति है। कौन जाने इस संसार से कब विदा होना पड़े, यही वास्तविक सत्य है। मानव जीवन के कई पहलु हैं- जैसे व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं समाजिक तथा बौद्धिक। कुछ व्यक्ति अपने परिवार के समस्त उत्तरदायित्व को पूरा कर जंगल स्थित आश्रम में निवास स्थान बना लेते है, निवास आश्रम में है परन्तु चित्तवृत्तियाँ पूर्णरुपेण घर परिवार एवं सम्वन्धी जनों में। पांचों विषयों पर भी नियन्त्रण नहीं, तृण्णाएँ ज्यों कि त्यों। पुत्रेषणा, लोकेषणा, वित्तेषणा तीनों विद्यमान। दूसरी ओर कुछ व्यक्ति ऐसे है जो घर में रह कर भी अपना जीवन साधु-सम व्यतीत करते है। मेरे पितृ मातृतुल्य देवी देवता सम मेरे पूज्य बड़े भाई नरोतमलाल आहूजा व भाभी बिमलारानी आहूजा का जीवन ऐसा ही था। बड़े भाई ने जन्म तो पाया पाहवा खानदान में परन्तु पोषण एवं शैशव यौवन काल सब आहूजा खानदान में हुआ। २) वर्ष के थे तभी मेरे पिताजी ने अपनी छोटी बहिन जो निःसन्तान थी उनकी गोद में दे दिया।

अपनी बहन के प्रति हमारे पिताजी की यह असीम उदारता अपने आप में एक मिसाल थी। बारह वर्ष की आयु में अबोध बालक को यह आभास हो गया कि वह दो परिवारों का अटूट अंश है। ईश्वरीय देन जीवन पर्यन्त दो परिवारों की जिम्मेदारियां निभाते रहे। इक्कीस वर्ष की अल्पआयु में विवाह-सूत्र में बध गए।

मेरी पूज्य भाभी बिमला रानी आहूजा जीवन संगिनी के रुप में मिलीं। वास्तव मे देवी के रूप में आहूजा खानदान में आ गई। उनको भी दोनों परिवारों के सम्बन्ध की जानकारी हुई। बड़ी बुद्धिमता से अपने जीवन काल में वह एक धुरी के समान दोनों तरफ जुड़ी रही। तीन भाई छोटे, दो बहने छोटी थीं। मैं कहा करती थी यह भाई हमारे मर्यादा पुरूषोतम राम के समान

और भाभी कौशल्या की तरह है। दोनों भाई-भाभी ने तप त्याग तपस्या की भट्टी में तपते हुए दोनों माता-पिता के प्रति, अपने छोटे बहन-भाईयों के प्रति, बड़े प्रेम से अपने पूरे जीवन काल तक अपने उत्तरदायित्व को निर्वाहन किया। "नरोत्तमलाल" नाम था, नरों में उत्तम प्रशंसनीय जीवन था।

सारे बहन भाई हम हृदय से उनका सम्मान करते थे। आन्तरिक स्नेह था दुःख-सुख में सब एक दूसरे के काम आते थे। अपने कष्ट की परवाह नहीं करते थे। धार्मिक उज्जवल चरित्र था, मेरे से उनका विशेष बहुत स्नेह था मुझे अपने जीवन में कोई क्षण नहीं याद आता जब कभी किसी समय भाई-भाभी से मन मुटाव हुआ हो ऐसे भाई-भाभी को खो कर कोई सुख शान्ति से जीवन जी सकता है। यह मेरा स्वाभिमान है परन्तु परम पिता परमेश्वर का अटल नियम है, सांसारिक संबंध साथ नहीं देते। वह दोनों अपने जीवन में शुभ कर्मों की सुगंध फैलाकर चले गये। अपनी पूज्य प्यारी भाभी के गुणों का वर्णन करने की मुझमे शक्ति नहीं। एक कुशल गृहणी, कठोर परिश्रमी, मृदुभाषी एवं कर्त्तव्य निष्ठा सर्मपित जीवन। माँ, बहन, भाभी, पुत्री एवं पुत्रवधु सभी रूपों में निखरा हुआ जीवन। सुख-दुःख में सदा समान रही आर्दश ध्वजा की तरह परिवार में रही, प्रेरणा की स्त्रोत थी। अपने देवरों, ननदों को मातृवत् प्यार दिया। सब के हृदयों में बसी हुई थी। वाणी ऐसी थी जब बोलती मानों फूल झरते थे, वेद पढ़ी तो नहीं परन्तु जीवन वेदानुकूल था।

जिह्वा अग्रे मधु में जिह्वा मूले मधूलकम् जिह्वा के अग्रभाग में भी मधु था, मूल भाग में भी मधु था। अन्तःकरण शुद्ध पवित्र था छल कपट नाम मात्र भी नहीं था। विनम्रता कूट-कूट कर भरी थी। हृदय में संवेदना थी अपने परिवार की एक सृजन शक्ति थी। एक धुरी थीं। पतिपारायण हर समय अग्रणी बन कर रही अपने भीतर हृदय में उन्होंने आलौकिक गुणों को आत्म सात किया हुआ था। मन से पवित्र, तन से निष्कलंक, व्यवहार से उदार, शुद्ध आचार-विचार वाली थीं। प्रातःकाल के सूर्य की तरह निष्पाप कुटिलता से रहित सेवाभावी हर समय कार्य करने की इच्छा रखने वाली थी। इतनी कर्मठ भारतीय नारी थीं कि अस्वस्थ होते हुए भी दूसरो के हितचिन्तन में मग्न रहती थीं ममता मयी माँ थी उनके समान सहनशीलता और सेवा में सलंग्न मुझे मेरे जीवन में दूसरा नहीं मिला। हालांकि राधा-स्वामी गुरु की शिष्या थीं, मेरे साथ यज्ञ बड़ी श्रद्धा से करती थीं, पूर्ण आस्तिकता से ओत-प्रोत थी। पांचों यज्ञों को पूर्णरूपेण करना जानती थी। अतिथि यज्ञ तो उनके जीवन में पराकाष्ठा के शिखर पर था, कोई उनके घर से चाहे वह परिचित हो या अपरिचित अन्न-जलपान, भोजन के बिना नहीं जाता था। हँसते हुए सब का स्वागत करती थी। कभी कहती भाभी जी अपना

स्वास्थ तो देखा करो तो बड़ी मधुर वाणी से कहती - नरिन्द्र मेरे घर से कोई अतिथि खाली चला जाए तो [illegible] डाल देती।

यह था भारतीय आदर्श, उनके प्यारे शव्द अभी भी स्मरण आ रहे है। हृदय विह्वल हो रहा है, उनका अभाव कोई पूरा नहीं कर सका, करूणा, ममता, उदारता, सेवा एवं समर्पण की साक्षात्कार मूर्ति थी। आत्मीयता सद्भावना की संगम थी, आस्था निष्ठा की प्रतीक थी, साधारण नारी नहीं थी। हमारे परिवार की मशाल थी। दैवीसम्पदा से भरपूर उनका प्रेरणादायी जीवन बोलता था। अपनी मधु स्मृतियों के रूप में तीन पुत्र, दो पुत्रियों को छोड़ गई हैं उन बच्चों का हृदय भी अपने माता-पिता की तरह सात्विक स्नेह से ओत-प्रोत है। ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ जो अपने पीछे पुत्र-पुत्रियाँ पुत्र-वधु पोते-पोती दोहतो को छोड़ गये हैं परमपिता परमेश्वर उन को मेधाबुद्धि दे। माता-पिता के गुणों का अनुकरण करते रहें और अपने जीवन को यशस्वी बनायें। उनके समान सहनशीलता और सेवा में संलग्न मुझे मेरे जीवन में दूसरा नहीं मिला।

दोनों देवता स्वरूप थे। मेरे पूज्य भाई ने तो और भी कमाल कर दिया अपनी पार्थिव देह को भी अग्नि की भेंट नहीं होने दिया। यह भी किसी के काम आ जाये तो परोपकार का कार्य है। दिल्ली के भारतीय आर्युविज्ञान संस्थान में, शोध कार्य हेतु अपना शरीर दान देने का संकल्प उन्होने ५५ वर्ष की आयु में ही कर लिया था। कितना यशस्वी कार्य कर गये है जो आने वाली सन्तति सदा स्मरण करती रहेगी। मैं उनकी भावनाओं पर श्रद्धा प्यार के फूल समर्पित करती हूँ। जहां भी वह दोनों दिव्य आत्माएँ है उनको शत्-शत् नमस्कार करती हूँ, उनका ऋण तो मैं कभी भी अपने जीवन में उतार नहीं सकती अपने सच्चे हृदय से अपनी श्रद्धांजलि प्रकट करती हूँ। परमेश्वर मुझे शक्ति दे उनका कोई न कोई गुण जीवन में धारण कर सकूँ, दिव्य आत्माएँ जहां भी जिस लोक में हों आलोकित करती रहें परिवार के ऊपर उनका आर्शीवाद बना रहे, सुखों की वर्षा होती रहे, परिवार के लिए मेरी हृदय से मंगल कामना है। सभी स्वस्थ एवं निरोग रहें सभी दीर्घायु हों। परमपिता परमेश्वर की प्रेरणा से उनके पुत्र-पुत्रियाँ अपने पवित्र धन से 'स्वस्तियाग' की पुस्तक अपने माता-पिता की पुण्य स्मृति में प्रकाशित करा कर विदेह जी के चरणों में समर्पित कर रहे हैं। ऐसी उदार भावना कहां से आई, प्रसुस्त संस्कार भी समय पा कर जागृत हो जाते हैं यह उनहीं देवता सम माता-पिता के ही संस्कार है। अन्त में मैं फिर सभी के लिए मेघाबुद्धि की प्रार्थना करती हुँ। ऐसे शुभ श्रेष्ठ कर्मों में अपने धन का सदुपयोग करते रहें। इस लोक में यश के भागी बनें अपने माता-पिता के नाम को अमर करें।

(तुच्छ बहन नरेन्द्र आर्या-वानप्रस्थी)

समर्पण-आभार

स्मृति-संयोग दर्द भरे होते हुए भी शक्ति-प्रदायक है। परमपिता परमेश्वर को प्यारे हुए, मामा-बाऊजी, हमारे माता-पिता उन दिव्यगुर्गो से परिपूर्गा थे ; जिनकी सत्यता व सुन्दरता हम अपने जीवन में पल-पल महसूस करते हैं। संस्कारों व आकारों में दी गई उनकी सीख जब जीवन को सबल, सुन्दर व सरल बनाती है तो मातृ-पितृ शक्ति को शत्-शत् नमन करने की इच्छा और प्रबल हो उठती है।

'इदं न मम', हमारे बाऊजी के स्वभाव-चित्त की पहचान थी। 'मेरा मुझ में कुछ नहीं जो कुछ है सो तेरा, तेरा तुझ को सौंप कर क्या लागे है मेरा', यही है बाऊजी के जीवन का निचोड़। कर्तव्य-परायणता की साक्षात मूर्ति हमारी माँ, बाऊजी के जीवन को ; मूल-भूत आधार प्रदान करती थीं।

विरासत में मिले मामा-बाऊजी के इन्हीं गुणों का समावेश हम सब के जीवन में हो, ऐसी ईश्वर से कर-बद्ध प्रार्थना है।

आदरणीय बुआ श्रीमति नरेन्द्र आर्या की प्रेरणा व प्रेम भरी सीख हम बच्चों को सदैव प्रिय रही है। स्वस्ति-याग के संकलन में उनका सहयोग सराहनीय है।

हम बच्चों के प्रति पाहवा परिवार का भरपूर स्नेह व संरक्षण सदैव उत्साह-वर्धक रहा है। स्वस्ति-याग समर्पण में भी उनकी भूमिका प्रेरणादायी रही। मातृ-पितृ तुल्य दोनों बुआ तीनों चाचा व उनके परिवारों के प्रति हमारा स्नेहिल आभार।

आचार्य अभय देव जी के प्रति हम सब अपना विनम्र आभार प्रकट करते हैं, जिनके आशीर्वाद व अनथक प्रयास के बिना यह प्रकाशन सम्भव नहीं हो पाता।

सपरिवार,
'उमेश, गिरीश, राजीव
प्रोमिला , सुनीता

२४ सितम्बर २००२

इस संस्करण के बारे में ज्ञातव्य

मंत्रों के अर्थ

इस याग-पद्धति के मंत्रों के अर्थ पूर्ववर्ती संस्करणों में नहीं थे। वे इस संस्करण में दिए जारहे हैं। इस प्रसंग में निम्न बातें चित्त में रखने योग्य हैं।

१ अग्नि, इन्द्र आदि व्यक्तिवाचक शब्दों के अर्थ नहीं किए गए हैं। ऐसे शब्द, परमार्थ में, आत्मा (परम/जीव) के वाचक होते हैं और साथ ही आत्मा के गुणों (शक्तियों, शील, स्वभाव) को भी बताते हैं। आत्मा के गुणों का अवतरण प्रकृति में हुआ करता है। अतः ये शब्द प्रकृति में विद्यमान शक्तियों का भी बोध कराते हैं। वेदों का एक तो स्थूल अर्थ होता है और एक सूक्ष्म अर्थ भी होता है। दोनों अर्थ साथ साथ अपनी छटा बिखेरते हैं। जैसे, वेदों में, अग्नि शब्द जहाँ यज्ञवेदि पर प्रज्वलित आग का और ताप के अन्यान्य विभिन्न रूपों का वाचक होता है वहाँ अग्नि-प्रतीक में परमेश्वर का दर्शन करना है, यह भी बताता है। इसी शैली से वेद सर्वज्ञानमय और अलौकिक-अपौरुषेय बनेहुए हैं। अध्येता अपने स्तर और अभिरुचि के अनुसार, अपने लिए वेद से अभिप्राय ग्रहण कर सकता है।

२ वेदों के अनेक शब्द, भले ही संस्कृत में और हिन्दी, आदि भाषाओं में प्रयुक्त होते हों, पर उनके कुछ ख़ास अभिप्राय भी वेद में हुआ करते हैं। ऐसे विशेष, पारिभाषिक अर्थ वैदिक कोश 'निघण्टु' में मौजूद हैं। इस संस्करण में वैदिक शब्दों के 'निघण्टु' वाले अर्थ दिए गए हैं।

३ वेदों के मंत्रों में अभिप्रायों का एक साथ ऐसा घटाटोप हुआ करता है कि मानुषी भाषाओं में उन सबको अनुवाद में लाना बिलकुल असंभव है। अतः कोई भी अर्थ केवल कामचलाऊ ही हो सकता है। व्याख्या किए बिना, मंत्रों से कुछ सतही बातें भले ही हाथ आ जाएँ; उनके गहन और तृप्तिकर अर्थ व्याख्या से ही प्रकट हुआ करते हैं। इस सीमा को चित्त में रखते हुए, मंत्रों के अर्थों से उत्पन्न होनेवाली जिज्ञासा का आनन्द लें।

४ अनुवाद में तीन प्रकार के टाइप काम में लिए गए हैं। पतले टाइप में मंत्र के शब्द रखे गए हैं और मोटे टाइप में अनुवाद रखा गया है। अनुवाद में, जो शब्द वाक्यपूर्ति, आदि की दृष्टि से जोड़ेगए हैं वे मंत्र के शब्द के अनुवाद नहीं हैं; यह बताने के लिए उन्हें मोटे और वक्र टाइप में रखा गया है। अनुवाद को पढ़तेहुए ये टाइप-प्रयोग स्मरण रखने चाहिएं।

मंत्रों का उच्चारण

मंत्रों का उच्चारण करते समय निम्न लिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

१ इस पुस्तक में मंत्रों के जिन स्वरों (या अक्षरों) का उच्चारण, अन्य स्वरों के बजाय 'उच्च' करना चाहिए उन स्वरों (या अक्षरों) को अधोरेखांकित कर दिया गया है। मंत्रोच्चार करते समय इन स्वरों (या अक्षरों) का उच्चारण 'उच्च' करने का यत्न और अभ्यास करना चाहिए।

२ मंत्र के आरंभ में ओम् बोलना होता है। यह शब्द मंत्र का अंश नहीं होता है, अतः इसके और मंत्रारंभ के बीच हल्का सा विराम देना चाहिए।

३ मंत्र के मध्य में जहाँ अर्धविराम चिह्न (,) है वहाँ रुककर सांस ले सकते हैं। सांस न लेना हो तो भी वहां कुछ विराम देना चाहिए।

४ मंत्र के पूर्वार्ध की पूर्ति पर, या गद्य-मंत्र में बीच बीच में जहां भी विराम चिह्न ('।') लगे हुए हैं वहां अवश्य रुकना है और सांस भी लेना है।

५ यत्न यह रखना चाहिए कि अर्धविराम/विराम के अलावा कहीं भी सांस न टूटे।

६ उच्चारण करते हुए शब्दों का या समस्त शब्दों के पूर्व-और-उत्तर भागों का बोध कानों द्वारा होते रहना चाहिए। ऐसा उच्चारण वाचक को स्वान्तःतृप्ति देता है और धीरे धीरे अर्थ सूझने से लगते हैं। उच्चारण द्वारा मंत्रों के अभिप्राय तक पहुंचना, यह लक्ष्य चित्त में रखना चाहिए। अतः मंत्र में जहां जहां हाइफ़न ('–') लगे हुए हैं वहां शब्द का तोड़ कानों को पता चल जाए, ऐसा उच्चारण करने का यत्न रखना चाहिए। इसके अलावा प्रत्येक शब्द के आदि-अंत की ध्वनि की पहचान कानों को होती चले, ऐसा उच्चारण करना चाहिए। (यह विषय वस्तुतः आमने-सामने सीखने का है। वेद-संस्थान में मंत्रोच्चारणाभ्यास के शिविर लगते रहे हैं। मांग होने पर पुनः लगाए जा सकते हैं।)

७ मंत्र की पूर्ति के बाद, हल्का सा विराम देकर स्वाहा बोलना होता है। यजमान को ही यह शब्द बोलना है, अन्य किसी को नहीं, क्यों कि जो आहुति देरहा है उसी के द्वारा उच्चारण करने हेतु यह शब्द है। (इस शब्द का अर्थ है, 'मेरी (अन्तर्वाणी) ने (यह) कहा है'। अभिप्राय यह है कि 'आहुति-प्रक्षेप मैं अपनी अन्तःप्रेरणा से कररहा हूँ'।)

८ आहुति-प्रक्षेप 'स्वाहा' बोलने के पूर्व हरगिज नहीं करना चाहिए। 'स्वाहा' बोलकर ही आहुति-त्याग करना है।

याग-व्यवस्था

१ यज्ञस्थल को लीप-पोतकर रोचक और शोभनीय बनाया जाए।

२ यज्ञवेदि एक अनुभवी ऋत्विज् के निरीक्षण में तैयार की जाए।

३ घृत यथासम्भव घर की गौ का हो। घृत की शुद्धता का विशेष ध्यान रखा जाए। शुद्ध घी उपलब्ध न होने पर केवल सुगन्धित जड़ी-बूटियों से यज्ञ किया जा सकता है।

४ हवनसामग्री, ऋत्वनुसार, अनुभवी ऋत्विज् की सम्मति से सम्पादन की जाए। जिस ऋतु में वृष्टि की आवश्यकता हो उस ऋतु में अन्न, मेवा, फल और मिष्टान्न की आहुतियां नहीं देनी चाहिएं।

५ ब्रह्मा के विराजने के लिए यज्ञवेदि के दक्षिण में ऊंची, सुन्दर चौकी बिछाएं। उस पर सुन्दर वस्त्र बिछाकर ऊपर एक उत्तम आसन लगाएं। चौकी पर ब्रह्मा के विराज जाने पर यजमान तथा अन्य इच्छुक जन ब्रह्मा के गले में सूत्र, गोटा अथ वा फूलों की माला पहिनाकर ब्रह्मा का पूजन (सत्कार) करें।

६ यजमान तथा यजमानपत्नी यज्ञवेदि के पश्चिम में पूर्वाभिमुख बैठें। पति अथ वा पत्नी की अनुपस्थिति में स्त्री वा पुरुष अकेले ही यजमान के आसन पर बैठे। उत्तर तथा पूर्व के आसनों पर दो अन्य सौम्य व्यक्ति बैठें। यज्ञसमाप्ति तक सब अपने आसनों पर बैठे रहें। दर्शक वेदि के उत्तर में दक्षिणाभिमुख (ब्रह्माभिमुख) बैठें। सुविधा की दृष्टि से दिशापरिवर्तन किया जा सकता है।

७ ब्रह्मा के साथ मन्त्रों का उच्चारण वे ही व्यक्ति करें जो मन्त्रों का पाठ अत्यन्त शुद्धता के साथ कर सकें। शेष व्यक्ति मौनरूपेण मन्त्रों का ध्यानपूर्वक श्रवण करें जिससे वे मन्त्रों का शुद्ध पाठ सीख जाएं।

८ यजमान घृत की आहुति देवे। यजमानपत्नी तथा अन्य दोनों व्यक्ति घृतमिश्रित सामग्री की आहुति दें।

९ घृत तपाकर छानाहुआ हो। सामग्री भी स्वच्छ हो।

१० घृत की प्रत्येक आहुति न्यून से न्यून आधे माशे की, और सामग्री की प्रत्येक आहुति न्यून से न्यून एक माशे की हो।

११ याग का सम्पूर्ण कार्यक्रम चार वा पांच घण्टे का है। यदि एक ही समय में पूर्ण करने का विचार हो तो प्रातः सूर्योदय से एक साथ चार वा पांच घण्टे यज्ञ किया जाए, किन्तु बीच में स्वस्थ होने के लिए कुछ अवकाश दे दिया जाए। यदि दो दिन में समाप्त करने का विचार हो तो प्रतिप्रातः सूर्योदय से दो वा ढाई घण्टे नित्य यज्ञानुष्ठान किया जाए। सप्ताह वा पक्ष में पूर्ण करना हो तो आधा घण्टा प्रतिप्रातः यज्ञ करें।

१२ यज्ञ की समाप्ति पर, यज्ञस्थल में चौकी पर विराजेहुए ही ब्रह्मा के चरणों में यजमान, यजमानपत्नी तथा अन्य इच्छुक जन पुष्कल द्रव्य, मेवा, फल, नारियल, वस्त्र, पात्र, आदि के रूप में श्रद्धापूर्वक अपनी ओर से भेंट समर्पित करें।

१३ यजमान और यजमानपत्नी आगन्तुकों को प्रसाद-वितरण करके अभिवादन-सहित विदा करें।

१४ ब्रह्मा को विदा करने से पूर्व यजमान और यजमानपत्नी उसे स्वयं भोजन कराएं।

१५ यज्ञ के दिनों में यजमान और यजमानपत्नी पूर्ण ब्रह्मचर्य से रहें, सर्वथा नवीन अथ वा शुद्ध धुले हुए वस्त्र धारण करें, प्रातः-सायं दुग्ध का सेवन करें और मध्याह्न में केवल एक समय भोजन करें।

१६ स्वस्ति-याग प्रत्येक शुभावसर, उत्सव वा पर्व पर अथ वा इससे पूर्व कराना योग्य है। कष्ट अथ वा चिन्ता में ग्रस्त होने पर भी कराना योग्य है।

ब्रह्मा

१ ब्रह्मा वेदों का विद्वान् हो, प्रयुक्त मन्त्रों का अर्थ समझने और उनका व्याख्यान करने की योग्यता रखता हो, शुद्ध, स्पष्ट और सुमधुर उच्चारण करता हो।

२ ब्रह्मा वातावरण को अतिशय श्रद्धोपेत और निष्ठापूर्ण रखे।

३ यज्ञारम्भ करने से पूर्व ब्रह्मा यज्ञस्थल, घृत, सामग्री, समिधा, कपूर तथा अन्य समस्त उपकरणों का निरीक्षण करे और देखे कि सब कुछ स्वच्छ और सुव्यवस्थित है।

४ यज्ञस्थल में ब्रह्मा उन्हीं वस्त्रों को धारण करे जो यजमान की ओर से यज्ञार्थ समर्पित किए गए हों। वस्त्र बिना सिले हों। ग्रीष्म ऋतु में चार वा पांच गज़ की दो धोतियां तथा ढाई-ढाई गज़ के दो अंगोछे पर्याप्त होंगे। शरद् ऋतु में एक ऊनी शाल अथ वा एक हलका ऊनी कम्बल ओढ़ने के लिए पर्याप्त होगा।

ब्रह्मा-वरण

यजमान : ओम् आवसोः सदने सीद।

ब्रह्मा : ओं सीदामि।

यजमान : अहम् अद्य स्वस्तियाग-करणाय भवन्तं वृणे।

ब्रह्मा : वृतोस्मि।

ब्रह्मा द्वारा यजमान तथा यजमान-पत्नी को सम्बोधन

'आप एकाग्र मन से, दत्तचित्त होकर पूर्ण श्रद्धा के साथ इस स्वस्ति-याग का अनु-ष्ठान करें । इस यज्ञ में चारों वेदों के स्वस्ति, शम्, शान्ति और ईश-नमन के मन्त्रों का पाठ होगा । मैं मंगलकामना करता हूँ कि मंगलमय भगवान् आपके परिवार-परिजनों में स्वास्थ्य, नैरोग्य, सुख, सौभाग्य, धर्म, धन और ऐश्वर्य की सर्वतः अभिवृद्धि करे।'

यदि एक यजमान हो। **सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।** य १२.४४

'यजमान की शुभकामनाएं पूरी हों।'

यदि चार यजमान हों। **सत्याः सन्तु यजमानानां कामाः।**

'यजमानों की शुभकामनाएं पूरी हों।'

याग-पद्धति

आचमन (तीन)

१ अमृतोप-स्तरणम् असि। स्वाहा।

२ अमृतापि-धानम् असि। स्वाहा।

३ सत्यं यशः श्रीर्, मयि श्रीः श्रयताम्। स्वाहा।

अङ्ग-स्पर्श

१ वाङ् म आस्येस्तु।

२ नसोर् मे प्राणोस्तु।

३ अक्ष्णोर् मे चक्षुर् अस्तु।

४ कर्णयोर् मे श्रोत्रम् अस्तु।

५ बाह्वोर् मे बलम् अस्तु।

६ ऊर्वोर् म ओजोस्तु।

७ अरिष्टानि मेङ्गानि तनूस्, तन्वा मे सह सन्तु।

प्रार्थना

१ विश्वानि देव! सवितर्!, दुर्-इतानि परा सुव।
यद् भद्रं तन् न आ सुव। य ३०.३

२ हिरण्य-गर्भः सम् अवर्तताग्रे, भूतस्य जातः पतिर् एक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्याम् उतेमां, कस्मै देवाय हविषा विधेम। य १३.४

३ य आत्म-दा बल-दा यस्य विश्व, उपासते प्र-शिषं यस्य देवाः।
यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः, कस्मै देवाय हविषा विधेम। य २५.१३

४ यः प्राणतो नि-मिषतो महि-त्वै,क इद् राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्वि-पदश् चतुष्-पदः, कस्मै देवाय हविषा विधेम। य २३.३

५ येन द्यौर् उग्रा पृथिवी च दृढा, येन स्व स्तभितं येन नाकः।

यो अन्तरिक्षे रजसो वि-मानः, कस्मै देवाय हविषा विधेम। य ३२.६

६ प्रजा-पते! न त्वद् एतान्य् अन्यो, विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्-कामास् ते जुहुमस्, तन् नो अस्तु, वयं स्याम पतयो रयीणाम्।

ऋ १०.१२१.१०

७ स नो बन्धुर् जनिता स विधाता, धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतम् आनशानास्, तृतीये धामन्न् अध्य्-ऐरयन्त।

य ३२.१०

८ अग्ने! नय सु-पथा राये अस्मान्, विश्वानि देव! वयुनानि विद्वान्।
युयोध्य् अस्मज् जुहुराणम् एनो, भूयिष्ठां ते नम-उक्तिं विधेम।

य. ४०.१६

अग्न्य्-आधान

१ भूर् भुवः स्वः। य ३६.३ इससे अग्नि लाना वा कपूर जलाना।

२ भूर् भुवः स्वर्, द्यौर्-इव भूम्ना, पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास् ते पृथिवि! देव-यजनि!, पृष्ठेग्निम् अन्नादम् अन्नाद्याया दधे।
य ३.५ इससे अग्नि को यज्ञ-वेदि में रखना।

अग्नि-प्रज्वलन

उद् बुध्यस्वाग्ने! प्रति जागृहि त्वम्, इष्टापूर्ते सं सृजेथाम् अयं च।
अस्मिन्त् सध-स्थे अध्य् उत्-तरस्मिन्, विश्वे देवा यजमानश् च सीदत।
य १५.५४ इससे अग्नि प्रज्वलित करना।

समिद्-आधान

१ सम्-इधाग्निं दुवस्यत, घृतैर् बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन।
स्वाहा। इदम् अग्नये। इदं न मम। य ३.१

२ सु-सम्-इद्धाय शोचिषे, घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये-जात-वेदसे। स्वाहा।
इदम् अग्नये जात-वेदसे। इदं न मम। य ३.२

३ तं त्वा समिद्-भिर् अङ्गिरो! घृतेन वर्धयामसि। बृहच् छोचा यविष्ठ्य!।
स्वाहा। इदम् अग्नयेऽङ्गिरसे। इदं न मम। य ३.३

पांच घृत-आहुतियां

अयं त इध्म आत्मा जात-वेदस्!, तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय, चास्मान् प्र-जया पशु-भिर् ब्रह्म-वर्चसेनान्नाद्येन सम् एधय। स्वाहा। इदम् अग्नये जात-वेदसे। इदं न मम।

जल-सेचन

१ अदितेनु-मन्यस्व। पूर्व में,
२ अनुमतेनु-मन्यस्व। पश्चिम में,
३ सरस्वत्य्! अनु-मन्यस्व। उत्तर में,
४ देव! सवितः! प्र सुव यज्ञं, प्र सुव यज्ञ-पतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केत-पूः केतं नः पुनातु, वाचस् पतिर् वाचं न स्वदतु।
य ६.१ चारों ओर,

घृत-आहुतियाँ

१ अग्नये। स्वाहा। इदम् अग्नये। इदं न मम।
२ सोमाय। स्वाहा। इदं सोमाय। इदं न मम।
३ प्रजा-पतये। स्वाहा। इदं प्रजा-पतये। इदं न मम।
४ इन्द्राय। स्वाहा। इदम् इन्द्राय। इदं न मम।
५ भूर् अग्नये। स्वाहा। इदम् अग्नये। इदं न मम।
६ भुवर् वायवे। स्वाहा। इदं वायवे। इदं न मम।
७ स्वर् आदित्याय। स्वाहा। इदम् आदित्याय। इदं न मम।
८ भूर् भुवः स्वर्, अग्नि-वाय्व्-आदित्येभ्यः। स्वाहा। इदम् अग्नि-वाय्व्-आदित्येभ्यः। इदं न मम।

'स्वस्ति'-आ-हुतियां

१; . १६३ स नः पितेव सूनवेऽग्ने!, सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये।
ऋ १.१.६

अग्ने! हे अग्नि! नः हमारे लिए सूपायनः भव तुम सुगम रहो, पितेव जैसे पिता सूनवे पुत्र के लिए सुगम रहता है। नः हमारे स्वस्तये मंगल के लिए हमसे सचस्व तुम घुल-मिल जाओ।

२ इहेन्द्राणीम् उप ह्वये, वरुणानीं स्वस्तये। अग्नायीं सोम-पीतये।
ऋ १.२२.१२

स्वस्तये स्वस्ति के लिए इह यहां इन्द्राणीम् इन्द्र की शक्ति—पत्नी को, वरुणानीम् वरुण की शक्ति—पत्नी को, उप ह्वये मैं निकट से पुकाररहा हूं। सोम-पीतये सोम-पान—समर्पण-स्वीकार के लिए अग्नायीम् अग्नि की शक्ति—पत्नी को मैं निकट से पुकाररहा हूं।

३ ह्वयाम्य् अग्निं प्रथमं स्वस्तये, ह्वयामि मित्रावरुणाव् इहावसे।
ह्वयामि रात्रीं जगतो नि-वेशनीं,
ह्वयामि देवं सवितारम् ऊतये। ऋ १.३५.१

प्रथमम् सर्वप्रथम, स्वस्तये स्वस्ति के लिए अग्निम् अग्नि को ह्वयामि मो पुकाररहा हूं। अवसे रक्षा के लिए मित्रावरुणौ मित्र-और-वरुण को इह यहाँ ह्वयामि मो पुकाररहा हूं। जगतः नि-वेशनीम् जगत् की नि-वास रूप रात्रीम् रात्रि को ह्वयामि मैं पुकाररहा हूं। ऊतये रक्षा के लिए देवम् लीलामय सवितारम् सविता प्रेरक/जनक को ह्वयामि मो पुकाररहा हूं।

४; २११ तम् ईशानं जगतस् तस्थुषस् पतिं,
धियं-जिन्वम् अवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसाम् असद् वृधे,

रक्षिता पायुर् अदब्धः स्वस्तये। ऋ १.८९.५

जगतः चर के, तस्थुषः स्थिर के पतिम् रक्षक तम् उस ईशानम् ईश को—धियम्-जिन्वम् कर्म/प्रज्ञा के प्रेरक को अवसे रक्षा के लिए वयम् हूमहे हम पुकाररहे हैं यथा ताकि नः वेदसाम् हमारी उपलब्धियों की वृधे वृद्धि के लिए पूषा पूषा असत् तैयार रहे। स्वस्तये स्वस्ति के लिए रक्षिता रक्षक, पायुः रखवाला, अ-दब्धः अ-दम्य वह तैयार रहे।

५; २१२; स्वस्ति न इन्द्रो वृद्ध-श्रवाः, स्वस्ति नः पूषा विश्व-वेदाः।
२२८ स्वस्ति नस् तार्क्ष्यो अरिष्ट-नेमिः,
स्वस्ति नो बृहस्पतिर् दधातु। ऋ १.८९.६

वृद्ध-श्रवाः बढ़े-चढ़े अन्न-/यश-वाला इन्द्रः इन्द्र नः हमारे लिए स्वस्ति स्वस्ति को धारण करे, विश्व-वेदाः विश्व को जाननेहारा पूषा पूषा नः हमारे लिए स्वस्ति स्वस्ति को तैयार रखे, अरिष्ट-नेमिः अ-टूट रक्षा-परिधि वाला तार्क्ष्यः तार्क्ष्य—शिल्पी नः हमारे लिए स्वस्ति स्वस्ति को ग्रहण करे, बृहस्-पतिः बड़े-बड़ों की लाज रखनेवाला नः हमारे लिए स्वस्ति स्वस्ति को दधातु बनाए रखे।

६ उत नो धियो गो-अग्राः, पूषन्! विष्णव्! एव-यावः!।
कर्ता नः स्वस्ति-मतः। ऋ १.९०.५

उत और, पूषन्! हे पूषा! विष्णो! हे विष्णु! एव-यावः! हे प्रगतिशीलों के साथ चलनेवाले! नः हमारे धियः कर्मो/प्रज्ञाओं को गो-अग्राः प्रकाशानुगामी करो, नः हमें स्वस्ति-मतः स्वस्ति से युक्त कर्त करो।

७; २३६ स नः सिन्धुम्-इव नावया,ति पर्षा स्वस्तये।
अप नः शोशुचद् अघम्। ऋ १.९७.८

नाविक सिन्धुम्-इव जैसे सिन्धु को नावया नौका द्वारा पूर देता है वैसे नः हमारी स्वस्तये स्वस्ति के लिए, अति अति-क्रमण

करके, हमें पर्षे तू दे पूर। नः अघम् हमारा पाप अप पृथक् होकर शोशुचत् झुलस जाए।

८ यम् अश्विना ददथुः श्वेतम् अश्वम्,
अघाश्वाय शश्वद् इत् स्वस्ति।
तद् वां दात्रं महि कीर्तेन्यं भूत्,
पैद्वो वाजी सदम् इद्द् हव्यो अर्यः। ऋ १.११६.६

अश्विना! हे दोनों अश्वियो! अघ-अश्वाय पाप-अश्व के सवार के लिए तुमने यम् जिस श्वेतम् अश्वम् श्वेत अश्व को—शश्वत् इत् सदा ही स्वस्ति स्वस्ति को ददथुः दिया था तत् वह वाम् तुम्हारा कीर्तेन्यम् स्तुतियोग्य, महि महान् दात्रम् दान भूत् हो गया है। वह वाजी अश्व पैद्वः जीवनयात्रा पूरी करनेवाला, सदम् इत् हव्यः सदा ही पुकारने योग्य अर्यः स्वामी अभूत् हो गया है।

९ हिमेनाग्निं घ्रंसम् अवारयेथां, पितु-मतीम् ऊर्जम् अस्मा अधत्तम्।
ऋबीसे अत्रिम् अश्विनाव-नीतम्,
उन् निन्यथुः सर्व-गणं स्वस्ति। ऋ १.११६.८

हिमेन बर्फ़ द्वारा तुम दोनों ने घ्रसंम् अग्निम् दाहक अग्नि का अवारयेथाम् निवारण—बचाव किया। पितु-मतीम् ऊर्जम् अन्न-युक्त ऊर्जा को तुमने अस्मै इसके लिए अधत्तम् स्थापित किया। अश्विना! हे अश्वियो! ऋबीसे अन्धेरे में अव-नीतम् पटकेहुए अत्रिम् अत्रि का, सर्व-गणम् सारे समाज का स्वस्ति स्वस्ति के साथ उत् निन्यथुः तुमने उन्नयन किया।

१० अजोहवीद् अश्विना! तौग्र्यो वां,
प्रोळ्हः समुद्रम् अव्यथिर् जगन्वान्।
निष् टम् ऊहथुः सु-युजा रथेन,

मनो-जवसा! वृषणा! स्वस्ति। ऋ १.११७.१५

समुद्रम् समुद्र पर प्र-ऊढः सवार, अ+व्यथिः जगन्वान् बे-झिझक गएहुए, तौग्र्यः तुग्र-के-पुत्र ने वाम् तुम दोनों को, अश्विना! हे अश्वियो!, अजोहवीत् पुकारा। मनः-जवसा! हे 'मन' वेग वालो! वृषणा! हे वर्षको! सु-युजा रथेन अच्छी प्रकार जुतेहुए रथ द्वारा तम् उसे स्वस्ति स्वस्ति के साथ ऊहथुः तुमने नि-र्वाह किया—निभाया।

११; ४६ त्वं धुनिर् इन्द्र! धुनि-मतीर्, ऋणोर् अपः सीरा न स्रवन्तीः।
प्र यत् समुद्रम् अति शूर! पर्षि, पारया तुर्वशं यदुं स्वस्ति।
ऋ १.१७४.६

इन्द्र! हे इन्द्र! धुनिः संवेदनशील त्वम् तुमने धुनि-मतीः अपः संवेदनशील उदकों को, स्रवन्तीः बहनेवाली सीराः न नदियों के समान, ऋणोः प्रवाहित किया। यत् जो कि तुम, शूर! हे शूर! समुद्रम् अति समुद्र को अतिक्रमण करके किनारे को प्र अच्छी प्रकार पर्षि छू लेते हो, अतः तुर्वशम् तुर्वश को, यदुम् यदु को स्वस्ति स्वस्ति के साथ पारय तुम पार लगाओ।

१२;२६६ अग्ने! त्वं पारया नव्यो अस्मान्त्,
स्वस्ति-भिर् अति दुर्-गाणि विश्वा।
पूश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी,
भवा तोकाय तनयाय शं योः। ऋ १.१८९.२

अग्ने! हे अग्नि! नव्यः स्तुतियोग्य त्वम् तुम विश्वा आन्तरिक दुः-गानि बाधाओं को स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा अति लंघवाकर अस्मान् हमें पारय पार लगा दो। तुम नः हमारी बहुला विस्तृत पूः पुरी—अयोध्या च और उर्वी पृथ्वी विस्तृत पृथिवी हो जाओ, तोकाय अगली पीढ़ी के लिए, तनयाय उससे से भी अगली पीढ़ियों के लिए शम् शांति भव हो जाओ, योः पापनिवृत्ति हो जाओ।

१३ स नो रे+वत् सम्-इधानः स्वस्तये,
सं-ददस्वान् रयिम् अस्मासु दीदिहि।
आ नः कृणुष्व सुविताय रोदसी,
अग्ने! हव्या मनुषो देव! वीतये। ऋ २.२.६

नः हमारी स्वस्तये स्वस्ति के लिए रे-वत् शोभा के साथ सम्-इधानः ख़ूब धधकनेवाला सः वह—रयिम् धन को सम्-ददस्वान् देनेहारे तुम अस्मासु हममें दीदिहि दमको। नः हमारे सुविताय अभ्युदय के लिए रोदसी द्यौ-और-पृथिवी को तुम आ अच्छी प्रकार कृणुष्व तैयार करो। अग्ने! हे अग्नि! मनुषः मनु के हव्या उदकों/अन्नों को वीतये सेवनार्थ, देव! हे लीलाधर!, भली भांति तैयार करो।

१४ सैनानीकेन सु-विदत्रो अस्मे,
यष्टा देवाँ आ-यजिष्ठः स्वस्ति।
अदब्धो गोपा उत नः परस्-पा,
अग्ने! द्यु-मद् उत रे+वद् दिदीहि। ऋ २.६.६

एना अनीकेन इस ज्योति द्वारा सु-विदत्रः सु-प्रतिज्ञ/सु-धन, देवान् यष्टा देवों को पूजनेवाला, आ-यजिष्ठः ख़ूब अतिशय-पूजक, अस्मे हममें निहित सः वह—अ-दब्धः अ-दमित, गोपाः रक्षक उत और नः परः-पाः हमें पार लगानेवाले, अग्ने! हे अग्नि!, स्वस्ति स्वस्ति-पूर्वक, द्यु-मत् द्युति के साथ उत और रे-वत् शोभा के साथ दिदीहि तुम दमको।

१५ स ईं महीं धुनिम् एतोर् अरम्णात्,
सो अस्नातॄन् अपारयत् स्वस्ति।
त उत्-स्नाय रयिम् अभि प्र तस्थुः,
सोमस्य ता मद इन्द्रश् चकार। ऋ २.१५.५

सः वह महीम् महती, धुनिम् पावक ईम् प्रवाह में, एतोः उसके पार जाने के लिए, अरम्णात् रम गया। सः उसने अस्नातॄन् अ-स्नातकों को स्वस्ति स्वस्ति के साथ अपारयत् पार करा दिया। ते उन्होंने उत्-स्नाय ऊपर स्नान करके, रयिम् धन की अभि ओर प्र तस्थुः प्र-स्थान किया। सोमस्य मदे सोम की अर्चना में ता उन कर्मों को इन्द्रः इन्द्र ने चकार किया था।

१६ किम् ऊ नु वः कृणवामापरेण, किं सनेन वसव! आप्येन।
यूयं नो मित्रावरुणादिते! च, स्वस्तिम् इन्द्रामरुतो! दधात।
ऋ २.२९.३

अपरेण वर्तमान द्वारा वः तुम्हारा, नु भला, हम किम् उ क्या तो कृणवाम करें? वसवः! हे वसुओ! सनेन आप्येन सनातन लक्ष्य द्वारा भी तुम्हारा हम, भला, क्या करें? मित्रा-वरुणा! हे मित्र-और-वरुण! च और अदिते! हे अदिति! इन्द्रा-मरुतः! हे इन्द्र-और-मरुतो! नः स्वस्तिम् हमारी स्वस्ति को यूयम् तुम लोग दधात धारण करो।

१७ या गुङ्गूर् या सिनी-वाली, या राका या सरस्वती।
इन्द्राणीम् अह्व ऊतये, वरुणानीं स्वस्तये। ऋ २.३२.८

या जो गुङ्गूः कुहू है, या जो सिनी-वाली सिनी-वाली है, या जो राका राका है, या जो सरस्-वती प्रवाह-वती है—प्रत्येक को मो पुकाररहा हूं। इन्द्राणीम् इन्द्र की शक्ति को ऊतये रक्षा के लिए अह्वे मैं पुकारता हूं। वरुणानीम् वरुण की शक्ति को स्वस्तये स्वस्ति के लिए मो पुकाररहा हूं।

१८ श्रेष्ठो जातस्य रुद्र! श्रियासि, तवस्-तमस् तवसां वज्र-बाहो!
पर्षि णः पारम् अंहसः स्वस्ति,
विश्वा अभीती रपसो युयोधि। ऋ २.३३.३

रुद्र! हे रुद्र! श्रिया श्रीः द्वारा, जातस्य संसार के मध्य में श्रेष्ठः

असि तुम श्रेष्ठ हो। वज्र-बाहो! हे 'वज्र' बाहु वाले! तुम तवसाम् बलों में तवः-तमः परम बल हो। नः हमें अहंसः पारम् पाप के पार स्वस्ति स्वस्ति के साथ पर्षि तुम पहुँचाओ। रपसः पाप की विश्वाः अभि-इतीः आन्तरिक हल-चलों को युयोधि तुम खदेड़ दो।

१९ उद् उ ष्य देवः सविता सवाय,
शश्वत्-तमं तद्-अपा वह्निर् अस्थात्।
नूनं देवेभ्यो वि हि धाति रत्नम्,
अथाभजद् वीति-होत्रं स्वस्तौ। ऋ २.३८.१

तत्-अपाः तत्-रूप कर्म वाला, वह्निः दायित्वनिर्वाहक, देवः लीलामय सविता सविता स्यः वह शश्वत्-तमम् परम सनातन को सवाय गुंजायश देने के लिए उ ही उत् अस्थात् उठ खड़ा हुआ है। हि क्यों कि, देवेभ्यः देवों से लेकर रत्नम् रत्न को नूनम् अवश्य वि धाति वह ख़ूब धारण कररहा है, अतः अथ फिर वीति-होत्रम् व्याप्ति-भोग-रूप होम करनेवाले भक्त को स्वस्तौ स्वस्ति में अभजत् उसने अंगीकार कर लिया है।

२० न यस्येन्द्रो वरुणो न मित्रो, व्रतम् अर्यमा न मिनन्ति रुद्रः।
नारातयस् तम् इदं स्वस्ति, हुवे देवं सवितारं नमो-भिः।
ऋ २.३८.९

यस्य जिसके व्रतम् व्रत को न न इन्द्रः वरुणः इन्द्र, वरुण, न न मित्रः अर्यमा मित्र, अर्यमा, न न रुद्रः रुद्र, न न अ-रातयः अ-दानी लोग मिनन्ति बाधित कररहे हो तम् उस देवम् सवितारम् लीलामय सविता को, इदम् उसके इस व्रत को नमः-भिः अन्नों/वज्रों द्वारा स्वस्ति स्वस्ति-पूर्वक हुवे मैं पुकाररहा हूं।

२१ स नः पावक! दीदिहि, द्यु-मद् अस्मे सु-वीर्यम्।
भवा स्तोतृभ्यो अन्तमः स्वस्तये। ऋ ३.१०.८

सः वह—नः पावक! हमारे हे पवित्रकर्त्ता! अस्मे हमारे लिए द्यु-मत् द्युति-मय होकर, सु-वीर्यम् मंगलकारी सामर्थ्य वाले होकर दीदिहि तुम दमको। स्वस्तये स्वस्ति की ख़ातिर, स्तोतृभ्यः स्तोताओं के लिए तुम अन्तमः अतिशय समीपवर्त्ती भव हो जाओ।

२२ स्वस्तये वाजि-भिश् च प्र-णेतः!,
सं यन् महीर् इष आ-सत्सि पूर्वीः ।
रायो वन्तारो बृहतः स्यामा,स्मे अस्तु भग इन्द्र! प्रजा-वान्।
ऋ ३.३०.१८

च और, प्र-नेतः! हे कुशल-नेता! वाजि-भिः अश्वों के साथ, महीः, पूर्वीः इषः महान्, सनातन अन्नों को लक्ष्य करके यत् जो स्वस्तये स्वस्ति के लिए सम् आ-सत्सि तुम सं-आ-सन्न होरहे हो, तो बृहतः रायः बृहत् धन का वन्तारः सेवन करनेवाले स्याम हमें भी हो जाना चाहिए। इन्द्र! हे इन्द्र! अस्मे हमारे लिए भगः धन प्रजा-वान् प्रजा से युक्त अस्तु होवे।

२३ मिहः पावकाः प्र-तता अभूवन्त्,
स्वस्ति नः पिपृहि पारम् आसाम्।
इन्द्र! त्वं रथिरः पाहि नो रिषो,
मक्षू-मक्षू कृणुहि गो-जितो नः। ऋ ३.३१.२०

मिहः जल पावकाः पवित्रकर्ता और प्र-ततः दूर तक फैलेहुए अभूवन् हो गए हो। नः हमें स्वस्ति स्वस्ति के साथ आसाम् पारम् इनके पार पिपृहि तुम लगा दो। इन्द्र! हे इन्द्र! रथिरः त्वम् रथवान् तुम नः हमें रिषः पाहि हिंसक से बचाओ।

मक्षु-मक्षु जल्दी से जल्दी नः हमें गो-जितः कृणुहि रश्मियों का विजेता कर दो।

२४ युवं प्रत्नस्य साधथो महो यद्, दैवी स्वस्तिः परि णः स्यातम्।
गोपा-जिह्वस्य तस्थुषो वि-रूपा,
विश्वे पश्यन्ति मायिनः कृतानि। ऋ ३.३८.९

इन्द्र-और-वरुण युवम् तुम दोनों प्रत्नस्य इस सनातन भक्त के वैसे लक्ष्य को साधथः सम्पन्न करो यत् जो महः महान् भी है। दैवी स्वस्तिः दैवी स्वस्ति रूप तुम दोनों नः हमारे परि सब ओर स्यातम् रहने चाहिएं। गोपा-जिह्वस्य रक्षा-आश्वासन देनेवाले, तस्थुषः स्थिर देव के वि-रूपा कृतानि विश्व-रूप कर्मों को विश्वे मायिनः सब प्रज्ञावान् लोग पश्यन्ति देखरहे हो।

२५ अयम् अस्मान् वनस्पतिर्, मा च हा मा च रीरिषत्।
स्वस्त्य् आ गृहेभ्य आ,व-सा आ वि-मोचनात्। ऋ ३.५३.२०

अयम् यह वनस्-पतिः वनस्पति—शरीर-वृक्ष अस्मान् हमें मा च न तो हाः त्यागे, मा च न ही रीरिषत् मारे। गृहेभ्यः आ गृहा—तक, अव-सै आ समाप्ति की खातिर, वि-मोचनात् आ वि-मोक्ष होने तक स्वस्ति स्वस्ति ही स्वस्ति है।

२६ आरे अस्मद् अमतिम् आरे अंह,
आरे विश्वाँ दुर्-मतिं यन् नि-पासि।
दोषा शिवः सहसः सूनो! अग्ने!,
यं देव! आ चित् सचसे स्वस्ति। ऋ ४.११.६

यत् जो कि नि-पासि तुम निश्चित-सुरक्षा प्रदान कररहे हो, सहसः प्रवाह—परम्परा/बल के सूनो! हे परिणाम! अग्ने! हे अग्नि! दोषा रात्रि में शिवः शिव तुम यम् जिसे भी देव! हे

लीलामय! स्वस्ति स्वस्ति-पूर्वक आ चित् भर-पूर सचसे मिल

जाते हो, ऐसे हम अस्मत् अपने से अ-मतिम् अ-मति को आरे दूर रखते हो, अहंः पाप को आरे दूर रखते हो, विश्वाम् दुः-मतिम् विश्व दुर्-मति को आरे दूर रख पारहे हो।

२७ अस्माँ इहा वृणीष्व, सख्याय स्वस्तये। महो राये दिवित्मते।

ऋ ४.३१.११

सख्याय मैत्री के लिए, स्वस्तये स्वस्ति के लिए, महः दिवित्मते राये महान्, प्रकाशमय सुषमा के लिए अस्मान् हमें इह यहां वृणीष्व तुम वरण कर लो।

२८ दधि-क्राव्ण इष ऊर्जो महो यद्, अमन्महि मरुतां नाम भद्रम्। स्वस्तये वरुणं मित्रम् अग्निं, हवामह इन्द्रं वज्र-बाहुम्।

ऋ ४.३६.४

यत् जो कि दधि-क्राव्णः दधि-क्रावा को, इषः अन्न को, ऊर्जः सूक्ष्म अन्न—बल को, महः महत्ता को, मरुताम् भद्रम् नाम ऋत्विजों के कल्याण-मय नाम को अमन्महि हम मांगरहे हैं तो, वस्तुतः स्वस्तये स्वस्ति के लिए क्रमशः वरुणम् वरुण को, मित्रम् मित्र को, अग्निम् अग्नि को, वज्र-बाहुम् इन्द्रम् 'वज्र' बाहु वाले इन्द्र को हवामहे हम पुकाररहे हो।

२६ प्र पस्त्याम् अदितिं सिन्धुम् अर्कैः,
स्वस्तिम् ईळे सख्याय देवीम्।
उभे यथा नो अहनी नि-पात,
उषासानक्ता करताम् अदब्धे। ऋ ४.५५.३

पस्त्याम् गृह—परमात्म-शरण का, अदितिम् अदिति का, सिन्धुम् सिन्धु का, देवीम् स्वस्तिम् देवी स्वस्ति का अर्कैः अन्नों/वज्रों द्वारा प्र ईळे मो सघन ध्यान कररहा हूं। यथा जैसे नः हमें अहनी दिन-और-रात, उभे दोनों नि-पातः निश्चित सुरक्षा

प्रदान कररहे हो, अदब्धे अदम्य उषासा-नक्ता उषा-और-रात्रि भी ऐसा करताम् करें।

३० यस्मै त्वं सु-कृते जात-वेद! उ,
लोकम् अग्ने! कृणवः स्योनम्।
अश्विनं स पुत्रिणं वीर-वन्तं,
गो-मन्तं रयिं नशते स्वस्ति। ऋ ५.४.११

जात-वेदः हे जगद्-वेत्ता! त्वम् तुमने यस्मै सु-कृते जिस सु-कर्मा के लिए लोकम् अपने दर्शन को, अग्ने! हे अग्नि!, स्योनम् साक्षात् सुख कृणवः कर दिया सः उसकी अश्विनम् अश्व-वान्, पुत्रिणम् पुत्र-वान्, वीर-वन्तम् वीर-वान्, गो-मन्तम् रयिम् रश्मि-वान् धन तक स्वस्ति स्वस्ति-पूर्वक नशते पहुंच होरही है।

३१ नू न एहि वार्यम्, अग्ने! गृणान आ भर। ये वयं ये च सूरयः,
स्वस्ति धामहे सचो,तैधि पृत्-सु नो वृधे। ऋ ५.१६.५

नु अब तो नः हमारे पास एहि तुम आ जाओ। अग्ने! हे अग्नि! हमसे गृणानः बोलतेहुए वार्यम् वरणीय–गुण, आदि को नः हममें आ भर तुम ख़ूब भर दो–हमारा आ-भरण बना दो। ये वयम् जो हम लोग हो च और ये सूरयः जो तेरे स्तोता हो–हम सब मिलकर, स्वस्ति स्वस्ति-पूर्वक तुझे धामहे धारण कररहे हो। उत और पृत्-सु संघर्षों में नः वृधे हमारी विजय के लिए सचा एधि तुम जागरूक रहो।

३२ नू न इद्द् हि वार्यम्, आसा सचन्त सूरयः।
ऊर्जो नपाद् अभिष्टये पाहि शग्धि,
स्वस्तय उतैधि पृत्-सु नो वृधे। ऋ ५.१७.५

हि क्योंकि नु अब तो नः इत् हमारे लिए ही सूरयः स्तोता लोग वार्यम् वरणीय–गुण, आदि को आसा मुख–अन्तर्वाणी

द्वारा सचन्ते प्राप्त कररहे हो, ऊर्जः सूक्ष्म अन्न की नपात्! हे परिणति! अभिष्टये इन्द्र के लिए पाहि हमारी तुम रक्षा करो और स्वस्तये स्वस्ति के लिए शग्धि समर्थ बनो। उत और पृत्-सु संघर्षों में नः वृधे हमारी वृद्धि के लिए एधि तुम सन्नद्ध रहो।

३३ सम्-इध्यमानो अमृतस्य राजसि, हविष् कृण्वन्तं सचसे स्वस्तये।
विश्वं स धत्ते द्रविणं यम् इन्वस्यू,
आतिथ्यम् अग्ने! नि च धत्त इत् पुरः। ऋ ५.२८.२

सम्-इध्यमानः खूब धधकरहे तुम अमृतस्य अमृत के राजसि राजा हो। हविः कृण्वन्तम् समर्पण करनेवाले को तू स्वस्तये उसकी स्वस्ति के लिए सचसे मिलजाता है। यम् जिस तक इन्वसि तुम पहुँच जाते हो सः वह विश्वम् द्रविणम् आन्तरिक बल/धन को अपने में धत्ते धर लेता है। च और अग्ने! हे अग्नि! आतिथ्यम् आतिथ्य-सामग्री को पुरः तुझ अतिथि के समक्ष नि निश्चित रूप से धत्ते इत् स्थापित—समर्पित करता ही है।

३४,१९९; सम् इन्द्र णो मनसा नेषि गोभिः,
२५१ सं सूरि-भिर् हरि-वः! सं स्वस्ति।
सं ब्रह्मणा देव-हितं यद् अस्ति,
सं देवानां सु-मत्या यज्ञियानाम्। ऋ ५.४२.४

इन्द्र! हे इन्द्र! नः हमें मनसा मन द्वारा, गो-भिः रश्मियों द्वारा सम् भली भांति नेषि तुम ले चलरहे हो। हरि-वः! हे अश्व-द्वय वाले! सूरि-भिः स्तोताओं द्वारा सम् भली भांति तुम हमारा नेतृत्व कररहे हो। स्वस्ति स्वस्ति-पूर्वक हमारी सम् भली भांति उन्नति कररहे हो। यत् जो कुछ भी देव-हितम् देवों द्वारा हमारे लिए नियत कियाहुआ है उस ब्रह्मणा अन्न/जल/

धन द्वारा तुम हमारी सम् भली भांति उन्नति कररहे हो। यज्ञियानाम् देवानाम् यज्ञ-परायण देवों की सु-मत्या सु-मति द्वारा हमारा सम् भली भांति उत्थान कररहे हो।

३५ एष स्तोमो मारुतं शर्धो अच्छा,
रुद्रस्य सूनूँर् युवन्यूँर् उद् अश्याः।
कामो राये हवते मा स्वस्त्य्,
उप स्तुहि पृषद्-अश्वाँ अयासः। ऋ ५.४२.१५

एषः स्तोमः यह स्तोत्र मारुतम् शर्धः मरुतों के वेग का अच्छ भली भांति सामना करे, रुद्रस्य सूनून् रुद्र के पुत्रों का, युवन्यून् युवाओं का उत् उत्कर्ष-पूर्वक अश्याः सामना करे। कामः अभिलाषा मा मुझे राये सुषमा के लिए स्वस्ति स्वस्ति-पूर्वक हवते पुकाररही है। पृषत्-अश्वान् रंग-बिरंगे अश्वों वाले अयासः घुमन्तुओं के उप पास जाकर स्तुहि तू उनकी स्तुति कर।

३६ एष ते देव! नेता, रथस्-पतिः शं रयिः।
शं राये शं स्वस्तय, इषः-स्तुतो मनामहे,
देव-स्तुतो मनामहे। ऋ ५.५०.५

देव! हे देव! नेता! हे नायक! एषः यह ते तेरा रथः-पतिः रथ-पति शम् साक्षात् सुख है, रयिः धन है। इषः-स्तुतः हम अन्न-स्तोता लोग मनामहे मांगरहे हो, देव-स्तुतः हम देव-स्तोता लोग मनामहे मांगरहे हो शम् शं को राये सुषमा के लिए, शम् शं को स्वस्तये स्वस्ति के लिए।

३७ स्वस्ति नो मिमीताम् अश्विना भगः,
स्वस्ति देव्य् अदितिर् अन्+अर्वणः।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः,

स्वस्ति द्यावापृथिवी सु-चेतुना। ऋ ५.५१.११

अश्विना दोनों अश्वी नः हमारी स्वस्ति स्वस्ति को मिमीताम् करें; स्वस्ति को भगः भग भी करे; देवी अदितिः देवी अदिति अन्-अर्वणः अ-शत्रु की स्वस्ति स्वस्ति को करे; पूषा पूषा, असुरः मेघ नः हमारी स्वस्ति स्वस्ति को दधातु स्थापित करे। द्यावा-पृथिवी द्यौ-पृथिवी सु-चेतुना सु-चेतनावान् द्वारा स्वस्ति स्वस्ति को करें।

३८ स्वस्तये वायुम् उप ब्रवामहै,
सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस् पतिः।
बृहस्पतिं सर्व-गणं स्वस्तये,
स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः। ऋ ५.५१.१२

स्वस्तये स्वस्ति के लिए वायुम् वायु के उप समीप जाकर उस की ब्रवामहै हम स्तुति करें। भुवनस्य भुवन का यः पतिः जो रखवाला स्वस्ति स्वस्ति को कररहा है उस सोमम् सोम की हम उप-स्तुति करें। स्वस्तये स्वस्ति के लिए सर्व-गणम् सब गणों वाले बृहस्-पतिम् बड़े-बड़ों के रखवाले की हम उप-स्तुति करें। आदित्यासः आदित्य नामक देव नः हमारी स्वस्तये स्वस्ति के लिए भवन्तु होवें।

३९ विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये,
वैश्वानरो वसुर् अग्निः स्वस्तये।
देवा अवन्त्व् ऋभवः स्वस्तये,
स्वस्ति नो रुद्रः पात्व् अंहसः। ऋ ५.५१.१३

विश्वे देवाः 'विश्व' नामक देव अद्य आज नः स्वस्तये हमारी स्वस्ति के लिए उद्यत हो। वैश्वानरः वसुः अग्निः वैश्वानर, वसु अग्नि स्वस्तये स्वस्ति के लिए उत्सुक है। ऋभवः देवाः ऋभु नामक देव स्वस्तये स्वस्ति के लिए अवन्तु रक्षा करें। नः हमें रुद्रः रुद्र अंहसः पाप से स्वस्ति स्वस्ति-पूर्वक पातु बचाए।

४० स्वस्ति मित्रावरुणा, स्वस्ति पथ्ये! रेवति!
स्वस्ति न इन्द्रश् चाग्निश् च,
स्वस्ति नो अदिते! कृधि। ऋ ५.५१.१४

मित्रा-वरुणा! हे मित्र-वरुण! स्वस्ति स्वस्ति को करो। पथ्ये! हे अन्तरिक्षचारिणि! रेवति! हे शोभामयि! स्वस्ति स्वस्ति को करो। इन्द्रः च इन्द्र भी, अग्निः च अग्नि भी नः हमारी स्वस्ति स्वस्ति को करे। अदिते! हे अदिति! नः स्वस्ति हमारी स्वस्ति को कृधि तुम करो।

४१ स्वस्ति पन्थाम् अनु चरेम, सूर्याचन्द्रमसाव्-इव।
पुनर् ददताघ्नता, जानता सं गमेमहि। ऋ ५.५१.१५

पन्थाम् अन्तरिक्ष-पथ को स्वस्ति स्वस्ति-पूर्वक अनु क्रमशः चरेम हमें पार करना चाहिए सूर्याचन्द्रमसाव्-इव जैसे सूर्य-चन्द्रमा पार कररहे हैं। पुनः बारं-बार ददता देनेवाले, अघ्नता न मारनेवाले, जानता जाननेवाले के साथ सम् गमेमहि हमें सं-गति करनी चाहिए।

४२ अतीयाम निदस् तिरः स्वस्ति-भिर्, हित्वावद्यम् अरातीः।
वृष्ट्वी शं योर् आप उस्रि भेषजं,
स्याम मरुतः! सह। ऋ ५.५३.१४

अ-वद्यम् हित्वा मुखपर न लाने योग्य—पाप को छोड़कर, स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा तिरः निदः हमें प्राप्त निन्दकों को, अ-रातीः दान-हीनों को, अति ओझल करके, इयाम हम लाँघ जाएँ। शम् शं, योः पाप-मुक्ति वृष्ट्वी आपः वृष्टि के जल हो, उस्रि भेषजम् गो-युक्त सुख हो। मरुतः! हे मरुतो! इनके सह साथ स्याम हमें रहना चाहिए।

४३ युवं नो येषु वरुण! क्षत्रं बृहच् च बिभृथः।

उरु णो वाज-सातये, कृतं राये स्वस्तये। ऋ ५:६४.६

च और वरुण! हे मित्र-वरुण! युवम् तुम दोनों बृहत् महान् क्षत्रम् प्रवाह/धन को नः हमारी ख़ातिर येषु जहां जहां बिभृथः भरा करते हो उसे नः हमारे लिए—वाज-सातये अन्न/बल के दान के लिए, राये शोभा के लिए, स्वस्तये स्वस्ति के लिए उरु कृतम् फैला दो।

४४; ४६ अच्छा नो मित्र-महो देव! देवान्, अग्ने! वोचः सु-मतिं रोदस्योः। वीहि स्वस्तिं सु-क्षितिं दिवो नॄन्, द्विषो अंहांसि दुर्-इता तरेम, ता तरेम तवावसा तरेम। ऋ ६.२.११

मित्र-महः! हे मित्रों को मान देनेवाले! देव! हे देव! अग्ने! हे अग्नि! तुम रोदस्योः द्यौ-पृथिवी के देवान् देवों को नः हमारी सु-मतिम् सु-मति के बारे में अच्छ अच्छी प्रकार वोचः बताओ। स्वस्तिम् स्वस्ति तक, सु-क्षितिम् सु-निवास तक, दिवः नॄन् द्यौ के नायकों तक वीहि तुम पहुंचो। द्विषः द्वेषियों को, अंहांसि पापों को, दुः-इता दुश्-चरितों को तरेम हम लांघ जाएँ; ता उन्हें तरेम हम पार कर लें; तव अवसा तेरी रक्षा द्वारा तरेम हम तैर जाएं।

४५ नू नो अग्नेवृकेभिः स्वस्ति वेषि, रायः पथिभिः पर्ष्य् अंहः। ता सूरि-भ्यो गृणते रासि सु-म्नं, मदेम शत-हिमाः सु-वीराः। ऋ ६.४.८

अग्ने! हे अग्नि! नः हमारे लिए तुम अ-वृकेभिः पथिभिः अ-क्रूर मार्गों से रायः जीवन की सुषमा तक नु तुरन्त स्वस्ति स्वस्ति-पूर्वक वेषि पहुंच जाया करते हो, अंहः पाप को पर्षि पार कर जाया करते हो। ता उन्हें सूरिभ्यः स्तोताओं के लिए, गृणते प्रत्येक स्तोता के लिए सुम्नम् सुख—सु-मनस्कता को रासि तुम दिया करते हो। सुवीराः सु वीरों वाले हमें शत-हिमाः सौ हेमन्तों तक मदेम अर्चना करनी चाहिए।

४६ अच्छा नो मित्र-महो! देव! देवान्, अग्ने! वोचः सु-मतिं रोदस्योः। वीहि स्वस्तिं सु-क्षितिं दिवो नॄन्, द्विषो अंहांसि दुर्-इता तरेम, ता तरेम तवावसा तरेम। ऋ ६.१४.६

मंत्र-संख्या ४४ पर अर्थ मौजूद है।

४७ जनिष्वा देव-वीतये, सर्व-ताता स्वस्तये।
आ देवान् वक्ष्य् अमृतों ऋता-वृधो,
यज्ञं देवेषु पिस्पृशः। ऋ ६.१५.१८

देव-वीतये देवों की कामना वाले के लिए, सर्व-ताता स्वस्तये सर्व-विस्तार में स्वस्ति के लिए जनिष्व तू प्रकट हो। ऋत-वृधः ऋत से बढ़नेवाले, अमृतान् मृत अंश से रहित देवान् देवों को आ वक्षि तुम ले आओ। देवेषु देवों में पहुंचकर यज्ञम् यज्ञ को पिस्पृशः तुम छू लो।

४८ प्र श्येनो न मदिरम् अंशुम् अस्मै, शिरो दासस्य नमुचेर्-मथायन्। प्रावन् नमीं साप्यं ससन्तं, पृणग् राया सम् इषा सं स्वस्ति। ऋ ६.२०.६

न जैसे श्येनः बाज़ ने अस्मै इसके लिए मदिरम् अंशुम् अर्चनापरक अंशु को मथा था, इसने भी नमुचेः दासस्य नमुचि दास के शिरः सिर को मथायन् मथतेहुए, ससन्तम् निद्रालीन, साप्यम् सप के पुत्र नमीम् नमी को प्र आवत् भली भांति बचाया; उसे राया सुषमा से और इषा भोग से स्वस्ति स्वस्ति-पूर्वक सम् पृणक् युक्त कर दिया।

४९ त्वं धुनिर् इन्द्र धुनि-मतीर् ऋणोर्, अपः सीरा न स्रवन्तीः। प्र यत् समुद्रम् अति शूर! पर्षि, पारया तुर्वशं यदुं स्वस्ति। ऋ ६.२०.१२

मंत्र-संख्या ११ पर अर्थ मौजूद है।

५०;२८२ आ सं-यतम् इन्द्र! णः स्वस्तिं, शत्रु-तूर्याय बृहतीम् अमृध्राम्।
यया दासान्य् आर्याणि वृत्रा करो, वज्रिन्त्! सु-तुका नाहुषाणि।
ऋ ६.२२.१०

इन्द्र! हे इन्द्र! नः हमारे सम्-यतम् सं-घर्ष को तुम अ-मृध्राम् हिंसा-रहित, बृहतीम् महान्, स्वस्तिम् स्वस्ति आ भली-भांति कर दो ताकि हम शत्रु-तूर्याय शत्रु का पार पा सकें—वह स्वस्ति यया जिसके द्वारा तुमने दासानि वृत्रा दास वृत्रों को आर्याणि आर्य करः कर दिया था, वज्रिन्! हे वज्रधारी! नाहुषाणि मनुष्य-सन्ततियों को सु-तुका कल्याणार्थ हिंसा करनेवाले कर दिया था।

५१;२१६ इन्द्र! त्रि-धातु शरणं, त्रि-वरूथं स्वस्ति-मत्।
छर्दिर् यच्छ मघवद्-भ्यश् च,
मह्यं च यावया दिद्युम् एभ्यः। ऋ ६.४६.६

इन्द्र! हे इन्द्र! मघवत्-भ्यः च धन-वानों के लिए भी, मह्यम् च मेरे लिए भी सिर पर छर्दिः छत यच्छ प्रदान करो—त्रि-धातु तीन धातुओं वाली, शरणम् आश्रय, स्वस्ति-मत् स्वस्ति-मान् त्रि-वरूथम् तीन घरों वाली। एभ्यः इन सबसे दिद्युम् वज्र को यवय दूर करो।

५२;२७३ उरुं नो लोकम् अनु नेषि विद्वान्त्, स्वर्-वज् ज्योतिर् अभयं स्वस्ति।
ऋष्वा त इन्द्र! स्थविरस्य बाहू, उप स्थेयाम शरणा बृहन्ता।
ऋ ६.४७.८

तुम विद्वान् सब कुछ जाननेवाले हो, तुम नः हमें अनु क्रमशः उस उरुम् लोकम् विराट् लोक में नेषि लेजारहे हो जो है स्वः-वत् ज्योतिः द्यौ वाली ज्योति, अभयम् भय-रहित, स्वस्ति स्वस्ति। इन्द्र! हे इन्द्र! ते स्थविरस्य तुझ स्थिर की ऋष्वा

प्रभावी, बृहन्ता बाहू दो विशाल बाहुओं की शरणा शरण में उप स्थेयाम हमें रहना चाहिए।

५३;२०७; त्रातारम् इन्द्रम् अवितारम् इन्द्रं, हवे-हवे सु-हवं शूरम् इन्द्रम्।
२५० ह्वयामि शक्रं पुरु-हूतम् इन्द्रं, स्वस्ति नो मघ-वा धात्व् इन्द्रः।
ऋ ६.४७.११

त्रातारम् इन्द्रम् त्राता इन्द्र को, अवितारम् इन्द्रम् तृप्तिमय इन्द्र को, हमारी हवे-हवे हर पुकार पर अपना सु-हवम्, शूरम् इन्द्रम् मंगलमय प्रत्युत्तर देनेवाले, शूर इन्द्र को, शक्रम्, पुरु-हूतम् इन्द्रम् शक्तिमान्, बहुतों द्वारा बहुत पुकारे जानेवाले इन्द्र को ह्वयामि मैं पुकाररहा हूं। मघ-वा इन्द्रः धन-वान् इन्द्र नः हमारी स्वस्ति धातु स्वस्ति को करे।

५४ अपि पन्थाम् अगन्महि, स्वस्ति-गाम् अन्+एहसम्।
येन विश्वाः परि द्विषो, वृणक्ति विन्दते वसु। ऋ ६.५१.१६

स्वस्ति-गाम् स्वस्ति-पूर्वक गमनयोग्य, अन्-एहसम् पाप-रहित पन्थाम् पथ पर अपि अगन्महि हम आगए हैं येन जिस पथ द्वारा मनुष्य विश्वाः द्विषः आन्तरिक द्वेषियों को परि वृणक्ति परे रखता है और वसु धन को विन्दते पाता है।

५५ आ ते स्वस्तिम् ईमह, आरे-अघाम् उपा-वसुम्।
अद्या च सर्व-तातये, श्वश् च सर्व-तातये। ऋ ६.५६.६

अद्य च आज भी सर्व-तातये सर्व-विकास के लिए, श्वः च कल भी सर्व-तातये सर्वोदय के लिए ते तेरी उस स्वस्तिम् स्वस्ति को आ ईमहे हम ख़ूब चाहा करते हैं जो आरे-अघाम् पाप से दूर रहती है और उप-वसुम् धन के पास रहती है।

५६;२१८ इन्द्रा नु पूषणा वयं, सख्याय स्वस्तये। हुवेम वाज-सातये।

ऋ ६.५७.१

इन्द्रा इन्द्र को, पूषणा पूषा को वयम् हम साख्याय मैत्री के लिए, स्वस्तये स्वस्ति के लिए, वाज-सातये अन्न/बल के वितरण के लिए नु तुरन्त हुवेम पुकाररहे हो।

५७ उत् पूषणं युवामहे,भीशूँर्-इव सारथिः। मह्या इन्द्रं स्वस्तये।

ऋ ६.५७.६

मह्यै स्वस्तये महान् स्वस्ति के लिए इन्द्रम् इन्द्र को, पूषणम् पूषा को हम उत् युवामहे अपनी ओर आकृष्ट कररहे हैं—उच्चतर अर्चना कररहे हैं, अभीशून्-इव सारथिः रश्मियों को जैसे सारथि अपनी ओर खींचता है।

५८; ५६ नू मे ब्रह्माण्य् अग्न! उच् छशाधि, त्वं देव! मघवद्-भ्यः सुषूदः।
रातौ स्यामोभयास आ ते, यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः।
ऋ ७.१.२०

अग्ने! हे अग्नि! त्वम् तुम मे ब्रह्माणि मेरे अन्नों/जलों/धनों का नु शीघ्र उत् शशाधि उत्कृष्ट शोधन करो। देव! हे देव! मघवत्-भ्यः धनवानों के लिए सुसूदः तुम प्रेरणा करो। उभयासः उभय कोटि के हम लोगों को ते रातौ तेरे दान की परिधि में आ स्याम पूरी तौर से रहना चाहिए। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

५६ नू मे ब्रह्माण्य् अग्न! उच् छशाधि, त्वं देव! मघवद्-भ्यः सुषूदः।
रातौ स्यामोभयास आ ते, यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः।
ऋ ७.१.२५ मंत्र-संख्या ५८ पर अर्थ मौजूद है।

६०; ६१ एता नो अग्ने! सौभगा दिदीह्य्,
अपि क्रतुं सु-चेतसं वतेम।
विश्वा स्तोतृ-भ्यो गृणते च सन्तु,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.३.१०

अग्ने! हे अग्नि! नः हमारे एता सौभगा इन सौभाग्यों को हमारे लिए दिदीहि तुम जगमगा दो। अपि और सु-चेतसम् क्रतुम् सु-चित्तमय कर्म/प्रज्ञा को वतेम हमें पाना चाहिए। स्तोतृ-भ्यः स्तोताओं के लिए च और गृणते कीर्तनकर्ता के लिए विश्वा सब कुछ सन्तु होवें। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

६१ एता नो अग्ने! सौभगा दिदीह्यू, अपि क्रतुं सु-चेतसं वतेम।
विश्वा स्तोतृ-भ्यो गृणते च सन्तु, यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः।
ऋ ७.४.१० मंत्र-संख्या ६० पर अर्थ मौजूद है।

६२; ६३ नू त्वाम् अग्न! ईमहे वसिष्ठा, ईशानं सूनो! सहसो वसूनाम्।
इषं स्तोतृ-भ्यो मघवद्-भ्य आनड्,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.७.७

सहसः बल के/परम्परा के सूनो! हे पुतले!/वारिस! तू वसूनाम् वसुओं का ईशानम् ईश है। त्वाम् तुझसे अग्ने! हे अग्नि! हम वसिष्ठाः वसिष्ठ लोग नु अविलम्ब—अति-आवश्यक ईमहे याचना कररहे हो। तूने स्तोतृ-भ्यः स्तोताओं के लिए, मघवत्-भ्यः धनवानों के लिए इषम् अन्न को सदा ही आनट् दिया है। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

६३ नू त्वाम् अग्न! ईमहे वसिष्ठा, ईशानं सूनो! सहसो वसूनाम्।
इषं स्तोतृ-भ्यो मघवद्-भ्य आनड्, यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः।
ऋ ७.८.७ मंत्र-संख्या ६२ पर अर्थ मौजूद है।

६४ त्वाम् अग्ने! सम्-इधानो वसिष्ठो,
जरूथं हन् यक्षि राये पुरं-धिम्।
पुरु-णीथा जातवेदो जरस्व,

यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.६.६

अग्ने! हे अग्नि! त्वाम् सद्-इयानः तुझे [illegible] वसिष्ठः वसिष्ठ जरूथम् कटुभाषी को हन् मार देवे। राये जीवन-शोभा के लिए पुरम्-धिम् बहुकर्मा/बहुज्ञानी—देवसमुदाय का यक्षि तू पूजन कर। जात-वेदः! हे ज्ञान-धन के निधान! पुरु-नीथा नाना विधियों से जरस्व तुम अर्चना करो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

६५ आग्ने! वह हविर्-अद्याय देवान्, इन्द्र-ज्येष्ठास इह मादयन्ताम्।
इमं यज्ञं दिवि देवेषु धेहि, यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः।
ऋ ७.११.५

अग्ने! हे अग्नि! हविः-अद्याय हवियों के भक्षण के लिए देवान् देवों को आ वह तुम ले आओ। इन्द्र-ज्येष्ठासः इन्द्र देवों में ज्येष्ठ है; सब देव इह यहां—इस यज्ञ में मादयन्ताम् अर्चना करें। इमम् यज्ञम् इस यज्ञ के दायित्व को तुम दिवि द्यौ में स्थित देवेषु देवों पर धेहि धर दो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

६६;२२५ त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने!, त्वां वर्धन्ति मति-भिर् वसिष्ठाः।
त्वे वसु सु-षणनानि सन्तु, यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः।
ऋ ७.१२.३

त्वम् तुम वरुणः वरुण उत और मित्रः मित्र हो अग्ने! हे अग्नि!। त्वाम् तुझे अपनी मति-भिः मतियों द्वारा वसिष्ठाः वसिष्ठ लोग वर्धन्ति बढ़ारहे हैं। त्वे तुझमें पहुँचकर सु-सननानि सु-दान वसु सन्तु धन हो जाएँ। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

६७ जातो यद् अग्ने! भुवना व्य् अख्यः,
पशून् न गोपा इर्यः परि-ज्मा।
वैश्वानर! ब्रह्मणे विन्द गातुं,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.१३.३

न जैसे गोपाः ग्वाला पशून् पशुओं की निगरानी करता है उस प्रकार इर्यः स्वामी, परि-ज्मा चारों ओर पहुँचने वाले तुमने जातः प्रकट होकर अग्ने! हे अग्नि! यत् जो कि भुवना उदकों का वि अख्यः वि-दर्शन किया है तो अब वैश्वानर! हे विश्व नरों वाले! तुम ब्रह्मणे अन्न/जल/धन के लिए गातुम् मार्ग को विन्द तुम पकड़ लो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

६८ आ नो देवेभिर् उप देव-हूतिम्,
अग्ने! याहि वषट्-कृतिं जुषाणः।
तुभ्यं देवाय दाशतः स्याम,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.१४.३

अग्ने! हे अग्नि! वषट्-कृतिम् वषट्कार को जुषाणः प्रीति-पूर्वक सेवन करनेवाले तुम नः देव-हूतिम् उप देवों के लिए हमारी पुकार के समीप देवेभिः देवों के साथ आ याहि आ जाओ। हमें तुभ्यम् देवाय तुझ देव के लिए दाशतः समर्पण करनेवाले स्याम हो जाना चाहिए। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

६९;२८३ नू इन्द्र! शूर! स्तवमान ऊती,
ब्रह्म-जूतस् तन्वा वावृधस्व।
उप नो वाजान् मिमीह्य् उप स्तीन्,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.१९.११

नु अब इन्द्र! हे इन्द्र! शूर! हे शूर! स्तवमानः स्तुति किए जारहे, ब्रह्म-जूतः अन्न/जल/धन द्वारा प्रेरित तुम ऊती रक्षा के लिए तन्वा विस्तार के साथ ववृधस्व खूब बढ़ो। नः हमारे

वाजान् अन्नों/बलों को उप मिमीहि तुम संपन्न करो, स्तीन् घरों को उप संपन्न बनाओ। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

७०; ७१ स न इन्द्र! त्व-यताया इषे धास्,
त्मना च ये मघ-वानो जुनन्ति।
वस्वी षु ते जरित्रे अस्तु शक्तिर्,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.२०.१०

सः वह नः हमें इन्द्र! हे इन्द्र! त्व-यतायै तेरे द्वारा दिए जानेवाले इषे अन्न के लिए धाः तुम अपनाओ च और ये मघ-वानः जो धन-वान् त्मना आत्मा—अपनी मिसाल द्वारा जुनन्ति प्रेरणा कररहे हैं उन्हें भी अपनाओ। ते जरित्रे तेरे स्तोता के लिए वस्वी रात्रि शक्तिः शक्ति और सु अस्तु स्वस्ति हो जाए। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

७१ स न इन्द्र! त्व-यताया इषे धास्,
त्मना च ये मघ-वानो जुनन्ति।
वस्वी षु ते जरित्रे अस्तु शक्तिर्,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.२१.१०

मंत्र-संख्या ७० पर अर्थ मौजूद है।

७२ ये च पूर्व ऋषयो ये च नूत्ना, इन्द्र! ब्रह्माणि जनयन्त विप्राः।
अस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.२२.९

ये च पूर्वे ऋषयः कि जिन जिन भी पुराने ऋषियों ने, ये च नूत्नाः जिन जिन भी नए ऋषियों ने—विप्राः मेधावियों ने, इन्द्र! हे इन्द्र!, ब्रह्माणि जलों/अन्नों/धनों को जनयन्त उत्पन्न

किया, ते वे मेधावी अस्मे हमारे लिए शिवानि सख्या शुभ मैत्रियां सन्तु बन जाएँ। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

७३;२०८; एवेद् इन्द्रं वृषणं वज्र-बाहुं, वसिष्ठासो अभ्य् अर्चन्त्य् अर्कैः।
२८० स नः स्तुतो वीर-वद् धातु गो-मद्,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.२३.६

एव इत् अवश्य ही, वृषणम् वृषा, वज्र-बाहुम् इन्द्रम् वज्र-बाहु इन्द्र का अर्कैः अन्नों/वज्रों द्वारा वसिष्ठासः वसिष्ठ लोग अभि अर्चन्ति अभि-पूजन कररहे हो। स्तुतः स्तुति किया गया सः वह नः हमारे वीर-वत् वीरों वाले, गो-मत् रश्मियों वाले व्यक्तित्व का धातु आधार बने। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

७४; ७५ एवा न इन्द्र! वार्यस्य पूर्धि, प्र ते महीं सु-मतिं वेविदाम।
इषं पिन्व मघवद्-भ्यः सु-वीरां,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.२४.६

इन्द्र! हे इन्द्र! तुम नः हमारे वार्यस्य वरणीय को एव अवश्य पूर्धि पूर्ण बनाओ। ते तुम्हारी महीम् सु-मतिम् महान् सु-मति को प्र वेविदाम हम ख़ूब जानें/भर-पूर पाएँ। मघवत्-भ्यः धनवानों के लिए सु-वीराम् शुभ वीरों वाली इषम् समृद्धि को पिन्व तुम प्रदान करो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

७५ एवा न इन्द्र! वार्यस्य पूर्धि, प्र ते महीं सु-मतिं वेविदाम।
इषं पिन्व मघवद्-भ्यः सु-वीरां,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.२५.६

मंत्र-संख्या ७४ पर अर्थ मौजूद है।

७६ एवा वसिष्ठ इन्द्रम् ऊतये नॄन्, कृष्टीनां वृषभं सुते गृणाति।
सहस्रिण उप नो माहि वाजान्,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.२६.५

सुते रस तैयार हो जाने पर वसिष्ठः वसिष्ठ ऊतये तृप्ति/रक्षा के लिए कृष्टीनाम् वृषभम् मनुष्यों में वृषा इन्द्रम् इन्द्र की, नॄन् नायकों की गृणाति एव अर्चना किए ही जारहा है। सहस्रिणः वाजान् सहस्र गुणों से युक्त अन्नों/बलों का नः उप हमारे समीप माहि तुम ढेर लगा दो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

७७ नू इन्द्र! राये वरिवस् कृधी न, आ ते मनो ववृत्याम मघाय।
गो-मद् अश्वा-वद् रथ-वद् व्यन्तो,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.२७.५

नु शीघ्र ही इन्द्र! हे इन्द्र! राये जीवन की शोभा के लिए नः वरिवः हमारे धन को तुम कृधि समर्थ कर दो। ते मनः तेरे मन को मघाय धन के लिए आ ववृत्याम हम लौटा लें। गो-मत् रश्मियों वाले, अश्व-वत् अश्वों वाले, रथ-वत् रथों वाले धन के व्यन्तः अभिलाषी हम सब लोग होवें। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

७८; ७६; वोचेमेद् इन्द्रं मघ-वानम् एनं, महो रायो राधसो यद् ददन् नः।
८० यो अर्चतो ब्रह्म-कृतिम् अविष्ठो,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.२८.५

यत् जो कि इन्द्र ने महः रायः महान् शोभा को, राधसः धन को नः हमारे लिए ददत् दिया, यः जो कि अर्चतः अर्चक की ब्रह्म-कृतिम् जल-कृति/अन्न-कृति/धन-कृति का अविष्ठः परम

रक्षक है, एनम् मघ-वानम् इन्द्रम् इस धन-वान् इन्द्र का वोचेम इत् हमें बखान करना ही चाहिए। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

७९ वोचेमेद् इन्द्रं मघ-वानम् एनं, महो रायो राधसो यद् ददन् नः।
यो अर्चतो ब्रह्म-कृतिम् अविष्ठो,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.२९.५

मंत्र-संख्या ७८ पर अर्थ मौजूद है।

८० वोचेमेद् इन्द्रं मघ-वानम् एनं, महो रायो राधसो यद् ददन् नः।
यो अर्चतो ब्रह्म-कृतिम् अविष्ठो,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.३०.५

मंत्र-संख्या ७८ पर अर्थ मौजूद है।

८१; ६८ तन् न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निर्,
आप ओषधीर् वनिनो जुषन्त।
शर्मन्त् स्याम मरुताम् उप-स्थे;
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.३४.२५

इन्द्रः इन्द्र, वरुणः वरुण, मित्रः मित्र, अग्निः अग्नि, आपः जलप्रवाह, ओषधीः ओषधियां, वनिनः वनेचर लोग नः हमारे तत् उस मन्तव्य को जुषन्त पसन्द/सेवन करें। मरुताम् ऋत्विजों की उप-स्थे उपस्थिति—गोद में—शर्मन् सुख में स्याम हमें रहना चाहिए। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

८२;२७२ ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां, मनोर् यजत्रा अमृता ऋत-ज्ञाः।
ते नो रासन्ताम् उरु-गायम् अद्य,

यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.३५.१५

ये जो कोई भी यज्ञियानाम् देवानाम् यज्ञिय देवों में भी यज्ञियाः यज्ञिय, मनोः यजत्राः मनु के इष्ट देव, अमृताः मृत भाव से रहित, ऋत-ज्ञाः ऋत के ज्ञाता हो ते वे उरु-गायम् बहु-कीर्ति वाले व्यक्तित्व को अद्य आज नः हमारे लिए रासन्ताम् देवें। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

८३ अच्छायं वो मरुतः! श्लोक एत्व्,
अच्छा विष्णुं निषिक्त-पाम् अवो-भिः।
उत प्र-जायै गृणते वयो धुर्,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.३६.६

अयम् श्लोकः यह वाणी वः तुम तक अच्छ भली भांति एतु पहुंचे, मरुतः! हे मरुतो!। अवः-भिः तृप्तियों/रक्षाओं के साथ निसिक्त-पाम् स्थिर रस के पालनकर्ता/रक्षक विष्णुम् विष्णु को अच्छ भली भांति पहुंचे। उत और प्र-जायै सब प्र-जा के लिए, गृणते अर्चक के लिए सब देव वयः धुः अन्न के आधार बन गए। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

८४ आ नो राधांसि सवितः! स्तवध्या,
आ रायो यन्तु पर्वतस्य रातौ।
सदा नो दिव्यः पायुः सिषक्तु,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.३७.८

सवितः! हे सविता! नः हमें राधांसि धन आ खूब मिलें स्तवध्यै भक्ति/स्तुति के लिए। रायः पर्वतस्य शोभा के पर्वत के रातौ दान के विषय में धन आ यन्तु खूब मिलें। सदा सदा नः हमें दिव्यः पायुः द्यौ में उत्पन्न रक्षक सिसक्तु मिले—सुलभ

रहें। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

८५;२१५ प्र वावृजे सु-प्रया बर्हिर् एषाम्, आ विश्पतीव बीरिट इयाते। विशाम् अक्तोर् उषसः पूर्व-हूतौ, वायुः पूषा स्वस्तये नियुत्वान्। ऋ ७.३९.२

एषाम् इनका सु-प्रयाः सु-जल/सु-अन्न वाला बर्हिः अन्तरिक्ष/उदक प्र ववृजे ख़ूब काटा/ग्रहण किया जा चुका था। विशाम् मनुष्यों के, अक्तोः रात्रि के, उषसः उषा के पूर्व-हूतौ पूर्ववर्ती आ-ह्वान पर वायुः वायु और पूषा पूषा, जो कि स्वस्तये स्वस्ति करने के लिए नियुत्वान् स्वयं आदेशकारिणी अपनी साधनिकाओं वाला है वे, विश्पती-इव दो नरेशों के समान बीरिटे रथ पर आ इयाते चले आरहे हो।

८६; ८७ नू रोदसी अभि-ष्टुते वसिष्ठैर्, ऋता-वानो वरुणो मित्रो अग्निः।
यच्छन्तु चन्द्रा उप-मं नो अर्कं,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.३९.७

नु अब वसिष्ठैः वसिष्ठों द्वारा अभि-स्तुते अभि-स्तुति की हुई रोदसी द्यौ-पृथिवी, ऋत-वानः उदक-वान्/सत्य-वान् वरुणः वरुण, मित्रः मित्र, अग्निः अग्नि—चन्द्राः हिरण्य दीप्ति वाले ये सब उप-मम् समीप-वर्ती—आन्तरिक अर्कम् अन्न/वज्र को नः हमारे लिए यच्छन्तु देवों। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

८७ नू रोदसी अभि-ष्टुते वसिष्ठैर्, ऋता-वानो वरुणो मित्रो अग्निः।
यच्छन्तु चन्द्रा उप-मं नो अर्कं,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.४०.७

मंत्र-संख्या ८६ पर अर्थ मौजूद है।

८८;११६; अश्वा-वतीर् गो-मतीर् न उषासो,

२१६;२३४ वीर-वतीः सदम् उच्छन्तु भद्राः।

घृतं दुहाना विश्वतः प्र-पीता,

यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.४१.७

घृतम् दुहानाः उदक का दोहन करनेवाली, विश्वतः विश्व की ओर से प्र-पीताः पूर्णतया रमीहुई, अश्व-वतीः अश्वों वाली, गो-मतीः रश्मियों वाली, वीर-वतीः वीरों वाली, भद्राः उषसः भद्र उषाएँ नः हमारे लिए सदम् सदा उच्छन्तु चमकती रहें। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

८६ एवाग्निं सहस्यं वसिष्ठो, रायस्-कामो विश्व-प्स्न्यस्य स्तौत्।

इषं रयिं पप्रथद् वाजम् अस्मे,

यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.४२.६

एव अवश्य विश्व-प्स्न्यस्य बहु-आयामी—विश्व-व्यापक रायः-कामः शोभा के अभिलाषी वसिष्ठः वसिष्ठ ने सहस्यम् प्रवाह-प्रसूत/बल के परिणाम-रूप अग्निम् अग्नि की स्तौत् स्तुति की है। इषम् अन्न को, रयिम् धन को, वाजम् अन्न/बल को अस्मे हमारे लिए प्र प्रथत् वह पसार देवे। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

६० एवा नो अग्ने! विक्ष्व् आ दशस्य,

त्वया वयं सहसा-वन्न्! आस्क्राः।

राया युजा सध-मादो अरिष्टा,

यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.४३.५

एव अवश्य अग्ने! हे अग्नि! तुम नः हमें विक्षु अपनी प्रजाओं

में आ दशस्य सम्मिलित कर लो। सहसा-वन्! हे उदक/बल

द्वारा प्रसूत! वयम् हम त्वया तुम्हारे साथ आस्क्राः आगे बढ़नेवाले हो। युजा राया शाश्वत सुषमा के साथ सध-मादः परस्पर मदमस्त रहतेहुए अ-रिष्टाः सही-सलामत रहें। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

६१ इमा गिरः सवितारं सु-जिह्वं, पूर्ण-गभस्तिम् ईळते सु-पाणिम्।
चित्रं वयो बृहद् अस्मे दधातु,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.४५.४

इमाः गिरः ये वाणियां सु-जिह्वम् सु जिह्वा वाले, पूर्ण-गभस्तिम् पूर्ण अंजलि वाले, सु-पाणिम् सु हाथों वाले सवितारम् सविता की ईळते स्तुति कररही हो। अस्मे हमारे लिए चित्रम् बृहत् वयः अद्भुत, बहुल अन्न का दधातु वह आधार बने। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

६२ मा नो वधी रुद्र! मा परा दा, मा ते भूम प्र-सितौ हीळितस्य।
आ नो भज बर्हिषि जीव-शंसे,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.४६.४

रुद्र! हे रुद्र! तुम नः हमारा मा वधीः वध मत करो। मा परा दाः तुम हमें मत त्यागो। हीळितस्य ते क्रुद्धहुए तेरे प्र-सितौ बन्धन में मा भूम हम न होवें। जीव-शंसे बर्हिषि जीवों द्वारा अर्चनीय अन्तरिक्ष/उदक में नः हमें आ भज भागीदार बनाओ। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

६३ याः सूर्यो रश्मि-भिर् आ-ततान, याभ्य इन्द्रो अरदद् गातुम् ऊर्मिम्।
ते सिन्धवो! वरिवो धातना नो,

यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.४७.४

याः जिनको सूर्यः सूर्य ने रश्मि-भिः रश्मियों द्वारा आ-ततान भली भांति फैलाया; याभ्यः जिनके लिए इन्द्रः इन्द्र ने ऊर्मिम् गातुम् ऊर्मि—पथ को अरदत् उकेरा, ते वे—सिन्धवः! हे सिन्धुओ! तुम नः हमारे लिए वरिवः धन का धातन आधार बनो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

६४ नू देवासो! वरिवः कर्तना नो, भूत नो विश्वेवसे स-जोषाः।
सम् अस्मे इषं वसवो ददीरन्,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.४८.४

नु अब देवासः! हे देवो! वरिवः धन को नः हमारे लिए कर्तन तुम प्रकट करो। विश्वे तुम सब नः हमारी अवसे रक्षा के लिए स-जोषाः प्रीति-युक्त भूत होओ। अस्मे हमारे लिए इषम् अन्न को वसवः 'वसु' देव सम् ददीरन् प्र-दान करें। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

६५ आदित्या विश्वे मरुतश् च विश्वे,
देवाश् च विश्व ऋभवश् च विश्वे।
इन्द्रो अग्निर् अश्विना तुष्टुवाना,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.५१.३

विश्वे आदित्याः विश्व आदित्यों की च और विश्वे मरुतः विश्व मरुतों की, च और विश्वे देवाः 'विश्व' देवों की च और विश्वे ऋभवः विश्व ऋभुओं की, इन्द्रः इन्द्र की, अग्निः अग्नि की, अश्विना अश्वि-द्वय की तुस्तुवानाः हमने स्तुति की थी। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

६६ उतो हि वां रत्न-धेयानि सन्ति, पुरूणि द्यावा-पृथिवी! सु-दासे।
अस्मे धत्तं यद् असद् अस्कृधोयु,

यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.५३.३

उत और, हि क्यों कि द्यावा-पृथिवी! हे द्यौ-पृथिवी! वाम् तुम्हारे रत्न-धेयानि रत्न सु-दासे 'सु-दाः'—सु-दानी के लिए पुरूणि सन्ति ख़ूब हो, यत् जो अस्मे हमारे लिए अस्कृधोयु असत् कम न पड़े, उसके धत्तम् तुम आधार बनो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

६७ वास्तोष् पते! शग्मया सं-सदा ते, सक्षीमहि रण्वया गातु-मत्या।
पाहि क्षेम उत योगे वरं नो, यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.५४.३

वास्तोः गृह के पते! हे रक्षक! ते तेरी शग्मया कर्ममयी/सुखमयी, रण्वया रमणीय, गातु-मत्या मार्ग-प्रदर्शिका सम्-सदा सं-सद् से सक्षीमहि हमें जुड़े रहना चाहिए। क्षेमे प्राप्त में उत और योगे प्राप्य में नः वरम् हमारे कल्याण को पाहि तुम बचा रखो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

६८ तन् न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निर्, आप ओषधीर् वनिनो जुषन्त।
शर्मन्त् स्याम मरुताम् उप-स्थे,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.५६.२५

मंत्र-संख्या ८१ पर अर्थ मौजूद है।

६९ आ स्तुतासो मरुतो! विश्व ऊती,
अच्छा सूरीन्त् सर्व-ताता जिगात।
ये नस् त्मना शतिनो वर्धयन्ति,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.५७.७

ये जो नः हमें त्मना आत्मा-स्वेच्छा से शतिनः सौ-गुना वर्धयन्ति बढ़ारहे हैं वे—मरुतः! हे मरुतो! स्तुतासः स्तुति

किएगए 'विश्वे' तुम सब अपने ऊती रक्षणसामर्थ्य के साथ इस सर्व-ताता सर्वोन्नति कार्य में सूरीन् स्तोताओं की ओर अच्छ भली भांति आ जिगात आ जाओ। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१०० प्र सा वाचि सु-ष्टुतिर् मघोनाम्, इदं सूक्तं मरुतो जुषन्त।
आराच् चिद् द्वेषो वृषणो! युयोत,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.५८.६

मघोनाम् धनवानों कीं सा सु-स्तुतिः उस सु-स्तुति का प्र वाचि प्र-वचन किया गया है। इदम् सूक्तम् इस सूक्त को मरुतः मरुत जुषन्त पसन्द/स्वीकार करें। वृषणः! हे वृषाओ! द्वेषः द्वेष—पाप को आरात् चित् दूर से ही युयोत तुम परे हटा दो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१०१;१०२ इयं देव! पुरो-हितिर् युव-भ्यां, यज्ञेषु मित्रावरुणाव्! अकारि।
विश्वानि दुर्-गा पिपृतं तिरो नो,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.६०.१२

इयम् पुरः-हितिः यह स्तुति, देवा! हे दोनों देवो! मित्रा-वरुणौ! हे मित्र-वरुण!, युव-भ्याम् तुम दोनों के लिए यज्ञेषु यज्ञों में अकारि की गई है। नः हमें तुम विश्वानि दुः-गा तिरः विश्व दुर्-गतियों के बिलकुल पार पिपृतम् पहुंचा दो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१०२ इयं देव! पुरो-हितिर् युव-भ्यां, यज्ञेषु मित्रावरुणाव्! अकारि।
विश्वानि दुर्-गा पिपृतं तिरो नो,

यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.६१.७

मंत्र-संख्या १०१ पर अर्थ मौजूद है।

१०३;१०४ नू मित्रो वरुणो अर्यमा नस्, त्मने तोकाय वरिवो दधन्तु।
सु-गा नो विश्वा सु-पथानि सन्तु,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.६२.६

नु अब मित्रः मित्र, वरुणः वरुण, अर्यमा अर्यमा नः हमारे लिए—त्मने आत्मा—स्वयं के लिए, तोकाय सन्तति के लिए वरिवः धन का दधन्तु आधार बनें। विश्वा सु-पथानि विश्व सु-पथ नः हमारे लिए सु-गा सु-गम सन्तु होवें। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१०४ नू मित्रो वरुणो अर्यमा नस्, त्मने तोकाय वरिवो दधन्तु।
सु-गा नो विश्वा सु-पथानि सन्तु,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.६३.६

मंत्र-संख्या १०३ पर अर्थ मौजूद है।

१०५;१०६ एष स्तोमो वरुण! मित्र! तुभ्यं,
सोमः शुक्रो न वायवेयामि।
अविष्टं धियो जिगृतं पुरं-धीर्,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.६४.५

वायवे वायु के लिए, न मानो, शुक्रः सोमः दीप्तिमान् सोम अयामि तैयार किया गया हो उस प्रकार एषः स्तोमः यह स्तुति वरुण! हे वरुण!, मित्र! हे मित्र!, तुभ्यम् तेरे लिए तैयार की गई है। तुम दोनों धियः कर्मों/प्रज्ञाओं को अविष्टम् बचाओ। पुरम्-धीः पुरों की धारिका शक्तियों को जिगृतम् जगाओ। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१०६ एष स्तोमो वरुण! मित्र! तुभ्यं, सोमः शुक्रो न वायवेयामि।
अविष्टं धियो जिगृतं पुरं-धीर्, यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः।
ऋ ७.६५.५ मंत्र-संख्या १०५ पर अर्थ मौजूद है।

१०७;१०६ नू मे हवम् आ शृणुतं युवाना!,
यासिष्टं वर्तिर् अश्विनाव्! इरा-वत्।
धत्तं रत्नानि जरतं च सूरीन्,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.६७.१०

नु शीघ्र, युवाना! हे दोनों नित्य युवाओ! मे हवम् मेरी पुकार को तुम आ ध्यान से श्रृणुतम् सुन लो। अश्विनौ! हे दोनों अश्वियो! इरा-वत् वर्तिः अन्न-युक्त पथ पर यासिष्टम् तुम चलो। रत्नानि रत्नों के धत्तम् आधार बनो। च और सूरीन् स्तोताओं को जरतम् दीर्घायु करो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१०८ एष स्य कारुर् जरते सूक्तैर्, अग्रे बुधान उषसां सु-मन्मा।
इषा तं वर्धद् अघ्न्या पयो-भिर्,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.६८.६

उषसाम् अग्रे बुधानः भोर में जागनेवाला/उषाओं को सर्वप्रथम जाननेवाला, सु-मन्मा शोभन-मननवान्, एषः यह—स्यः वह कारुः स्तोता सु-उक्तैः सूक्तों द्वारा जरते अर्चना कररहा है। अघ्न्या गौ ने इषा अन्न द्वारा, पयः-भिः जलों द्वारा तम् उसे वर्धत् बढ़ाया है। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१०६ नू मे हवम् आ शृणुतं युवाना!,
यासिष्टं वर्तिर् अश्विनाव्! इरा-वत्।

धत्तं रत्नानि जरतं च सूरीन्, यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः।
ऋ ७.६६.८ मंत्र-संख्या १०७ पर अर्थ मौजूद है।

११०; १११ इयं मनीषा इयम् अश्विना! गीर्,
इमां सु-वृक्तिं वृषणा! जुषेथाम्।
इमा ब्रह्माणि युव-यून्य् अग्मन्,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.७०.७

अश्विना! हे दोनों अश्वियो! इयम् मनीषा यह मनीषा, इयम् गीः यह वाणी—इमाम् सु-वृक्तिम् इस सु-रचना को वृषणा! हे दोनों वर्षको! जुषेथाम् तुम पसन्द/स्वीकार करो। इमा ब्रह्माणि ये जल/अन्न/धन युव-यूनि तुम्हें चाहनेवाले अग्मन् हो गए हो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१११ इयं मनीषा इयम् अश्विना! गीर्,
इमां सु-वृक्तिं वृषणा! जुषेथाम्।
इमा ब्रह्माणि युव-यून्य् अग्मन्,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.७१.६

मंत्र-संख्या ११० पर अर्थ मौजूद है।

११२; ११३ आ पश्चातान् नासत्या पुरस्ताद्,
आश्विना! यातम् अधराद् उदक्तात्।
आ विश्वतः पाञ्च-जन्येन राया,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.७२.५

नासत्या! हे दोनों अश्वियो! पश्चातात् पीछे से आ तुम दोनों आ जाओ, पुरस्तात् सामने से आ आ जाओ; अश्विना! हे दोनों अश्वियो! अधरात् नीचे से आ यातम् आ जाओ, उदक्तात् ऊपर से आ जाओ। पाञ्च-जन्येन राया पंच-जनों की सुषमा के साथ विश्वतः विश्व और से आ आ जाओ। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

११३ आ पश्चातान् नासत्या पुरस्ताद्,
आश्विना! यातम् अधराद् उदक्तात्।
आ विश्वतः पाञ्च-जन्येन राया,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.७३.५

मंत्र-संख्या ११२ पर अर्थ मौजूद है।

११४ नू नो गो-मद् वीर-वद् धेहि रत्नम्,
उषो! अश्वा-वत् पुरु-भोजो अस्मे।
मा नो बर्हिः पुरुषता निदे कर्,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.७५.८

नः हमारे गो-मत् रश्मि-वान्, वीर-वत् वीर-वान् रत्नम् रत्न को, अश्व-वत् अश्व-वान् पुरु-भोजः बहु-अन्नवान् को अस्मे हममें उषः! हे उषा! नु अब धेहि तुम धर दो। नः हमारे बर्हिः जल/आकाश को तुम पुरुषता पुरुषों में निदे निन्दापात्र मा कः मत करो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

११५ एषा नेत्री राधसः सूनृतानाम्, उषा उच्छन्ती रिभ्यते वसिष्ठैः।
दीर्घ-श्रुतं रयिम् अस्मे दधाना,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.७६.७

राधसः धन की, सूनृतानाम् उषाओं/अन्नों की एषा नेत्री यह नायिका—दीर्घ-श्रुतम् दीर्घ काल से प्रसिद्ध रयिम् धन को अस्मे हममें दधाना धरनेवाली—उच्छन्ती अन्धेरे को जगमगानेवाली उषा उषा की वसिष्ठैः वसिष्ठ लोग रिभ्यते स्तुति कररहे हैं। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

११६ यां त्वा दिवो दुहितर्! वर्धयन्त्य्,
उषः! सु-जाते! मति-भिर् वसिष्ठाः।
सास्मासु धा रयिम् ऋष्वं बृहन्तं,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.७७.६

उषः! हे उषा! सु-जाते! हे सु-जाता! मति-भिः मतियों द्वारा वसिष्ठाः वसिष्ठ लोग याम् जिसे—त्वा तुझे, दिवः द्यौ को दुहितः! हे दोहनेवाली! (द्यौ की कन्या!), वर्धयन्ति बढ़ारहे हैं सा वह तुम ऋष्वम् जगमगीले, बृहन्तम् महान् रयिम् धन को अस्मासु हममें धाः धर दो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

११७ प्रति त्वाद्य सु-मनसो बुधन्ता,स्माकासो मघ-वानो वयं च।
तिल्विलायध्वम् उषसो! वि-भातीर्,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.७८.५

अस्माकासः मघ-वानः हमारे धन-वानों ने च और वयम् हमने—सु-मनसः सु मन वालों ने त्वा तुझे अद्य आज प्रति बुधन्त प्रति-बुद्ध किया—जगाया है। उषसः! हे उषाओ! वि-भातीः अन्धेरे को जगमगानेवाली तुम तिल्विलायध्वम् सर्वत्र पृथिवी/वाणी/अन्न/गौओं को स्निग्ध करो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

११८ देवं-देवं राधसे चोदयन्त्य्, अस्मद्र्यक् सूनृता ईरयन्ती।
व्यु-उच्छन्ती नः सनये धियो धा,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.७९.५

देवम्-देवम् प्रत्येक देव को राधसे धन के लिए चोदयन्ती प्रेरणा

देतीहुई, अस्मद्र्यक् हमारे सामने सूनृताः उषाओं/अन्नों को

ईरयन्ती आगे बढ़ातीहुई, वि-उच्छन्ती अन्धेरे को जगमगातीहुई तुम नः हमारे सनये लाभ के लिए धियः कर्मों/प्र-ज्ञाओं का धाः आधार बन जाओ। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

११६ अश्वा-वतीर् गो-मतीर् न उषासो,
वीर्-वतीः सदम् उच्छन्तु भद्राः।
घृतं दुहाना विश्वतः प्र-पीता,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.८०.३

मंत्र-संख्या ८८ पर अर्थ मौजूद है।

१२०;१२१ इयम् इन्द्रं वरुणम् अष्ट मे गीः,
प्रावत् तोके तनये तूतुजाना।
सु-रत्नासो देव-वीतिं गमेम,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.८४.५

इयम् यह मे मेरी गीः वाणी इन्द्रम् इन्द्र तक, वरुणम् वरुण तक अष्ट पहुंची है। तूतुजाना वेगवती वह तोके अगली पीढ़ी के विषय में, तनये उससे भी अगली पीढ़ियों के विषय में प्र आवत् ख़ूब रक्षा करे। सु-रत्नासः सु रत्नों वाले हमें देव-वीतिम् देवों की पहुंच में गमेम हो जाना चाहिए। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१२१ इयम् इन्द्रं वरुणम् अष्ट मे गीः,
प्रावत् तोके तनये तूतुजाना।
सु-रत्नासो देव-वीतिं गमेम,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः।

ऋ ७.८५.५ मंत्र-संख्या १२० पर अर्थ मौजूद है।

१२२ अयं सु तुभ्यं वरुण! स्वधा-वो!,
हृदि स्तोम उप-श्रितश् चिद् अस्तु।
शं नः क्षेमे शम् उ योगे नो अस्तु,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.८६.८

वरुण! हे वरुण! स्व-धावः! हे उदक-वान्!/बल-वान्! तुभ्यम् तेरे लिए गायाहुआ अयम् स्तोमः यह स्तोत्र हृदि हृदय पर उप-श्रितः चित् अस्तु अंकित ही हो जाए। नः क्षेमे हमारी रक्षा में शम् शान्ति हो। शम् उ शान्ति ही नः योगे हमारी उपलब्धि में हो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१२३ यो मृळयाति चक्रुषे चिद् आगो, वयं स्याम वरुणे अन्+आगाः।
अनु व्रतान्य् अदितेर् ऋधन्तो,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.८७.७

अदितेः पृथिवी/वाक्/गौ के व्रतानि व्रतों को अनु एक-एक करके अपनी ऋधन्तः सिद्धि बनातेहुए वयम् हम वरुणे उस वरुण के विषय में अन्-आगाः स्याम पाप-/अपराध-रहित हो जाएँ यः जो आगः चक्रुषे चित् पाप/अपराध कर चुकनेवाले के लिए भी मृळयाति दया—सुख करता है। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१२४ ध्रुवासु त्वासु क्षितिषु क्षियन्तो,
व्य् अस्मत् पाशं वरुणो मुमोचत्।
अवो वन्वाना अदितेर् उप-स्थाद्,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.८८.७

आसु इन ध्रुवासु क्षितिषु टिकाऊ—शाश्वत स्थितियों में त्वा तुझे लक्ष्य करके क्षियन्तः रहरहे हम लोग—अदितेः

पृथिवी/वाक्/गौ की उप-स्थात् उप-स्थिति—गोद से अवः वन्वानाः अन्न-काम हम लोग—अस्मत् हमसे अपने पाशम् बन्धन को वरुणः वरुण वि मुमोचत् सब प्रकार से अलग कर लेवे। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१२५;१२६ अर्वन्तो न श्रवसो भिक्षमाणा, इन्द्रवायू सुष्टुति-भिर् वसिष्ठाः।
वाज-यन्तः स्व् अवसे हुवेम,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः । ऋ ७.९०.७

न जैसे अर्वन्तः अश्व घास के भिखारी होते हो वैसे श्रवसः अन्न/धन के भिक्षमाणाः भिखारी, वाज-यन्तः अर्चनाशील/अन्न या बल के अभिलाषी हम वसिष्ठाः वसिष्ठ लोगों को सु-स्तुति-भिः सु-स्तुतियों द्वारा इन्द्र-वायू इन्द्र-वायु को अवसे रक्षा/तृप्ति के लिए सु हुवेम भली भाँति पुकारना चाहिए। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१२६ अर्वन्तो न श्रवसो भिक्षमाणा, इन्द्रवायू सुष्टुति-भिर् वसिष्ठाः।
वाज-यन्तः स्व् अवसे हुवेम, यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः।
ऋ ७.९१.७ मंत्र-संख्या १२५ पर अर्थ मौजूद है।

१२७;२१३ आ नो नियुद्-भिः शतिनीभिर् अध्वरं,
सहस्रिणीभिर् उप याहि यज्ञम्।
वायो अस्मिन्त् सवने मादयस्व,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.९२.५

शतिनीभिः सैकड़ों गुणों वाली, सहस्रिणीभिः हज़ारों गुणों वाली, नियुत्-भिः स्वयं आदेशकारिणी अपनी साधनिकाओं द्वारा नः अध्वरम् हमारी हिंसा-रहित/लक्ष्योन्मुख यज्ञम् उप अर्चना के समीप आ याहि तुम आ जाओ। वायो! हे वायु!

अस्मिन् सवने इस अर्चना-बैठक में मादयस्व तुम अर्चित—पूजित होओ। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१२८ एता अग्न! आशुषाणास इष्टीर्, युवोः सचाभ्य् अश्याम वाजान्।
मेन्द्रो नो विष्णुर् मरुतः परि ख्यन्,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.६३.८

अग्ने! हे अग्नि! एताः इन इष्टीः इष्टियों को आशुषाणासः शीघ्र सम्पन्न करनेवाले हमें युवोः तुम दोनों इन्द्र-अग्नि के वाजान् अन्नों/बलों की सचा एक साथ अभि अश्याम अभि-प्राप्ति करनी चाहिए। इन्द्रः इन्द्र, विष्णुः विष्णु, मरुतः मरुत नः हमारा मा परि ख्यन् परि-त्याग न करें। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१२९ अयम् उ ते सरस्वति! वसिष्ठो,
द्वाराव् ऋतस्य सु-भगे व्य् आवः।
वर्ध शुभ्रे! स्तुवते रासि वाजान्,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.९५.६

सरस्+वति! हे प्रवाह-वती! अयम् वसिष्ठः उ इस वसिष्ठ ने तो ते तेरे लिए ऋतस्य प्रवाह/सत्य के द्वारौ दोनों द्वारों को, सु-भगे! हे सु-धनवती! वि आवः बिलकुल खोल दिया है। वर्ध बढ़ो तुम शुभ्रे! हे शुभ-मयी!। स्तुवते स्तुति करनेहारे के लिए तुम वाजान् अन्नों/बलों को रासि देरही हो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१३०;१३१; बृहस्पते! युवम् इन्द्रश् च वस्वो, दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य।
२८१;२८६ धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद्, यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.९७.१०

बृहस्-पते! हे महानों के भी रक्षक! च और इन्द्रः इन्द्र, युवम् तुम दोनों दिव्यस्य वस्वः द्यौ में विद्यमान धन के उत और पार्थिवस्य पृथिवी में विद्यमान धन के ईशाथे ईश हो। स्तुवते स्तुति करनेहारे कीरये चित् स्तोता के लिए भी रयिम् धत्त तुम धन के आधार बनो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१३१ बृहस्पते! युवम् इन्द्रश् च वस्वो, दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य।
धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद्, यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः।
ऋ ७.९८.७ मंत्र-संख्या १३० पर अर्थ मौजूद है।

१३२;१३३; वषट् ते विष्णव्! आस आ कृणोमि,
२२७ तन् मे जुषस्व शिपि-विष्ट! हव्यम्।
वर्धन्तु त्वा सु-ष्टुतयो गिरो मे,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.९९.७

विष्णो! हे विष्णु! ते तेरे लिए आसः मुख से मो वषट् 'वषट्' शब्द की आ कृणोमि आकृति बनारहा/बोलरहा हूँ। शिपि-विष्ट! हे सीपी में निहित (मोती)! मे मेरे तत् हव्यम् उस समर्पण को जुषस्व पसन्द/स्वीकार करो। मे सु-स्तुतयः गिरः मेरी सु-स्तुतिमय वाणियां त्वा वर्धन्तु तुझे बढ़ाएं। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१३३ वषट् ते विष्णव्! आस आ कृणोमि,
तन् मे जुषस्व शिपि-विष्ट! हव्यम्।
वर्धन्तु त्वा सु-ष्टुतयो गिरो मे,

यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.१००.७

मंत्र-संख्या १३२ पर अर्थ मौजूद है।

१३४ स रेतो-धा वृषभः शश्वतीनां,
तस्मिन्न् आत्मा जगतस् तस्थुषश् च।
तन् म ऋतं पातु शत-शारदाय,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.१०१.६

शश्वतीनाम् शाश्वतों—प्रवाहों का सः वह रेतः-धाः वृषभः प्रवाह-धर्मा वर्षक—तस्मिन् उस पर आधृत जगतः चल का च और तस्थुषः स्थिर का आत्मा आत्मा—तत् ऋतम् वह प्रवाह/सत्य मा मुझे शत-शारदाय सौ संघर्षों तक पातु बचाए रखे। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१३५ स नः पप्रिः पारयाति, स्वस्ति नावा पुरु-हूतः।
इन्द्रो विश्वा अति द्विषः। ऋ ८.१६.११

सः पप्रिः वह पूर्तिकर्ता, पुरु-हूतः बहुतों द्वारा पुकारागया इन्द्रः इन्द्र स्वस्ति स्वस्ति-पूर्वक नावा नौका द्वारा विश्वाः द्विषः अति सब द्वेषियों का अतिक्रमण करतेहुए नः पारयाति हमें पार लगारहा है।

१३६ बृहद् वरूथं मरुतां, देवं त्रातारम् अश्विना।
मित्रम् ईमहे वरुणं स्वस्तये। ऋ ८.१८.२०

त्रातारम् देवम् तारक देव से, अश्विना दोनों अश्वियों से, मित्रम् मित्र से, वरुणम् वरुण से हम स्वस्तये स्वस्ति के लिए मरुताम् मरुतों के बृहत् वरुथम् महान् गृह की ईमहे याचना कररहे हो।

१३७ ऐतु पूषा रयिर् भगः, स्वस्ति सर्व-धातमः।
उरुर् अध्वा स्वस्तये। ऋ ८.३१.११

बृहस्-पते! हे महानों के भी रक्षक! च और इन्द्रः इन्द्र, युवम् तुम दोनों दिव्यस्य वस्वः द्यौ में विद्यमान धन के उत और पार्थिवस्य पृथिवी में विद्यमान धन के ईशाथे ईश हो। स्तुवते स्तुति करनेहारे कीरये चित् स्तोता के लिए भी रयिम् धत्त तुम धन के आधार बनो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१३१ बृहस्पते! युवम् इन्द्रश् च वस्वो, दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य।
धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद्, यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः।
ऋ ७.९८.७ मंत्र-संख्या १३० पर अर्थ मौजूद है।

१३२;१३३; वषट् ते विष्णव्! आस आ कृणोमि,
२२७ तन् मे जुषस्व शिपि-विष्ट! हव्यम्।
वर्धन्तु त्वा सु-ष्टुतयो गिरो मे,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.९९.७

विष्णो! हे विष्णु! ते तेरे लिए आसः मुख से मो वषट् 'वषट्' शब्द की आ कृणोमि आकृति बनारहा/बोलरहा हूँ। शिपि-विष्ट! हे सीपी में निहित (मोती)! मे मेरे तत् हव्यम् उस समर्पण को जुषस्व पसन्द/स्वीकार करो। मे सु-स्तुतयः गिरः मेरी सु-स्तुतिमय वाणियां त्वा वर्धन्तु तुझे बढ़ाएं। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१३३ वषट् ते विष्णव्! आस आ कृणोमि,
तन् मे जुषस्व शिपि-विष्ट! हव्यम्।
वर्धन्तु त्वा सु-ष्टुतयो गिरो मे,

यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.१००.७

मंत्र-संख्या १३२ पर अर्थ मौजूद है।

१३४ स रेतो-धा वृषभः शश्वतीनां,
तस्मिन्न् आत्मा जगतस् तस्थुषश् च।
तन् म ऋतं पातु शत-शारदाय,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.१०१.६

शश्वतीनाम् शाश्वतों—प्रवाहों का सः वह रेतः-धाः वृषभः प्रवाह-धर्मा वर्षक—तस्मिन् उस पर आधृत जगतः चल का च और तस्थुषः स्थिर का आत्मा आत्मा—तत् ऋतम् वह प्रवाह/सत्य मा मुझे शत-शारदाय सौ संघर्षों तक पातु बचाए रखे। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१३५ स नः पप्रिः पारयाति, स्वस्ति नावा पुरु-हूतः।
इन्द्रो विश्वा अति द्विषः। ऋ ८.१६.११

सः पप्रिः वह पूर्तिकर्ता, पुरु-हूतः बहुतों द्वारा पुकारागया इन्द्रः इन्द्र स्वस्ति स्वस्ति-पूर्वक नावा नौका द्वारा विश्वाः द्विषः अति सब द्वेषियों का अतिक्रमण करतेहुए नः पारयाति हमें पार लगारहा है।

१३६ बृहद् वरूथं मरुतां, देवं त्रातारम् अश्विना।
मित्रम् ईमहे वरुणं स्वस्तये। ऋ ८.१८.२०

त्रातारम् देवम् तारक देव से, अश्विना दोनों अश्वियों से, मित्रम् मित्र से, वरुणम् वरुण से हम स्वस्तये स्वस्ति के लिए मरुताम् मरुतों के बृहत् वरुथम् महान् गृह की ईमहे याचना कररहे हो।

१३७ ऐतु पूषा रयिर् भगः, स्वस्ति सर्व-धातमः।
उरुर अध्वा स्वस्तये। ऋ ८.३१.११

सर्व-धातमः सबके अतिशय धारणकर्ता—पूषा पूषा का, रयिः धन का, भगः भग का, उरुः अध्वा दीर्घ पथ का—प्रत्येक का, स्वस्तये स्वस्ति के लिए, स्वस्ति आ एतु शुभागमन होवे।

१३८ सोम! राजन्! मृळया नः स्वस्ति, तव स्मसि व्रत्यास् तस्य विद्धि।
अलर्ति दक्ष उत मन्युर् इन्दो!,
मा नो अर्यो अनु-कामं परा दाः। ऋ ८.४८.८

सोम! हे सोम! राजन्! हे राजा! तुम नः मृळय हमें सुख दो ताकि स्वस्ति स्वस्ति होवे। हम तव तेरे व्रत्याः व्रतों का पालन करनेहारे स्मसि हो। तस्य उस बात को विद्धि तुम जान लो। दक्षः दक्ष अलर्ति हरकत कररहा है उत और मन्युः मन्यु भी अपनी कारगुज़ारी कररहा है, इन्दो! हे इन्दु!। इस अर्यः खटपटिये की अनु-कामम् मन-चाही के अनुसार कहीं तुम नः हमें मा परा दाः मत बिसरा देना।

१३९;२८७ आ तू सु-शिप्र! दं-पते!, रथं तिष्ठा हिरण्ययम्।
अध द्युक्षं सचेवहि, सहस्र-पादम् अरुषं,
स्वस्ति-गाम् अनू+एहसम्। ऋ ८.६९.१६

सु-शिप्र! हे सु-हनु! दम्-पते! हे गृह-रक्षक! तुम तु अब हिरण्ययम् रथम् हिरण्यय रथ पर आ तिष्ठ ठीक से खड़े हो जाओ। आ फिर हम दोनों द्युक्षम् दीप्तिमान् की, सहस्र-पादम् अरुषम् सहस्र-पाद अश्व की, स्वस्ति-गाम् स्वस्ति-पूर्वक जानेहारे की, अनू-एहसम् पाप-रहित की सचेवहि संगति में रहें।

१४०;२२१ ऋधक् सोम! स्वस्तये, सं-जग्मानो दिवः कविः।
पवस्व सूर्यो दृशे। ऋ ९.६४.३०

सोम! हे सोम! ऋधक् ऋद्धिमान्, दिवः सम्-जग्मानः द्यौ से

चलकर सर्वत्र सं-गमन-शील, कविः मेधावी तुम स्वस्तये

स्वस्ति के लिए बहो। सूर्यः सूर्य तुम दृशे दर्शनार्थ पवस्व बहो।

१४१ परि सोम! प्र धन्वा स्वस्तये,
नृ-भिः पुनानो अभि वासया-शिरम्।
ये ते मदा आहनसो वि-हायसस्,
तेभिर् इन्द्रं चोदय दातवे मघम्। ऋ ९.७५.५

सोम! हे सोम! स्वस्तये स्वस्ति के लिए परि सब ओर प्र धन्व ख़ूब दौड़ो। नृ-भिः नरों द्वारा पुनानः पावन किए जारहे तुम अपने आ-शिरम् आ-श्रय को अभि दोनों ओर से वासय ढक लो। ये जो ते तेरी आ-हनसः आ-घात करनेवाली, वि-हायसः मदाः महान् अर्चनाएँ हो तेभिः उनके द्वारा इन्द्रम् इन्द्र को चोदय प्रेरणा करो ताकि वह मघम् धन को दातवे देने के लिए राज़ी हो जाए।

१४२ पवस्व देव-मादनो वि-चर्षणिर्,
अप्सा इन्द्राय वरुणाय वायवे।
कृधी नो अद्य वरिवः स्वस्ति-मद्,
उरु-क्षितौ गृणीहि दैव्यं जनम्। ऋ ९.८४.१

देव-मादनः देवों की अर्चना करनेवाले, वि-चर्षणिः वि-द्रष्टा, अप्-साः उदक/कर्म के दाता तुम पवस्व बहो इन्द्राय इन्द्र के लिए, वरुणाय वरुण के लिए, वायवे वायु के लिए। अद्य आज वरिवः धन को तुम नः हमारे लिए स्वस्ति-मत् कृधि स्वस्ति-मान् कर दो। उरु-क्षितौ विराट् गृह/पृथिवी पर दैव्यम् जनम् देवों के समुदाय का गृणीहि तुम बखान करो।

१४३ एवा राजेव क्रतु-माँ अमेन, विश्वा घनिघ्नद् दुर्-इता पवस्व।

इन्दो! सूक्ताय वचसे वयो धा, यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः।

राजा-इव एव राजा-समान ही क्रतु-मान् कर्म-/प्रज्ञा-वान् तुम अमेन बल/वेग/प्रयत्न/क्षोभ के साथ विश्वा दुः-इता आन्तरिक दुर्-गतों का घनिघ्नत् नाश करतेहुए पवस्व बहो। इन्दो! हे इन्दु! सु-उक्ताय वचसे सु-कथित वचन की ख़ातिर तुम वयः अन्न के धाः आधार बनो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१४४ अजीतयेहतये पवस्व, स्वस्तये सर्व-तातये बृहते।
तद् उशन्ति विश्व इमे सखायस्,
तद् अहं वश्मि पवमान! सोम! ऋ ९.९६.४

अ-जीतये अ-पराजय के लिए, अ-हतये अ-हिंसा के लिए, स्वस्तये स्वस्ति के लिए, बृहते सर्व-तातये महान् परम्परा-प्रवाह के लिए पवस्व तुम बहो। इमे विश्वे सखायः ये सब सखा तत् उसे उशन्ति चाहरहे हैं। पवमान! हे 'पवमान'—प्रवहमान! सोम! हे सोम! अहम् मैं तत् उस प्रवाह को वश्मि चाहरहा हूँ।

१४५;२२६ सम् उ प्रियो मृज्यते सानो अव्ये, यशस्-तरो यशसां क्षैतो अस्मे।
अभि स्वर धन्वा पूयमानो, यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः।
ऋ ९.९७.३

यशसाम् यशः-तरः यशस्वियों में बढ़कर यशस्वी, अस्मे क्षैतः हममें बसनेवाले, प्रियः प्रिय का अव्ये सानौ अवि-मय शिखर पर सम् उ मृज्यते सं-शोधन ही किया जारहा है। पूयमानः पावन किए जारहे तुम धन्व अन्तरिक्ष में अभि स्वर ख़ूब गूंजो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१४६ स्तोत्रे राये हरिर् अर्षा पुनान, इन्द्रं मदो गच्छतु ते भराय।
देवैर् याहि स-रथं राधो अच्छा,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ९.९७.६

पुनानः पावन किए जातेहुए, हरिः हरि तुम, स्तोत्रे स्तोत्र पर, राये शोभा के लिए अर्ष आगे बढ़ो। ते मदः तेरी अर्चना भराय भराव के लिए इन्द्रम् गच्छतु इन्द्र तक पहुंचे। स-रथम् राधः रथ-युक्त धन के प्रति देवैः देवों के साथ अच्छ याहि तुम अच्छी प्रकार जाओ। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१४७;२२२ एवा नः सोम! परि-षिच्यमान, आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति।
इन्द्रम् आ विश बृहता रवेण,
वर्धया वाचं जनया पुरं-धिम्। ऋ ६.६७.३६

सोम! हे सोम! परि-सिच्यमानः सर्वत्र बरसरहे, पूयमानः पावन किए जारहे तुम नः हमारे लिए स्वस्ति स्वस्ति-पूर्वक आ पवस्व एव ख़ूब बहो ही। बृहता रवेण उच्च घोष के साथ इन्द्रम् इन्द्र में आ विश आ-वेश बन जाओ। वाचम् वाणी को वर्धय बढ़ाओ। पुरम्-धिम् पुर्-धारण बल को जनय प्रकट करो।

१४८ स्वस्ति नो दिवो अग्ने! पृथिव्या, विश्वायुर् धेहि यजथाय देव!
सचेमहि तव दस्म! प्र-केतैर्,
उरुष्या ण उरु-भिर् देव! शंसैः। ऋ १०.७.१

अग्ने! हे अग्नि! दिवः द्यौ से, पृथिव्याः पृथिवी से नः हमारी स्वस्ति स्वस्ति होवे। देव! हे देव! यजथाय यजन के लिए विश्व-आयुः 'विश्व' अन्न के तुम धेहि आधार बनो। दस्म! हे दर्शनीय! तव तेरे प्र-केतैः आ-देशों द्वारा सचेमहि हमें तुझसे मिल जाना चाहिए। देव! हे देव! उरु-भिः शंसैः गहन अन्तर्वाणियों द्वारा तुम नः हमारी उरुष्य रक्षा करो।

१४६;२६७ यौ ते श्वानौ यम! रक्षितारौ, चतुर्-अक्षौ पथि-रक्षी नृ-चक्षसौ।
ताभ्याम् एनं परि देहि राजन्त्!
स्वस्ति चास्मा अन्+अमीवं च धेहि। ऋ १०.१४.११

यम! हे यम! यौ जो ते तेरे श्वानौ दो श्वान हो वे रक्षितारौ रक्षक हो, चतुः-अक्षौ चार आंखों वाले हो, पथि-रक्षी पथ के रखवाले हो, नृ-चक्षसौ नरों पर निगाह रखनेवाले हो। ताभ्याम् उनके द्वारा, एनम् इसे परि देहि सब प्रकार से सब कुछ दो राजन्! हे राजा!। अस्मै इसके लिए तुम स्वस्ति च स्वस्ति के भी, अन्-अमीवम् च नी-रोगिता के भी धेहि आधार बनो।

१५०;२४६ पूषेमा आशा अनु वेद सर्वाः, सो अस्माँ अभय-तमेन नेषत्।
स्वस्ति-दा आ+घृणिः सर्व-वीरो,प्र-युच्छन् पुर एतु प्र-जानन्।
ऋ १०.१७.५

पूषा पूषा देव सर्वाः आ-शाः सब आ-शाओं /दिशाओं को अनु क्रमशः वेद जानता है। सः वह अस्मान् हमें अभय-तमेन बिलकुल भयरहित पथ से नेषत् ले जाए। स्वस्ति-दाः स्वस्ति-दाता, आ-घृणिः ख़ूब जगमगानेवाला, सर्व-वीरः सब वीरों वाला वह अ+प्र-युच्छन् प्र-माद न करतेहुए, प्र-जानन् ख़ूब सोचते-समझतेहुए पुरः एतु आगे आगे चले।

१५१ द्यावा नो अद्य पृथिवी अन्+आगसो, मही त्रायेतां सुविताय मातरा।
उषा उच्छन्त्य् अप बाधताम् अघं,
स्वस्त्य् अग्निं सम्-इधानम् ईमहे। ऋ १०.३५.३

मही मातरा महान् माताएं—द्यावा द्यौ, पृथिवी पृथिवी नः अन्-आगसः हम पाप-रहितों को अद्य आज सुविताय सु-चरित के लिए त्रायेताम् बचा रखें। उच्छन्ती उषाः अन्धकार-निवारिका उषा अघम् पाप को अप बाधताम् दूर रखे। सम्-इधानम् अग्निम् धधकाए जारहे अग्नि से हम स्वस्ति स्वस्ति को ईमहे मांगरहे हो।

१५२ इयं न उस्रा प्रथमा सु-देव्यं, रेवत् सनि-भ्यो रेवती व्यू उच्छतु।
आरे मन्युं दुर्-विदत्रस्य धीमहि,
स्वस्त्य् अग्निं सम्-इधानम् ईमहे। ऋ १०.३५.४

इयम् यह प्रथमा उस्रा प्रथम गौ/रश्मि—रेवती शोभामयी नः सनि-भ्यः हम समर्पणकर्ताओं के लिए उस प्रकार वि उच्छतु अन्धकार का निवारण करे ताकि रेवत् शोभामय, सु-देव्यम् देवों के योग्य कल्याणमय परिस्थिति बन जाए। दुः-विदत्रस्य दुर्-बुद्धि मनुष्य के मन्युम् क्रोध से आरे दूर रखतेहुए धीमहि हमें ध्यान-साधना करनी चाहिए। सम्-इधानम् अग्निम् धधकाए जारहे अग्नि से हम स्वस्ति स्वस्ति को ईमहे मांगरहे हो।

१५३ प्र याः सिस्रते सूर्यस्य रश्मि-भिर्,
ज्योतिर् भरन्ती ँर् उषसो व्यू-उष्टिषु।
भद्रा नो अद्य श्रवसे व्यू उच्छत,
स्वस्त्य् अग्निं सम्-इधानम् ईमहे। ऋ १०.३५.५

याः जो सूर्यस्य रश्मि-भिः सूर्य की रश्मियों के साथ प्र सिस्रते प्र-सारित होरही हो वे—वि-उष्टिषु अन्धकार-निवारण के प्रसंगों में ज्योतिः भरन्तीः ज्योति को भरतीहुई उषसः उषाएँ—तुम भद्राः! हे भद्र उषाओ! अद्य आज नः हमारे श्रवसे अन्न/धन के लिए वि उच्छत ख़ूब अन्धकार-निवारण करो। सम्-इधानम् अग्निम् धधकाए जारहे अग्नि से हम स्वस्ति स्वस्ति को ईमहे मांगरहे हो।

१५४ अन्+अमीवा उषस आ चरन्तु न,
उद् अग्नयो जिहतां ज्योतिषा बृहत्।
आयुक्षाताम् अश्विना तूतुजिं रथं,
स्वस्त्य् अग्निं सम्-इधानम् ईमहे। ऋ १०.३५.६

अन्-अमीवाः उषसः रोग-रहित उषाएँ नः हमारी ओर आ चरन्तु चली आएँ। अग्नयः अग्नि ज्योतिषा ज्योति के साथ बृहत् ख़ूब उत् जिहताम् ऊँचे जाएँ। अश्विना दोनों अश्वियों ने तूतुजिम् रथम् तीव्र रथ को अयुक्षाताम् जोत लिया है। सम्-इधानम् अग्निम् धधकाए जारहे अग्नि से हम स्वस्ति स्वस्ति को ईमहे मांगरहे हैं।

१५५ श्रेष्ठं नो अद्य सवितर्! वरेण्यं,
भागम् आ सुव स हि रत्न-धा असि।
रायो जनित्रीं धिषणाम् उप ब्रुवे,
स्वस्त्य् अग्निं सम्-इधानम् ईमहे। ऋ १०.३५.७

सः वह, हि क्योंकि, रत्न-धाः असि तू रत्नों का आधार है, अतः नः हमारे लिए अद्य आज सवितः! हे सविता! तुम श्रेष्ठम् वरेण्यम् भागम् उत्तम वरणीय भाग को आ सुव ले आओ। रायः जनित्रीम् शोभा की जननी धिषणाम् वाणी को उप ब्रुवे मैं पास आकर—कान में, धीरे से—बोलरहा हूँ। सम्-इधानम् अग्निम् धधकाए जारहे अग्नि से हम स्वस्ति स्वस्ति को ईमहे मांगरहे हैं।

१५६ पिपर्तु मा तद् ऋतस्य प्र-वाचनं, देवानां यन् मनुष्या अमन्महि।
विश्वा इद् उस्राः स्पळ् उद् एति सूर्यः,
स्वस्त्य् अग्निं सम्-इधानम् ईमहे। ऋ १०.३५.८

मनुष्याः हम मनुष्यों ने देवानाम् देवों का यत् जो अमन्महि प्रत्यक्ष/प्राप्त किया तत् वह ऋतस्य परम्परा/सत्य का प्र-वाचनम् प्र-वचन मा मुझे पिपर्तु पाले/पूरण करे। सूर्यः सूर्य विश्वाः इत् सब ही उस्राः गौओं/रश्मियों को स्पट् बांधते/आत्मसात् करते/पकड़तेहुए उत् एति उदय होरहा है। सम्-इधानम् अग्निम् धधकाए जारहे अग्नि से हम स्वस्ति स्वस्ति

को ईमहे मांगरहे हो।

१५७ अ+द्वेषो अद्य बर्हिषः स्तरीमणि,
ग्राव्णां योगे मन्मनः साध ईमहे।
आदित्यानां शर्मणि स्था भुरण्यसि,
स्वस्त्य् अग्निं सम्-इधानम् ईमहे। ऋ १०.३५.६

बर्हिषः अन्तरिक्ष/प्रवाह के स्तरीमणि फैलाव पर, ग्राव्णाम् मेघों के योगे मेल पर, मन्मनः याच्ञा के साधे साधने पर अ-द्वेषः द्वेष-रहितों से हम अद्य आज ईमहे याच्ञा कररहे हो। आदित्यानाम् अदिति-पुत्रों के शर्मणि गृह/सुख में स्थाः स्थिर तू भुरण्यसि सक्रिय होरहा है। सम्-इधानम् अग्निम् धधकाए जारहे अग्नि से हम स्वस्ति स्वस्ति को ईमहे मांगरहे हैं।

१५८ आ नो बर्हिः सध-मादे बृहद् दिवि,
देवाँ ईळे सादया सप्त होतॄन्।
इन्द्रं मित्रं वरुणं सातये भगं,
स्वस्त्य् अग्निं सम्-इधानम् ईमहे। ऋ १०.३५.१०

सध-मादे साथ-साथ सामूहिक अर्चना में—दिवि द्यौ में बृहत् बर्हिः महान् अन्तरिक्ष/प्रवाह—वहां मो देवान् देवों का ईळे ह यान कररहा हूँ। वहां नः हमारे सप्त होतॄन् सात आह्वानकर्ताओं को आ सादय तुम भलीभांति बैठाओ। सातये सिद्धिलाभ के लिए इन्द्रम् इन्द्र से, मित्रम् मित्र से, वरुणम् वरुण से, भगम् भग से, सम्-इधानम् अग्निम् धधकाए जारहे अग्नि से हम स्वस्ति स्वस्ति को ईमहे मांगरहे हैं।

१५९ त आदित्या आ गता सर्व-तातये, वृधे नो यज्ञम् अवता स-जोषसः।
बृहस्पतिं पूषणम् अश्विना भगं,

स्वस्त्य् अग्निं सम्-इधानम् ईमहे। ऋ १०.३५.११

आदित्याः! हे अदिति-पुत्रो! सर्वतातये संपूर्ण विकास—क्रान्ति की ख़ातिर आ गत आ-जाओ। स-जोषसः! हे प्रीतिमयो!/ सेवाभावियो! नः वृधे हमारी वृद्धि की ख़ातिर तुम हमारे यज्ञम् यज्ञ की अवत रक्षा करो। बृहस्पतिम् बड़े-बड़ों के भी रक्षक से, पूषणम् पूषा से, अश्विना दोनों अश्वियों से, भगम् भग से, सम्-इधानम् अग्निम् धधकाए जारहे अग्नि से हम स्वस्ति स्वस्ति को ईमहे मांगरहे हैं।

१६० तन् नो देवा! यच्छत सु-प्रवाचनं,
छर्दिर् आदित्याः! सु-भरं नृ-पाय्यम्।
पश्वे तोकाय तनयाय जीवसे,
स्वस्त्य् अग्निं सम्-इधानम् ईमहे। ऋ १०.३५.१२

पश्वे पशु के लिए, तोकाय अगली पीढ़ी के लिए, तनयाय उससे भी अगली पीढ़ियों के लिए—नः हम सबके लिए, जीवसे जीवनार्थ, देवाः हे देवो! सु-प्रवाचनम् सु-प्रवचनयोग्य, तत् उस छर्दिः गृह को यच्छत तुम प्रदान करो, आदित्याः हे अदिति-पुत्रो!, जो सु-भरम् ख़ूब भरा-पूरा हो, नृ-पाय्यम् नरों के लिए सुरक्षित हो। सम्-इधानम् अग्निम् धधकाए जारहे अग्नि से हम स्वस्ति स्वस्ति को ईमहे मांगरहे हैं।

१६१;२१४ महो अग्नेः सम्-इधानस्य शर्मण्य्, अनागा मित्रे वरुणे स्वस्तये।
श्रेष्ठे स्याम सवितुः सवीमनि,
तद् देवानाम् अवो अद्या वृणीमहे। ऋ १०.३६.१२

स्वस्तये स्वस्ति के लिए मित्रे मित्र में, वरुणे वरुण में अन्-आगाः पापरहित हमें सम्-इधानस्य महः अग्नेः शर्मणि धधकाए जारहे, महान् अग्नि के गृह/सुख में, सवितुः श्रेष्ठे सविमनि सविता की उत्तम अनुज्ञा में स्याम होना चाहिए। देवानाम् देवों के तत् अवः उस रक्षण

को अद्य आज वृणीमहे हम वरण कररहे हो।

१६२ नावा न क्षोदः प्र-दिशः पृथिव्याः,
स्वस्ति-भिर् अति दुर्-गाणि विश्वा।
स्वां प्र-जां बृहद्-उक्थो महि-त्वा-,
वरेष्व् अदधाद् आ परेषु। ऋ १०.५६.७

न जैसे नावा नौका द्वारा क्षोदः उदक को पार करते हो वैसे पृथिव्याः प्र-दिशः पृथिवी की प्र-दिशाओं को, विश्वा दुः-गानि आन्तरिक कठिनाइयों को स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा अति अति-क्रमण कर लिया जाता है। स्वाम् प्र-जाम् अपनी प्र-जा को बृहत्-उक्थः महान्-भक्त ने महि-त्वा अपनी महिमा द्वारा अवरेषु अवरों में आ अदधात् आ-धान किया, परेषु परों में आ आ-धान किया।

१६३ असु-नीते! पुनर् अस्मासु चक्षुः,
पुनः प्राणम् इह नो धेहि भोगम्।
ज्योक् पश्येम सूर्यम् उच्-चरन्तम्,
अनु-मते! मृळया नः स्वस्ति। ऋ १०.५९.६

असु-नीते! हे प्राण-दायिनी! तुम पुनः फिर से अस्मासु हममें चक्षुः चक्षु की आधार बनो, पुनः फिर से प्राणम् प्राण की आधार बनो, इह यहां नः भोगम् हमारे भोग की धेहि आधार बनो। उत्-चरन्तम् सूर्यम् उदय होरहे सूर्य को ज्योक् चिर काल तक पश्येम हमें देखना चाहिए। अनु-मते! हे अनु-मति! नः हमें स्वस्ति स्वस्ति-पूर्वक मृळय तुम सुखी करो।

१६४ पुनर् नो असुं पृथिवी ददातु, पुनर् द्यौर् देवी पुनर् अन्तरिक्षम्।
पुनर् नः सोमस् तन्वं ददातु, पुनः पूषा पथ्यां या स्वस्तिः।

ऋ १०.५९.७

पुनः फिर से नः हमारे लिए असुम् प्राण को पृथिवी पृथिवी ददातु देवे, पुनः फिर से द्यौः देवी द्यौ देवी प्राण को देवे, पुनः अन्तरिक्षम् फिर से अन्तरिक्ष प्राण को देवे। पुनः फिर से नः हमारे लिए सोमः सोम तन्वम् शरीर/विस्तार को ददातु देवे, पुनः फिर से पूषा पूषा पथ्याम् पाथेय—अन्तर्वाणी को देवे या स्वस्तिः जो कि स्वस्ति है।

१६५ येभ्यो माता मधु-मत् पिन्वते पयः,
पीयूषं द्यौर् अदितिर् अद्रि-बर्हाः।
उक्थ-शुष्मान् वृष-भरान्त् स्व्-अप्नसस्,
ताँ आदित्याँ अनु मदा स्वस्तये। ऋ १०.६३.३

येभ्यः जिनके लिए माता माता—द्यौः द्यौ, अद्रि-बर्हाः अदितिः मेघ-पुच्छ अदिति मधु-मत् पयः मधुर जल को—पीयूषम् अमृत को पिन्वते बहारही है, उक्थ-शुष्मान् स्तुतियां जिनका बल हो, वृष-भरान् वर्षण-शक्ति से जो भरेहुए हो, सु-अप्नसः जिनके कर्म/संतति/रूप सुन्दर होते हो तान् आदित्यान् उन अदिति-पुत्रों की, स्वस्तये स्वस्ति के लिए, अनु क्रमशः—अनुज्ञा-पूर्वक मद तुम अर्चना/याचना करो।

१६६ नृ-चक्षसो अ+नि-मिषन्तो अर्हणा,
बृहद् देवासो अमृत-त्वम् आनशुः।
ज्योती-रथा अहि-माया अन्+आगसो,
दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये। ऋ १०.६३.४

नृ-चक्षसः नरों के द्रष्टा, अ-नि-मिषन्तः नि-मेष क्रिया से रहित देवासः देवों ने अर्हणा आदर के साथ बृहत् अमृत-त्वम् महान् मृत-रहितता को आनशुः पा लिया है। ज्योतिः-रथाः 'ज्योति' रथवाले अहि-मायाः मेघ-प्रज्ञ/प्रवाह-प्रज्ञ, अन्-आगसः पाप-रहित लोग स्वस्तये स्वस्ति के

लिए दिवः द्यौ की वर्ष्माणम् विराट्ता में वसते बस जाया करते हो।

१६७ सम्-राजो ये सु-वृधो यज्ञम् आ-ययुर्,
अ+परि-ह्वृता दधिरे दिवि क्षयम्।
ताँ आ विवास नमसा सुवृक्ति-भिर्,
महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये। ऋ १०.६३.५

ये सम्-राजः जो सम्-राट्, सु-वृधः सु-वृद्धिमान्, यज्ञम् आ-ययुः यज्ञ में आए थे उन अ-परि-ह्वृताः अ-परिहिंसित लोगों ने दिवि द्यौ में अपना क्षयम् निवास दधिरे बनाया था। तान् महः आदित्यान् उन महान् अदिति-पुत्रों की तू नमसा अन्न/वज्र द्वारा, सु-वृक्ति-भिः सु-सावधानियों द्वारा आ विवास सेवा कर। स्वस्तये स्वस्ति के लिए अदितिम् अदिति की सेवा कर।

१६८ को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ, विश्वे! देवासो! मनुषो! यति ष्ठन।
को वोध्वरं तुवि-जाता अरं करद्,
यो नः पर्षद् अत्य् अंहः स्वस्तये। ऋ १०.६३.६

विश्वे! देवासः! हे 'विश्व' नामक देवो! मनुषः! हे मनुओ! यति स्थन जितने भी तुम हो—तुम सब यम् जिसे जुजोषथ चाहते/सेवन करते हो ऐसा कः कौन वः तुम्हारी स्तोमम् स्तुति को राधति साध पारहा है? यः जो नः हमें स्वस्तये स्वस्ति के लिए अंहः पाप के अति पर्षत् पार लगा दे ऐसा कः कौन वः तुम्हारे लिए अध्वरम् मंज़िल तक पहुंचनेवाले/हिंसा-रहित कर्म—यज्ञ को अरम् करत् भलीभांति कर पारहा है, तुवि-जाताः! हे बहु-जननो/ बहुत्व-मयो!?

१६९ येभ्यो होत्रां प्रथमाम् आ-येजे मनुः,
सम्+इद्धाग्निर् मनसा सप्त होतृ-भिः।

त आदित्या! अभयं शर्म यच्छत,
सु-गा नः कर्त सु-पथा स्वस्तये। ऋ १०.६३.७

समिद्ध-अग्निः सम्-इद्ध अग्नियों वाले मनुः मनु ने मनसा मन द्वारा, सप्त होतृ-भिः सात ऋत्विजों—होताओं के साथ येभ्यः जिनके लिए प्रथमाम् होत्राम् प्रथमा वाणी/यज्ञ का आ-येजे आ-यजन किया था ते वे, आदित्याः हे अदिति-पुत्रो!, तुम लोग अ-भयम् शर्म भय-रहित गृह/सुख को यच्छ दो। स्वस्तये स्वस्ति के लिए सु-पथा सु-पथों को नः हमारे लिए सु-गा कर्त तुम सु-गम करो।

१७० य ईशिरे भुवनस्य प्र-चेतसो,
विश्वस्य स्थातुर् जगतश् च मन्तवः।
ते नः कृताद् अकृताद् एनसस्,
पर्यू अद्या देवासः! पिपृता स्वस्तये। ऋ १०.६३.८

स्थातुः स्थिर च और जगतः चल विश्वस्य विश्व को मन्तवः माननेवाले, ये जो प्र-चेतसः प्र-ज्ञावान् लोग भुवनस्य प्रवाह के ईशिरे ईश हो ते वे—देवासः हे देवो! नः हमें कृतात्, अकृतात् एनसः कृत और अकृत पाप से स्वस्तये स्वस्ति के लिए अद्य आज परि पिपृत तुम सब प्रकार से तार दो।

१७१ भरेष्व् इन्द्रं सु-हवं हवामहें,हो-मुचं सु-कृतं दैव्यं जनम्।
अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं, द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये।
ऋ १०.६३.६

भरेषु संग्रामों में हवामहे हम पुकाररहे हैं सु-हवम् इन्द्रम् सु-आह्वानवाले इन्द्र को। अंहः-मुचम् पाप से मुक्त, सु-कृतम् सु-कर्मा, दैव्यम् जनम् देव-कोटिक समुदाय को हम पुकाररहे हो—अग्निम् अग्नि को, मित्रम् मित्र को, वरुणम् वरुण को और भगम् भग को सातये उपलब्धि के लिए हम पुकाररहे हो; द्यावा-पृथिवी द्यौ-पृथिवी को, मरुतः मरुतों को स्वस्तये स्वस्ति के लिए हम पुकाररहे हो।

१७२;२०९; सु-त्रामाणं पृथिवीं द्याम् अन्+एहसं,
२४५ सु-शर्माणम् अदितिं सु-प्र+णीतिम्।
दैवीं नावं स्व्-अरित्राम् अन्+आगसम्,
अ+स्रवन्तीम् आ रुहेमा स्वस्तये। ऋ १०.६३.१०

सु-त्रामाणम् पृथिवीम् सु-तारिका पृथिवी पर और अन्-एहसम् द्याम् पाप-रहित द्यौ पर, सु-शर्माणम् सु-प्र+नीतिम् अदितिम् 'सु' गृह/सुख वाली 'सु प्र'-नीतियों वाली वाणी/गौ पर हमें आ-रोहण करना चाहिए; दैवीम् देव-कोटि की, सु-अरित्राम् 'सु' चप्पुओं वाली, अन्-आगसम् पाप-रहित, अ-स्रवन्तीम् रिसाव-रहित नावम् नाव पर स्वस्तये स्वस्ति के लिए आ रुहेम हमें आ-रोहण करना चाहिए।

१७३ विश्वे! यजत्रा! अधि वोचतोतये,
त्रायध्वं नो दुर्-एवाया अभि-ह्रुतः।
सत्यया वो देव-हूत्या हुवेम,
शृण्वतो देवा! अवसे स्वस्तये। ऋ १०.६३.११

विश्वे! यजत्राः! हे विश्व नामक देवो! हे पूजनीयो! तुम ऊतये अधि रक्षा के लिए अधिकृत होकर वोचत बोलो। अभि-ह्रुतः दुः-एवायाः अभि-हिंसिका दुर-गति से नः हमें त्रायध्वम् तुम बचाओ। देवाः! हे देवो! अवसे रक्षा के लिए, स्वस्तये स्वस्ति के लिए शृण्वतः पुकार को सुननेहारे वः तुम्हें सत्यया देव-हूत्या देवों की सच्ची पुकार द्वारा हुवेम हमें पुकारना चाहिए।

१७४ अपामीवाम् अप विश्वाम् अन्+आ-हुतिम्,
अपारातिं दुर्-विदत्राम् अघा-यतः।
आरे देवा! द्वेषो अस्मद् युयोतन,
उरु णः शर्म यच्छता स्वस्तये। ऋ १०.६३.१२

अमीवाम् रोग को अप दूर करो, विश्वाम् अन्-आ-हुतिम् विश्व आ-हुति-रहितता को अप दूर करो। अघ-यतः पापेच्छु की अ-रातिम् अ-दानशीलता को, दुः-विदत्राम् दुर्-बोध को अप दूर करो। देवाः! हे देवो! द्वेषः द्वेष को अस्मत् हमसे आरे परे युयोतन खदेड़ दो। स्वस्तये स्वस्ति के लिए उरु शर्म विराट् गृह/सुख को नः हमारे लिए यच्छत तुम दो।

१७५ अ+रिष्टः स मर्तो विश्व एधते,
प्र प्र-जाभिर् जायते धर्मणस् परि।
यम् आदित्यासो! नयथा सुनीति-भिर्,
अति विश्वानि दुर्-इता स्वस्तये। ऋ १०.६३.१३

सः वह अ-रिष्टः मर्तः अ-हिंसित मनुष्य विश्वः विश्वात्मक होतेहुए एधते बढ़ता है, धर्मणः परि धर्म के फलस्वरूप प्र-जाभिः प्र-जाओं द्वारा प्र जायते ख़ूब बढ़ता है/यश पाता है यम् जिसे आदित्यासः! हे अदिति-पुत्रो! तुम सु-नीति-भिः सु-नीतियों द्वारा स्वस्तये स्वस्ति के लिए विश्वानि दुः-इता अति विश्व दुर्-गतों के पार नयथ ले जाते हो।

१७६ यं देवासोवथ वाज-सातौ, यं शूर-साता मरुतो! हिते धने।
प्रातर्-यावाणं रथम् इन्द्र! सानसिम्,
अ+रिष्यन्तम् आ रुहेमा स्वस्तये। ऋ १०.६३.१४

वाज-सातौ अन्न/बल के संग्राम में, देवासः! हे देवो!, यम् जिसे अवथ तुम बचा रखते हो, यम् जिसे मरुतः! हे मरुतो!, धने हिते धन के प्रसंग में होनेवाले शूर-साता संघर्ष में तुम रक्षण देते हो उस प्रातः-यावानम् प्रातः प्रस्थान करनेवाले, सानसिम् वितरणकर्ता, अ-रिष्यन्तम् निर्-बाध रथम् रथ पर, इन्द्र! हे इन्द्र!, स्वस्तये स्वस्ति के लिए आ-रुहेम हमें आ-रोहण करना चाहिए।

१७७ स्वस्ति नः पथ्यासु धन्व-सु, स्वस्त्य् अप्-सु वृजने स्वर्-वति। स्वस्ति नः पुत्र-कृथेषु योनिषु, स्वस्ति राये मरुतो! दधातन। ऋ १०.६३.१५

स्वस्ति स्वस्ति को नः हमारे लिए पथ्यासु गमन-योग्य धन्व-सु अन्तरिक्षों में तुम धारण करो, स्वस्ति स्वस्ति को अप्-सु उदकों में, स्वः-वति वृजने स्वः से भरेहुए बल में तुम धारण करो, स्वस्ति स्वस्ति को नः हमारे पुत्र-कृथेषु पुत्रों से भरे-हुए योनिषु गृहों में तुम धारण करो, मरुतः! हे मरुतो! स्वस्ति स्वस्ति को राये शोभा के लिए दधातन तुम धारण करो।

१७८ स्वस्तिर् इद्द् हि प्र-पथे श्रेष्ठा, रेक्णस्+वत्य् अभि या वामम् एति। सा नो अमा सो अरणे नि पातु, स्व्-आ+वेशा भवतु देव-गोपा। ऋ १०.६३.१६

हि क्यों कि प्र-पथे उत्कृष्ट-पथ—अन्तरिक्ष में श्रेष्ठा अतिशय कल्याणमयी या जो रेक्णस्-वती धन-वती स्वस्तिः इत् स्वस्ति ही वामम् अभि प्रशस्य तक एति पहुंचती है अतः सा वह नः हमारी अमा गृह है। सा-उ वही अरणे पर देश में नि पातु नियम से रक्षा करे। देव-गोपा देवों द्वारा रक्षिता वह सु-आ-वेशा कल्याणमय उत्साह वाली भवतु हो जाए।

१७९ त्वष्टारं वायुम् ऋभवो! य ओहते,
दैव्या होतारा उषसं स्वस्तये।
बृहस्पतिं वृत्र-खादं सु-मेधसम्,
इन्द्रियं सोमं धन-सा उ ईमहे। ऋ १०.६५.१०

ऋभवः! हे अतिशय सत्य तेज से दमकने वालो! त्वष्टारम् त्वष्टा से, वायुम् वायु से, दैव्या होतारा दोनों दैव्य होताओं से, उषसम् उषा से, वृत्र-खादम् वृत्र-भक्षक, सु-मेधसम् सु-मेधावान् बृहस्पतिम्

बृहस्-पति से, इन्द्रियम् सोमम् इन्द्र के प्रिय सोम से—यः जो भी स्वस्तये स्वस्ति के लिए ओहते तैयार हो सकता है उससे धन-साः धन के वितरणकर्ता हम उ ईमहे अवश्य ही याचना कररहे हो।

१८०;१८३ देवान् वसिष्ठो अमृतान् ववन्दे,
ये विश्वा भुवनानि प्र-तस्थुः।
ते नो रासन्ताम् उरु-गायम् अद्य,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ १०.६५.१५

वसिष्ठः वसिष्ठ ने अ-मृतान् देवान् मृत भाव से रहित उन देवों की ववन्दे अर्चना की थी ये जो विश्वा भुवना विश्व उदकों के अभि अभिमुख प्र-तस्थुः भली भांति स्थित थे। ते वे देव उरु-गायम् बहु-कीर्तिवाले व्यक्तित्व को अद्य आज नः हमारे लिए रासन्ताम् देवों। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१८१ देवान् हुवे बृहच्-छ्रवसः स्वस्तये,
ज्योतिष्-कृतो अध्वरस्य प्र-चेतसः।
ये वावृधुः प्र-तरं विश्व-वेदस,
इन्द्र-ज्येष्ठासो अमृता ऋता-वृधः। ऋ १०.६६.१

देवान् देवों की, स्वस्तये स्वस्ति के लिए, हुवे मैं अर्चना—आह्वान कररहा हूं—बृहत्-श्रवसः वे महान् अन्न/धन के भण्डार हैं, ज्योतिः-कृतः ज्योतिष्-कर्ता हो, अध्वरस्य लक्ष्यगामी—हिंसा-रहित साधना के प्र-चेतसः प्रकृष्ट ज्ञाता हो—ये जो देव प्र-तरम् ववृधुः अतिशय वृद्धिंगत हो गए थे; जो विश्व-वेदसः विश्व धन वाले, इन्द्र-ज्येष्ठासः इन्द्र को सबसे बड़ा मानने वाले, अ-मृताः मृत भाव से रहित,

ऋत-वृधः सत्योदक से बढ़नेवाले थे।

१८२ वसिष्ठासः पितृ-वद् वाचम् अक्रत,
देवाँ ईळाना ऋषि-वत् स्वस्तये।
प्रीता-इव ज्ञातयः कामम् एत्या-,
स्मे देवासोव धूनुता वसु। ऋ १०.६६.१४

देवान् ईळानाः देवों का ध्यान करनेवाले वसिष्ठासः वसिष्ठों ने स्वस्तये स्वस्ति के लिए, पितृ-वत् अपने पिता-समान, ऋषि-वत् ऋषि-समान, वाचम् वाणी का अक्रत उच्चारण किया है। प्रीताः- इव ज्ञातयः प्रसन्न संबन्धियों के समान कामम् स्वेच्छा-पूर्वक आ-इत्य आकर, देवासः! हे देवो!, अस्मे हम पर वसु धन को अव धूनुत तुम बरसा दो।

१८३ देवान् वसिष्ठो अमृतान् ववन्दे, ये विश्वा भुवनाभि प्र-तस्थुः।
ते नो रासन्ताम् उरु-गायम् अद्य,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ १०.६६.१५

मंत्र-संख्या १८० पर अर्थ मौजूद है।

१८४ एवा महो असुर! वक्षथाय, वम्रकः पड्-भिर् उप सर्पद् इन्द्रम्।
स इयानः करति स्वस्तिम् अस्मा,
इषम् ऊर्जं सु-क्षितिं विश्वम् आभाः। ऋ १०.९९.१२

एव अवश्य ही असुर! हे असुर! महः वक्षथाय महान् लक्ष्य की सिद्धि के लिए वम्रकः वम्रक पट्-भिः पैरों से घुटमन चलकर इन्द्रम् उप सर्पत् इन्द्र के समीप सरक आया है। सः वह—इन्द्र भी वम्रक की ओर इयानः बढ़तेहुए अस्मै इसके लिए स्वस्तिम् करति मंगल कररहा है। उसने इषम् अन्न, ऊर्जम् ऊर्जा, सु-क्षितिम् सु-गृह—विश्वम् पूरे विश्व का आ अभाः आ-भरण कर दिया है।

१८५ प्रीणीताश्वान् हितं जयाथ,
स्वस्ति-वाहं रथम् इत् कृणुध्वम्।
द्रोणा+हावम् अवतम् अश्म-चक्रम्,
अंसत्र-कोशं सिञ्चता नृ-पाणम्। ऋ १०.१०१.७

प्रीणीत तुम लोग प्रसन्न करो अश्वान् अश्वों को। हितम् जयाथ तुम लोग हित-संपादन करो। स्वस्ति-वाहम् रथम् इत् स्वस्ति-सम्पादक रथ को ही तुम लोग कृणुध्वम् तैयार करो। द्रोण-आ-हावम् काष्ठमय पानपात्र को, अवतम् कूप को, अश्म-चक्रम् पत्थर के चक्र को, अंसत्र-कोशम् कवच-कोश को, नृ-पानम् नरों द्वारा पान-योग्य बर्तन को सिञ्चत तुम लोग सींचो—भर दो।

१८६ अस्य पिब क्षु-मतः प्र-स्थितस्ये,न्द्र! सोमस्य वरम् आ सुतस्य।
स्वस्ति-दा मनसा मादयस्वा,र्वाचीनो रेवते सौभगाय।
ऋ १०.११६.२

इन्द्र! हे इन्द्र! अस्य इसके क्षु-मतः अन्न-वान्, प्र-स्थितस्य भली भांति रखेहुए, सुतस्य रसीले सोमस्य सोम के वरम् पोषण को आ पिब छककर पीओ। रेवते सौभगाय शोभायुक्त सौभाग्य के लिए अर्वाचीनः मुख़ातिब स्वस्ति-दाः स्वस्ति-दाता तुम मनसा मन से सबको मादयस्व अर्चनायुक्त कर दो।

१८७ नि त्वा वसिष्ठा अह्वन्त वाजिनं,
गृणन्तो अग्ने! विदथेषु वेधसः।
रायस् पोषं यजमानेषु धारय,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ १०.१२२.८

अग्ने! हे अग्नि! गृणन्तः स्तुतिशील, विदथेषु वेधसः यज्ञों में कर्मशील वसिष्ठाः वसिष्ठों ने त्वा तुझ वाजिनम् अन्न-/बल-वान् की नि अह्वन्त सतत अर्चना की है—आह्वान किया है।

रायः पोषम् जीवन-शोभा की पुष्टि को यजमानेषु यजमानों में धारय तुम स्थापित करो। स्वस्ति-भिः स्वस्तियों द्वारा सदा सदा नः हमें यूयम् तुम सब देव पात बचाओ।

१८८ आदित्यासो अति स्रिधो, वरुणो मित्रो अर्यमा।
उग्रं मरुद्-भी रुद्रं हुवेमे,न्द्रम् अग्निं स्वस्तयेति द्विषः।
ऋ १०.१२६.५

वरुणः वरुण, मित्रः मित्र, अर्यमा अर्यमा—ये आदित्यासः अदिति-पुत्र स्रिधः हिंसकों को अति लांघ जाएँ। मरुत्-भिः मरुतों के साथ उग्रम् रुद्रम् उग्र रुद्र की, इन्द्रम् इन्द्र की, अग्निम् अग्नि की, स्वस्तये स्वस्ति के लिए, द्विषः द्वेषियों को अति लांघकर, हुवेम हमें अर्चना—आह्वान करना चाहिए।

१८९;२२९; स्वस्ति-दा विशस् पतिर्, वृत्र-हा वि-मृधो वशी।
२५५ वृषेन्द्रः पुर एतु नः, सोम-पा अभयं-करः। ऋ १०.१५२.२

स्वस्ति-दाः स्वस्ति-दाता, विशः-पतिः प्रजा-पति, वृत्र-हा वृत्र-हन्ता, वि-मृधः विविध प्रकार से युद्ध करनेवाला, वशी नियन्त्रक, सोम-पाः सोम को पीनेवाला, अभयम्-करः भय-रहित करनेवाला, वृषा कृपालु इन्द्रः इन्द्र नः हमारे पुरः एतु आगे चले, हमारा नायक होवे।

१९०;२२०; त्यम् ऊ षु वाजिनं देव-जूतं, सहा-वानं तरुतारं रथानाम्।
अरिष्ट-नेमिं पृतनाजम् आशुं, स्वस्तये तार्क्ष्यम् इहा हुवेम।
ऋ १०.१७८.१

स्वस्तये स्वस्ति के लिए तार्क्ष्यम् तृक्ष की सन्तति—सु-पर्ण की इह यहां हुवेम हमें अर्चना—आह्वान करना चाहिए—त्यम् उ उसी को जो वाजिनम् अन्न-/बल-वान्, देव-जूतम् देव-प्रेरित, सह-वानम् सहनशक्ति-वान, रथानाम् तरुतारम् रथों को तैर जानेवाला, अरिष्ट-नेमिम् अटूट चक्र वाला, पृतनाजम् मनुष्यों

का प्रेरक, आशुम् फुर्तीला है।

१६१ इन्द्रस्येव रातिम् आ-जोहुवानाः, स्वस्तये नावम्-इवा रुहेम। उर्वी! न पृथ्वी! बहुले! गभीरे!, मा वाम् एतौ मा परेतौ रिषाम। ऋ १०.१७८.२

आ-जोहुवानाः भरपूर अर्चना—आह्वान कररहे हमें स्वस्तये स्वस्ति के लिए इन्द्रस्य-इव इन्द्र की देन जैसी रातिम् देन पर उस प्रकार आ रुहेम आ-रोहण करना चाहिए नावम्-इव जैसे नौका पर लोग आ-रोहण करते हो। न अब, उर्वी! पृथ्वी! बहुले! गभीरे! हे विस्तीर्ण! हे विराट्! हे भरी-पूरी! हे गंभीर!—दोनों—द्यौ-पृथिवी! हमें वाम् तुम दोनों के मा न तो आ-इतौ आ-गमन पर, मा न परा-इतौ परा-गमन पर रिषाम विनष्ट होना चाहिए।

१६२ इन्धानास् त्वा शतं हिमा द्यु-मन्तं सम् इधीमहि। वयस्वन्तो वयस्-कृतं सहस्वन्तः सहस्-कृतम्। अग्ने! सपत्न-दम्भनम् अदब्धासो अदाभ्यम्। चित्रा-वसो! स्वस्ति ते पारम् अशीय।

य ३.१८

हम वयस्वन्तः अन्नवान्, सहस्वन्तः उदक-/बल-वान्, अ-दब्धासः अ-हिंसित हो; तू वयः-कृतम् अन्न-वान्, सहः-कृतम् उदक-/बल-वान्, सपत्न-दम्भनम् शत्रुओं का वध करनेवाला, अ-दाभ्यम् अ-हिंसनीय है। त्वा तुझे इन्धानाः धधकानेवाले हम तुझ द्यु-मन्तम् द्युति-मान् को शतम् हिमाः सौ रात्रियों तक सम् इधीमहि सम्यक् धधकाते रहें अग्ने! हे अग्नि!। चित्र-वसो! हे अद्भुत वसुओं वाली—रात्रि! हम ते तेरा स्वस्ति स-कुशल पारम् अशीय पार पाएँ।

१६३ स नः पितेव सूनवे,ग्ने! सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये।

य ३.२४ मंत्र-संख्या १ पर अर्थ मौजूद है।

१६४ अनु त्वा माता मन्यताम् अनु पिता,नु भ्राता स-गर्भ्योनु सखा स-यूथ्यः। सा देवि! देवम् अच्छेहीन्द्राय सोमं रुद्रस् त्वा वर्तयतु, स्वस्ति सोम-सखा पुनर् एहि। य ४.२०

त्वा तुझे माता माता अनु मन्यताम् अनु-मति दे, पिता अनु पिता अनु-मति दे, स-गर्भ्यः भ्राता अनु सहोदर भाई अनु-मति दे, स-यूथ्यः सखा अनु सह-चर सखा अनु-मति दे। देवि! हे देवी! इन्द्राय इन्द्र की ख़ातिर सोमम् देवम् सोम देव की ओर तुम अच्छ अच्छी प्रकार इहि पहुंचो। रुद्रः रुद्र त्वा तुझे आ वर्तयतु लौटा लाए। तुम सोम-सखा सोम की मित्र हो। स्वस्ति 'स्वस्ति' भेंट के साथ—स-कुशल पुनः आ इहि पुनः आ-जाओ।

१६५ प्रति पन्थाम् अपद्महि, स्वस्ति-गाम् अन्+एहसम्। येन विश्वाः परि द्विषो, वृणक्ति विन्दते वसु। य ४.२६

पथिक येन जिस मार्ग से जाने पर विश्वाः द्विषः विश्व द्वेषियों को परि वृणक्ति परे रख लेता है, वसु रात्रि/धन को विन्दते पा लेता है ऐसे पन्थाम् मार्ग पर प्रति अपद्महि हमने क़दम रखा है, जो स्वस्ति-गाम् स्वस्ति-पूर्वक तय किया जा सकता है और जिस पर अन्-एहसम् अपराध की आशंका नहीं है।

१६६ उस्राव् एतं धूर्-षाहौ युज्येथाम्, अन्-अश्रू अवीर-हणौ ब्रह्म-चोदनौ। स्वस्ति यजमानस्य गृहान् गच्छतम्। य ४.३३

उस्रौ! हे दोनों गौओ! आ इतम् तुम आ-जाओ, धूः-सहौ जुए को सहने में समर्थ युज्येथाम् तुम जुत जाओ। तुम हो, कष्ट अनुभव करतेहुए भी, अन्-अश्रू आंसू न बहानेवाले, अ+वीर-हनौ वीरों को न मारनेवाले, ब्रह्म-चोदनौ उदक/अन्न/धन के प्रेरक। स्वस्ति 'स्वस्ति' भेंट के साथ यजमानस्य यजमान के गृहान् घरवालोंतक गच्छतम् पहुंचो।

१६७ · अंशुर्-अंशुष् टे देव! सोमा प्यायताम् इन्द्रायैकधन-विदे। आ तुभ्यम् इन्द्रः प्यायताम्, आ त्वम् इन्द्राय प्यायस्व। आ प्याययास्मान्त् सखीन्त् सन्या मेधया, स्वस्ति ते देव! सोम! सुत्याम् अशीय। एष्टा रायः, प्रेषे भगाय, ऋतम् ऋतवादि-भ्यो, नमो द्यावापृथिवीभ्याम्। य ५.७

देव! हे देव! सोम! हे सोम! ते तेरी अंशुः-अंशुः प्रत्येक बाली—हर अवयव एकधन-विदे एक धन को पानेवाले इन्द्राय इन्द्र के लिए आ प्यायताम् ख़ूब बढ़े। तुभ्यम् तेरे लिए इन्द्रः इन्द्र आ प्यायताम् ख़ूब बढ़े। त्वम् तू इन्द्राय इन्द्र के लिए आ प्यायस्व ख़ूब बढ़। अस्मान् सखीन् हम सखाओं को सन्या दान से, मेधया धन से आ प्याय तुम ख़ूब बढ़ाओ। देव! हे देव! सोम! हे सोम! ते तेरे सुत्याम् रस-ग्रहण-कर्म को स्वस्ति कुशलता-पूर्वक अशीय मो सम्पन्न करूँ। इष्टाः रायः वांछित जीवन-शोभाएं आ ख़ूब प्राप्त करूं। इषे अन्न के लिए, भगाय धन के लिए प्र आगे बढूँ। ऋतवादि-भ्यः सत्य-वादी/परम्परा-वादी/धन-वादी जनों के लिए क्रमशः ऋतम् सत्य/परम्परा/धन मुबारक! द्यावा-पृथिवीभ्याम् द्यौ-पृथिवी के लिए नमः समर्पण/संयम रहे।

१६८ समुद्रोसि विश्व-व्यचा, अजोस्य् एक-पाद्, अहिर् असि बुध्न्यो, वाग् अस्य् ऐन्द्रम् असि सदोस्य् ऋतस्य द्वारौ! मा मा सं ताप्तम्, अध्वनाम् अध्व-पते! प्र मा तिर स्वस्ति मेस्मिन् पथि देव-याने भूयात्। य ५.३३

तू विश्व-व्यचाः 'विश्व' व्याप्ति वाला समुद्रः असि अन्तरिक्ष है। तू एक-पात् एक पाद वाला अजः असि सर्वत्र-गामी है। तू बुध्-न्यः मौलिक अहिः असि मेघ है। वाक् असि तू वाणी है।

ऐन्द्रम् असि तू इन्द्र से सबद्ध है। सदः असि तू बैठक है। ऋतस्य उदक/धन/सत्य के द्वारौ हे दोनों द्वारो! मा मुझे मा सम् ताप्तम् तुम सन्ताप मत दो। अध्वनाम् मार्गों के अध्व-पते! हे मार्ग-रक्षक! मा मुझे प्र तिर तुम पार लगा दो। अस्मिन् इस देव-याने पथि देवों द्वारा आने-जाने के पथ पर मे मेरी स्वस्ति कुशलता भूयात् होवे।

१९९ सम् इन्द्र! णो मनसा नेषि गोभिः,
सं सूरि-भिर् मघ-वन्त्! सं स्वस्त्या।
सं ब्रह्मणा देव-कृतं यद् अस्ति, सं देवानां सु-मतौ यज्ञियानाम्।
स्वाहा। य ८.१५ मंत्र-संख्या ३४ पर अर्थ मौजूद है।

२०० प्र-तूर्वन्न् एह्य् अव-क्रामन्न् अशस्ती,
रुद्रस्य गाण-पत्यं मयो-भूर् एहि।
उर्व् अन्तरिक्षं वीहि स्वस्ति-गव्यूतिर्,
अभयानि कृण्वन् पूष्णा स-युजा सह। य ११.१५

प्र-तूर्वन् शीघ्रता करतेहुए, अ-शस्तीः अप-कीर्तियों को अव-क्रामन् पैरों से कुचलतेहुए आ इहि तुम आ जाओ। मयः-भूः सुख के उत्पादक तुम रुद्रस्य रुद्र के गाण-पत्यम् 'गण-रक्षक' पद को आ इहि प्राप्त करो। स्वस्ति-गव्यूतिः स्वस्ति-पथवाले तुम अ-भयानि भय-रहित स्थितियों को कृण्वन् उपस्थित करतेहुए, स-युजा पूष्णा सह सह-योगी पूषा देव के साथ उरु अन्तरिक्षम् विस्तीर्ण अन्तरिक्ष में वि इहि पहुंचो।

२०१ दृंहस्व देवि! पृथिवि! स्वस्तय, आसुरी माया स्वधया कृतासि।
जुष्टं देवेभ्य इदम् अस्तु हव्यम्, अरिष्टा त्वम् उद् इहि यज्ञे अस्मिन्। य ११.६९

देवि! हे देवी! पृथिवि! हे पृथिवी! स्वस्तये स्वस्ति के लिए दृंहस्व तुम

दृढ़ हो जाओ। स्वधया उदक/अन्न द्वारा कृता निर्मित आसुरी माया आसुरी प्र-ज्ञा तो असि तुम हो। इदम् हव्यम् यह हव्य देवेभ्यः देवों के लिए जुष्टम् अस्तु प्रिय—भोग होवे। अ-रिष्टा त्वम् अ-खण्डिता तुम अस्मिन् यज्ञे इस यज्ञ में उत् इहि उदय हो जाओ।

२०२ विश्वस्मै प्राणायापानाय व्यू-आनायोद्-आनाय प्रति-ष्ठायै चरित्राय। अग्निष् ट्वाभि पातु मह्या स्वस्त्या छर्दिषा शं-तमेन, तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद। य १३.१९

विश्वस्मै प्राणाय विश्व प्राण के लिए, अप-आनाय अपान के लिए, वि-आनाय व्यान के लिए, उत्-आनाय उदान के लिए, प्रति-स्थायै प्रति-ष्ठा के लिए, चरित्राय चरित्र के लिए मह्या स्वस्त्या महान् स्वस्ति द्वारा, शम्-तमेन छर्दिषा अतिशय शान्त गृह द्वारा त्वा तुझे अग्निः अग्नि अभि पातु बचाए। अङ्गिरस्वत् ध्रुवा अंगिराओं के समान ध्रुव तुम तया देवतया उस देवता के साथ सीद बैठो।

२०३ विश्व-कर्मा त्वा सादयत्व् अन्तरिक्षस्य पृष्ठे व्यचस्-वतीं प्रथस्वतीम् अन्तरिक्षं यच्छान्तरिक्षं दृंहान्तरिक्षं मा हिंसीः। विश्वस्मै प्राणायापानाय व्यू-आनायोद्-आनाय प्रति-ष्ठायै चरित्राय। वायुष् ट्वाभि पातु मह्या स्वस्त्या छर्दिषा शं-तमेन, तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद। य १४.१२

विश्व-कर्मा विश्व-कर्मा त्वा तुझ व्यचः-वतीम् अभिव्यक्ति-युक्ता, प्रथः-वतीम् विस्तृता को अन्तरिक्षस्य पृष्ठे अन्तरिक्ष की पीठ पर सादयतु बैठाए। अन्तरिक्षम् अन्तरिक्ष को यच्छ तू संभाल। अन्तरिक्षम् अन्तरिक्ष को दृंह तू दृढ कर। अन्तरिक्षम् अन्तरिक्ष की मा हिंसीः तू हिंसा मत कर। विश्वस्मै प्राणाय विश्व प्राण के

लिए, अप-आनाय अपान के लिए, वि-आनाय व्यान के लिए, उत्-आनाय उदान के लिए, प्रति-स्थायै प्रति-ष्ठा के लिए, चरित्राय चरित्र के लिए मह्या स्वस्त्या महान् स्वस्ति द्वारा, शम्-तमेन छर्दिषा अतिशय शान्त गृह द्वारा त्वा तुझे वायुः वायु अभि पातु बचाए। अङ्गिरस्वत् ध्रुवा अंगिराओं के समान ध्रुव तुम तया देवतया उस देवता के साथ सीद बैठो।

२०४ परमे-ष्ठी त्वा सादयतु दिवस् पृष्ठे व्यचस्-वतीं प्रथस्वतीं, दिवं यच्छ, दिवं दृंह, दिवं मा हिंसीः। विश्वस्मै प्राणायापानाय व्यू-आनायोद्-आनाय प्रति-ष्ठायै चरित्राय। सूर्यस् त्वाभि पातु मह्या स्वस्त्या छर्दिषा शं-तमेन, तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम्। य १५.६४

परमे-स्थी 'परम पर स्थिति वाला' त्वा तुझ व्यचः-वतीम् अभिव्यक्ति-युक्ता, प्रथः-वतीम् विस्तृता को दिवः पृष्ठे द्यौ की पीठ पर सादयतु बैठाए। दिवम् द्यौ को यच्छ तू संभाल। दिवम् द्यौ को दृंह तू दृढ़ कर। दिवम् द्यौ की मा हिंसीः तू हिंसा मत कर। विश्वस्मै प्राणाय विश्व प्राण के लिए, अप-आनाय अपान के लिए, वि-आनाय व्यान के लिए, उत्-आनाय उदान के लिए, प्रति-स्थायै प्रति-ष्ठा के लिए, चरित्राय चरित्र के लिए मह्या स्वस्त्या महान् स्वस्ति द्वारा, शम्-तमेन छर्दिषा अतिशय शान्त गृह द्वारा त्वा तुझे सूर्यः सूर्य अभि पातु बचाए। अङ्गिरस्वत् ध्रुवे अंगिराओं के समान ध्रुव तुम दोनों तया देवतया उस देवता के साथ सीदतम् बैठो।

२०५;२३५ अग्ने! प्रेहि प्रथमो देव-यतां, चक्षुर् देवानाम् उत मर्त्यानाम्। इयक्षमाणा भृगु-भिः स-जोषाः, स्वर् यन्तु यजमानाः स्वस्ति। य १७.६९

अग्ने! हे अग्नि! देव-यताम् प्रथमः देवाभिलाषियों में प्रथम,

देवानाम् देवों के उत और मर्त्यानाम् मनुष्यों के चक्षुः चक्षु तुम प्र इहि आगे आगे चलो। इयक्षमाणाः यज्ञ के अभिलाषी, भृगु-भिः स-जोषाः भृगुओं के साथ प्रीति-युक्त यजमानाः यजमान स्वस्ति स्वस्ति-पूर्वक स्वः स्वः को यन्तु प्राप्त करें।

२०६ इदं हविः प्र-जननं मे अस्तु, दश-वीरं सर्व-गणं स्वस्तये।
आत्म-सनि प्रजा-सनि पशु-सनि लोक-सन्य् अभय-सनि।
अग्निः प्र-जां बहुलां मे करोत्व्,
अन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त। य १९.४८

दश-वीरम् दस वीरों वाली, सर्व-गणम् सब गणों वाली इदम् हविः यह हवि स्वस्तये स्वस्ति के लिए मे मेरा प्र-जननम् रूपान्तर करनेवाली अस्तु होवे—आत्म-सनि आत्मा को देनेवाली, प्रजा-सनि प्रजाओं को देनेवाली, पशु-सनि पशुओं को देनेवाली, लोक-सनि लोकों को देनेवाली, अभय-सनि भय-रहितता को देनेवाली यह हवि है। अग्निः अग्नि मे मेरी प्र-जाम् प्र-जा को बहुलाम् करोतु ख़ूब बढ़ाए। अन्नम् अन्न, पयः रस, रेतः शुक्र को अस्मासु हममें धत्त तुम सब स्थिर कर दो।

२०७ त्रातारम् इन्द्रम् अवितारम् इन्द्रं,
हवे-हवे सु-हवं शूरम् इन्द्रम्।
ह्वयामि शक्रं पुरु-हूतम् इन्द्रं,
स्वस्ति नो मघ-वा धात्व् इन्द्रः।

य. २०.५० मंत्र-संख्या ५३ पर अर्थ मौजूद है।

२०८ एवेद् इन्द्रं वृषणं वज्र-बाहुं, वसिष्ठासो अभ्य् अर्चन्त्य् अर्कैः।
स नः स्तुतो वीर-वद् धातु गो-मद्,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। य २०.५४

मंत्र-संख्या ७३ पर अर्थ मौजूद है।

२०६ सु-त्रामाणं पृथिवीं द्याम् अन्+एहसं,
सु-शर्माणम् अदितिं सु-प्र+णीतिम्।
दैवीं नावं स्व्-अरित्राम् अन्+आगसम्,
अ-स्रवन्तीम् आ रुहेमा स्वस्तये। य २१.६

मंत्र-संख्या १७२ पर अर्थ मौजूद है।

२१० सु-नावम् आ रुहेयम्, अ-स्रवन्तीम् अन्+आगसम्।
शतारित्रां स्वस्तये। य २१.७

अ-स्रवन्तीम् न रिसने वाली, अन्-आगसम् पाप-रहित, शत-अरित्राम् सौ चप्पुओं द्वारा चलने वाली सु-नावम् 'सु' नौका पर स्वस्तये स्वस्ति के लिए आ रुहेयम् मुझे आ-रोहण करना चाहिए।

२११ तम् ईशानं जगतस् तस्थुषस् पतिं,
धियं-जिन्वम् अवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसाम् असद् वृधे,
रक्षिता पायुर् अ-दब्धः स्वस्तये। य २५.१८

मंत्र-संख्या ४ पर अर्थ मौजूद है।

२१२ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्ध-श्रवाः, स्वस्ति नः पूषा विश्व-वेदाः।
स्वस्ति नस् तार्क्ष्यो अरिष्ट-नेमिः,
स्वस्ति नो बृहस्पतिर् दधातु। य २५.१९

मंत्र-संख्या ५ पर अर्थ मौजूद है।

२१३ आ नो नियुद्-भिः शतिनीभिर् अध्वरं,
सहस्रिणीभिर् उप याहि यज्ञम्।
वायो! अस्मिन्त् सवने मादयस्व,

यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। य २७.२८

मंत्र-संख्या १२७ पर अर्थ मौजूद है।

२१४ महो अग्नेः सम्-इधानस्य शर्मण्य्,
अन्+आगा मित्रे वरुणे स्वस्तये।
श्रेष्ठे स्याम सवितुः सवीमनि,
तद् देवानाम् अवो अद्या वृणीमहे। य ३३.१७

मंत्र-संख्या १६१ पर अर्थ मौजूद है।

२१५ प्र वावृजे सु-प्रया बर्हिर् एषाम्, आ विश्पतीव बीरिट इयाते।
विशाम् अक्तोर् उषसः पूर्व-हूतौ, वायुः पूषा स्वस्तये नियुत्वान्।
य ३३.४४ मंत्र-संख्या ८५ पर अर्थ मौजूद है।

२१६ अश्वा-वतीर् गो-मतीर् न उषासो,
वीर-वतीः सदम् उच्छन्तु भद्राः।
घृतं दुहाना विश्वतः प्र-पीता,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। य ३४.४०

मंत्र-संख्या ८८ पर अर्थ मौजूद है।

२१७ अनड्वाहम् अन्व्-आ+रभामहे सौरभेयं स्वस्तये।
स न इन्द्र-इव देवेभ्यो, वह्निः सं-तारणो भव। य ३५.१३

सौरभेयम् सुरभि की सन्तान, अनड्वाहम् गाड़ी खींचनेवाले—बैल को स्वस्तये स्वस्ति के लिए अनु-आ-रभामहे हम क्रमशः स्पर्श कररहे हो। नः हमारे सः वह—तुम वह्निः वहनकर्ता—ढोनेवाले, सम्-तारणः तराने वाले भव हो जाओ, इन्द्रः-इव देवेभ्यः जैसे इन्द्र देवों के लिए वाहक, सं-तारक है।

२१८ इन्द्रा नु पूषणा वयं, सख्याय स्वस्तये।
हुवेम वाज-सातये। सा २०२

मंत्र-संख्या ५६ पर अर्थ मौजूद है।

२१९ इन्द्र! त्रि-धातु शरणं, त्रि-वरूथं स्वस्तये।
छर्दिर् यच्छ मघवद्-भ्यश् च,
मह्यं च यावया दिद्युम् एभ्यः। सा २६६
मंत्र-संख्या ५१ पर अर्थ मौजूद है।

२२० त्यम् ऊ षु वाजिनं देव-जूतं, सहो-वानं तरुतारं रथानाम्।
अरिष्ट-नेमिं पृतनाजम् आशुं, स्वस्तये तार्क्ष्यम् इहा हुवेम।
सा ३३२ मंत्र-संख्या १६० पर अर्थ मौजूद है।

२२१ ऋधक् सोम! स्वस्तये, सं-जग्मानो दिवा कवे!।
पवस्व सूर्यो दृशे। सा ६५६ मंत्र-संख्या १४० पर अर्थ मौजूद है।

२२२ एवा नः सोम! परि-षिच्यमान, आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति।
इन्द्रम् आ विश बृहता मदेन, वर्धया वाचं जनया पुरं-धिम्।
सा ८६१ मंत्र-संख्या १४७ पर अर्थ मौजूद है।

२२३ पावमानीः स्वस्त्य्-अयनीः, सु-दुघा हि घृत-श्चुतः।
ऋषिभिः सं-भृतो रसो, ब्राह्मणेष्व् अमृतं हितम्। सा १३००
हि क्यों कि पावमानीः पवित्र करने वालियाँ स्वस्ति-अयनीः स्वस्ति में रमनेवाली, सु-दुघाः सु को दुहनेवाली, घृत-श्चुतः घृत टपकानेवाली होती हो अतः वे ऋषि-भिः ऋषियों द्वारा सम्-भृतः इकट्ठा कियाहुआ रसः रस हो, ब्राह्मणेषु ब्राह्मणों में हितम् रखाहुआ अ-मृतम् अमृत (मृत भाव से रहित) हो।

२२४ पावमानीः! स्वस्त्य्-अयनीस्!, ताभिर् गच्छति नान्दनम्।
पुण्यांश् च भक्षान् भक्षयत्य्, अमृतत्वं च गच्छति। सा १३०३
पावमानीः पवित्र करने वालियाँ स्वस्ति-अयनीः स्वस्ति में रमने वालियाँ। ताभिः उनसे भवत नान्दनम् आनन्द गच्छति पारहा है। पुण्यान् भक्षान् पुण्य भोगों को [illegible] भी भक्षयति भोगरहा है, अ-मृतत्वम् अ-मृत (मृत से रहित) भाव को च

भी गच्छति पारहा है।

२२५ त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने!, त्वां वर्धन्ति मति-भिर् वसिष्ठाः।
त्वे वसु सु-षणनानि सन्तु, यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः।
सा १३०६ मंत्र-संख्या ६६ पर अर्थ मौजूद है।

२२६ सम् उ प्रियो मृज्यते सानो अव्ये, यशस्-तरो यशसां क्षैतो अस्मे।
अभि स्वर धन्वा पूयमानो, यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः।
सा १४०१ मंत्र-संख्या १४५ पर अर्थ मौजूद है।

२२७ वषट् ते विष्णव्! आस आ कृणोमि,
तन् मे जुषस्व शिपि-विष्ट! हव्यम्।
वर्धन्तु त्वा सु-ष्टुतयो गिरो मे,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। सा १६२७
मंत्र-संख्या १३२ पर अर्थ मौजूद है।

२२८ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्ध-श्रवाः, स्वस्ति नः पूषा
विश्व-वेदाः। स्वस्ति नस् ताक्ष्यों अरिष्ट-नेमिः, स्वस्ति
नो बृहस्पतिर्
दधातु। स्वस्ति नो बृहस्पतिर् दधातु। सा १८७५
मंत्र-संख्या ५ पर अर्थ मौजूद है।

२२९ स्वस्ति-दा विशां पतिर्, वृत्र-हा वि-मृधो वशी।
वृषेन्द्रः पुर एतु नः, सोम-पा अभयं-करः। अ १.२१.१
मंत्र-संख्या १८९ पर अर्थ मौजूद है।

२३० ये वो देवाः! पितरो ये च पुत्राः,
स-चेतसो मे शृणुतेदम् उक्तम्।
सर्वेभ्यो वः परि ददाम्य् एतं,

स्वस्त्य् एनं जरसे वहाथ। अ १.३०.२

देवाः! हे देवो! वः तुममें से ये जो पितरः पिता हो च और ये जो पुत्राः पुत्र हो—स-चेतसः समान चित्त वाले तुम लोग मे मेरे इदम् उक्तम् इस कहेहुए को शृणुत सुनो कि 'वः सर्वेभ्यः 'तुम सबके लिए एतम् इसका मैं परि ददामि परि-दान कररहा हूं। एनम् इसे जरसे जरा अवस्था के लिए, स्वस्ति स्वस्ति के साथ, तुम लोग वहाथ' ले जाओ।'

२३१ स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु, स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः। विश्वं सु-भूतं सु-विदत्रं नो अस्तु, ज्योग् एव दृशेम सूर्यम्। अ १.३१.४

स्वस्ति स्वस्ति मात्रे माता के लिए उत और नः हमारे पित्रे पिता के लिए अस्तु होवे। स्वस्ति स्वस्ति गोभ्यः रश्मियों के लिए, जगते जगत् के लिए, पुरुषेभ्यः पुरुषों के लिए होवे। नः हमारा विश्वम् विश्व सु-भूतम् 'सु' जल-वान्, सु-विदत्रम् सु ज्ञान-/धन-वान् अस्तु होवे। सूर्यम् सूर्य को ज्योक् एव चिर काल तक ही दृशेम हमें देखते रहना चाहिए।

२३२;२७४ परीदं वासो अधिथाः स्वस्तये,भूर् गृष्टीनाम् अभिशस्ति-पा उ। शतं च जीव शरदः पुरूची, रायश् च पोषम् उप-संव्ययस्व। अ २.१३.३

इदम् वासः इस वस्त्र को स्वस्तये स्वस्ति के लिए परि अधिथाः तुमने अपना परि-धान—ओढ़ना बनाया है। गृष्टीनाम् प्रसूता गौओं का अभिशस्ति-पाः वध से बचाव करनेवाला उ अभूः तू हो ही गया है। शतम् सौ च बल्कि पुरूचीः बहुत सी शरदः शरद् ऋतुओं तक जीव तू जी, च और रायः सुषमा के पोषम् पोषण को उप-सं-व्ययस्व अपने पास, ठीक से ढक—बचा।

२३३ अदान्यान्त् सोम-पान् मन्यमानो,
यज्ञस्य विद्वान्त् सम्-अये न धीरः।
यद् एनश् चकृ-वान् बद्ध एष,
तं विश्व-कर्मन्! प्र मुञ्चा स्वस्तये। अ २.३५.३

सोम-पान् सोम-पायी देवों को अ-दान्यान् मन्यमानः अ-दानयोग्य माननेवाला, यज्ञस्य विद्वान् यज्ञ का ज्ञाता होने पर भी सम्-अये समर में न धीरः अ-धीर—यत् जो कि एषः बद्धः इस बंधेहुए ने एनः पाप चकृवान् किया था, अतः तम् उसे, विश्व-कर्मन्! हे विश्व-कृतिमय! हे विश्वदेवमय! स्वस्तये स्वस्ति के लिए प्र मुञ्च तुम बिलकुल मुक्त कर दो।

२३४ अश्वा-वतीर् गो-मतीर् न उषासो,
वीर-वतीः सदम् उच्छन्तु भद्राः।
घृतं दुहाना विश्वतः प्र-पीता,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। अ ३.१६.७

मंत्र-संख्या ८८ पर अर्थ मौजूद है।

२३५ अग्ने! प्रेहि प्रथमो देवतानां, चक्षुर् देवानाम् उत मानुषाणाम्।
इयक्षमाणा भृगु-भिः स-जोषाः, स्वर् यन्तु यजमानाः स्वस्ति।
अ ४.१४.५ मंत्र-संख्या २०५ पर अर्थ मौजूद है।

२३६ स नः सिन्धुम्-इव नावा,ति पर्षा स्वस्तये। अप नः शोशुचद् अघम्। अ ४.३३.८ मंत्र-संख्या ७ पर अर्थ मौजूद है।

२३७ उत पुत्रः पितरं क्षत्रम् ईडे, ज्येष्ठं मर्यादम् अह्वयन्त् स्वस्तये।
दर्शन् नु ता वरुण! यास् ते वि-ष्ठा, आ-वर्व्रततः कृणवो वपूंषि। अ ५.१.८

उत और पितरम् पिता से क्षत्रम् क्षत्र को पाने की पुत्रः पुत्र मो ईडे प्रबल इच्छा कररहा हूं। ज्येष्ठम् मर्यादम् ज्येष्ठ मर्यादावान् को स्वस्तये स्वस्ति के लिए अह्वयन् उन्होंने पुकारा है। वरुण! हे वरुण! याः जो ते तेरी वि-स्थाः विशेष/विविध स्थितियां हो ताः उन्हें नु अब दर्शन् वे देखें। आ-वर्व्रततः ख़ूब आ-वृत्तियां करनेवाले के वपूंषि रूपों को कृणवः तुमने बनाया है।

२३८ अस्मै ग्रामाय प्र-दिशश् चतस्र,
ऊर्जं सु-भूतं स्वस्ति सविता नः कृणोतु।
अशत्र्व् इन्द्रो अभयं नः कृणोत्व्,
अन्यत्र राज्ञाम् अभि यातु मन्युः। अ ६.४०.२

अस्मै ग्रामाय इस ग्राम के लिए चतस्रः प्र-दिशः चार प्र-दिशाओं को—ऊर्जम् अन्न को, सु-भूतम् सु-जल को, स्वस्ति स्वस्ति को सविता सविता नः हमारे लिए कृणोतु करे। इन्द्रः इन्द्र नः हमारे लिए अ-शत्रु शत्रु-रहितता को, अ-भयम् भय-हीनता को कृणोतु करे। राज्ञाम् राजाओं का मन्युः मन्यु अन्यत्र अन्यत्र अभि यातु अभि-गमन करे।

२३९ श्येनोसि गायत्र-च्छन्दा, अनु त्वा रभे।
स्वस्ति मा सं वहा,स्य यज्ञस्योद्-ऋचि स्वाहा। अ ६.४८.१

गायत्र-छन्दाः 'गायत्र' छन्द वाला श्येनः बाज़ असि है तू। त्वा तेरे अनु पश्चात् आ रभे मो ग्रहण कररहा हूं। अस्य यज्ञस्य इस यज्ञ की उत्-ऋचि पूर्ति पर मा मुझे स्वस्ति स्वस्ति तक सम् वह तुम ले जाओ। यह स्वा मेरी अन्तर्वाणी ने आह कहा है।

२४० ऋभुर् असि जगच्-छन्दा, अनु त्वा रभे।

स्वस्ति मा सं वहा,स्य यज्ञस्योद्-ऋचि स्वाहा। अ ६.४८.२
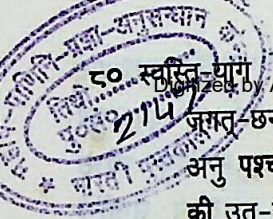
जगत्-छन्दाः 'जगत्' छन्द वाला ऋभुः ऋभु असि है तू। त्वा तेरे अनु पश्चात् आ रभे मैं ग्रहण कररहा हूं। अस्य यज्ञस्य इस यज्ञ की उत्-ऋचि पूर्ति पर मा मुझे स्वस्ति स्वस्ति तक सम् वह तुम ले जाओ। यह स्वा मेरी अन्तर्वाणी ने आह कहा है।

२४१ वृषासि त्रि+ष्टुप्-छन्दा, अनु त्वा रभे।
स्वस्ति मा सं वहा,स्य यज्ञस्योद्-ऋचि स्वाहा। अ ६.४८.३

त्रि-स्तुप्-छन्दाः 'त्रि-ष्टुप्' छन्द वाला वृषा कृपालु—साण्ड असि है तू। त्वा तेरे अनु पश्चात् आ रभे मो ग्रहण कररहा हूं। अस्य यज्ञस्य इस यज्ञ की उत्-ऋचि पूर्ति पर मा मुझे स्वस्ति स्वस्ति तक सम् वह तुम ले जाओ। यह स्वा मेरी अन्तर्वाणी ने आह कहा है।

२४२ परि दद्म इन्द्रस्य बाहू, समन्तं त्रातुस् त्रायतां नः।
देव! सवितः! सोम! राजन्त्!, सु-मनसं मा कृणु स्वस्तये।
अ ६.९९.३

इन्द्रस्य बाहू इन्द्र की दोनों बाहुओं को परि दद्मः हम सब ओर पहुंचारहे—दान कररहे हैं। त्रातुः रक्षक का सम्-अन्तम् पक्का-परकोटा नः हमें त्रायताम् बचाए। देव! हे देव! सवितः! हे सविता!, राजन् हे राजा! सोम! हे सोम! स्वस्तये स्वस्ति के लिए मा मुझे सु-मनसम् सु मन वाला कृणु तुम कर दो।

२४३ एतं सध-स्थाः! परि वो ददामि,
यं शेव-धिम् आ-वहाज् जात-वेदाः।
अन्व्-आ+गन्ता यजमानः स्वस्ति,
तं स्म जानीत परमे व्य्-ओमन्। अ ६.१२३.१

सध-स्थाः! हे साथ डटे—खड़े रहनेवालो! एतम् इसे वः तुम्हारे लिए परि सब ओर ददामि मो बांटरहा हूँ, यम् जिस शेव-धिम् नि-धि को कि जात-वेदाः सब परिणतियों का ज्ञाता

आ-वहात् लारहा हैं। यजमानः यजमान स्वस्ति स्वस्ति के अनु-आ-गन्ता पीछे चला आए। तम् उसे परमे वि-ओमन् परम विराट्-लोक में जानीत स्म तुमने पहचान लिया है।

२४४ जानीत स्मैनं परमे व्यू-ओमन्,
देवाः! सध-स्था! विद लोकम् अत्र।
अन्वू-आ+गन्ता यजमानः स्वस्ती-,
ष्टापूर्तं स्म कृणुताविर् अस्मै। अ ६.१२३.२

एनम् इसे परमे वि-ओमन् परम विराट्-लोक में जानीत स्म तुमने पहचान लिया है। देवाः! हे देवो! सध-स्थाः हे साथ डटे—खड़े रहनेवालो! अत्र यहां लोकम् लोक को विद तुम जान लो। यजमानः यजमान स्वस्ति स्वस्ति के अनु-आ-गन्ता पीछे चला आए। अस्मै इसके लिए इष्ट-आ-पूर्तम् इष्टि-और-आ-पूर्ति को आविः कृणुत स्म तुम आविष्कृत—प्रकट करो।

२४५ सु-त्रामाणं पृथिवीं द्याम् अन्-एहसं,
सु-शर्माणम् अदितिं सु-प्र+णीतिम्।
दैवीं नावं स्वू-अरित्राम् अन्+आगसो,
अ-स्रवन्तीम् आ रुहेमा स्वस्तये। अ ७.७.१

मंत्र-संख्या १७२ पर अर्थ मौजूद है।

२४६ पूषेमा आशा अनु वेद सर्वाः, सो अस्माँ अभय-तमेन नेषत्।
स्वस्ति-दा आ+घृणिः सर्व-वीरो,प्र-युच्छन् पुर एतु प्र-जानन्।
अ ७.६.२ मंत्र-संख्या १५० पर अर्थ मौजूद है।

२४७ वेदः स्वस्तिर् द्रु-घणः स्वस्तिः, परशुर् वेदिः परशुर् नः स्वस्ति।
हविष्-कृतो यज्ञिया यज्ञ-कामास्,

ते देवासो यज्ञम् इमं जुषन्ताम्। अ ७.२८.१

वेदः उपलब्धि—कुशमुष्टि स्वस्तिः स्वस्ति है, द्रु-घनः कुठार स्वस्तिः स्वस्ति है, परशुः वेदिः फरसा वेदि है, परशुः फरसा नः हमारे लिए स्वस्तिः स्वस्ति है। हविः-कृतः हवि को बनानेवाले, यज्ञियाः यजनीय, यज्ञ-कामाः यज्ञ-प्रेमी, ते देवासः वे देव इमम् यज्ञम् इस यज्ञ को जुषन्ताम् प्रेम के साथ सेवन करें।

२४८ मेमं प्राणो हासीन्, मो अपानोवहाय परा गात्।
सप्तर्षि-भ्य एनं परि ददामि,
त एनं स्वस्ति जरसे वहन्तु। अ ७.५३.४

इमम् इसे प्राणः प्राण मा हासीत् न त्यागे। मो न अप-आनः अपान इसे अव-हाय छोड़कर परा गात् परे जाए। एनम् इसे सप्त-ऋषि-भ्यः सात-ऋषियों के लिए परि ददामि मो सर्वत्र पहुंचारहा हूं। ते एनम् वे इसे जरसे जरा-अवस्था के लिए स्वस्ति स्वस्ति के साथ वहन्तु ले जाएं।

२४९ त्यम् ऊ षु वाजिनं देव-जूतं, सहो-वानं तरुतारं रथानाम्।
अरिष्ट-नेमिं पृतना-जिम् आशुं, स्वस्तये तार्क्ष्यम् इहा हुवेम।
अ ७.८५.१ मंत्र-संख्या १६० पर अर्थ मौजूद है।

२५० त्रातारम् इन्द्रम् अवितारम् इन्द्रं, हवे-हवे सु-हवं शूरम् इन्द्रम्।
हुवे नु शक्रं पुरु-हूतम् इन्द्रं, स्वस्ति न इन्द्रो मघ-वान् कृणोतु। अ ७.८६.१ मंत्र-संख्या ५३ पर अर्थ मौजूद है।

२५१ सम् इन्द्र! नो मनसा नेष गोभिः,
सं सूरि-भिर् हरि-वन्त्! सं स्वस्त्या।

सं ब्रह्मणा देव-हितं यद् अस्ति,

सं देवानां सु-मतौ यज्ञियानाम्। अ ७.९७.२

मंत्र-संख्या ३४ पर अर्थ मौजूद है।

२५२ उद् एनं भगो अग्रभीद्, उद् एनं सोमो अंशु-मान्।

उद् एनं मरुतो देवा, उद् इन्द्राग्नी स्वस्तये। अ ८.१.२

एनम् इसे भगः भग देव ने उत् अग्रभीत् ऊपर थाम लिया है। एनम् इसे अंशु-मान् सोमः बालियों वाले सोम ने उत् ऊपर थामा है, एनम् इसे मरुतः देवाः मरुत देवों ने उत् ऊपर थामा है। इन्द्राग्नी इन्द्र-अग्नि ने स्वस्तये स्वस्ति के लिए इसे उत् ऊपर थामा है।

२५३ मा त्वा जम्भः सं-हनुर् मा तमो विदन्,

मा जिह्वा बर्हिः प्र-मयुः कथा स्याः।

उत् त्वादित्या वसवो भरन्तू,द् इन्द्राग्नी स्वस्तये। अ ८.१.१६

मा न त्वा तुझे सम्-हनुः ठोड़ी भींचनेवाला जम्भः जबड़ा, मा न तमः रात्रि विदत् खोज पाए, मा न जिह्वा जिह्वा—बर्हिः कुश। तू प्र-मयुः ख़ूब मार-काट मचानेवाला कथा आ स्याः कैसे हो सकता है? त्वा तुझे आदित्याः आदित्य, वसवः वसु, इन्द्राग्नी इन्द्र-अग्नि स्वस्तये स्वस्ति के लिए उत् भरन्तु ख़ूब भर दें।

२५४ कृणोमि ते प्राणापानौ जरां, मृत्युं दीर्घम् आयुः स्वस्ति।

वैवस्वतेन प्र-हितान् यम-दूताँश्, चरतोप सेधामि सर्वान्।

अ ८.२.११

ते तेरे लिए प्राणापानौ प्राण-अपान को, जराम् जरा-अवस्था को, मृत्युम् मृत्यु को, दीर्घम् आयुः दीर्घ जीवन-काल को, स्वस्तिः

स्वस्ति को कृणोमि मैं सम्पन्न कररहा हूं। वैवस्वतेन विवस्वान् **के पुत्र द्वारा** प्र-हितान् **प्रेषित** यम-दूतान् **यम-दूतों को**—चरतः **इधर-उधर विचरण कररहे** सर्वान् **सबको** अप सेधामि **मो परे खदेड़ रहा हूं।**

२५५ स्वस्ति-दा विशां पतिर् वृत्र-हा वि-मृधो वशी। इन्द्रो बध्नातु ते मणिं जिगीवाँ, अपरा-जितः सोम-पा अभयं-करो वृषा। स त्वा रक्षतु सर्वतो, दिवा नक्तं च विश्वतः। अ ८.५.२२

स्वस्ति-दाः **स्वस्ति-दाता,** विशाम् पतिः **प्रजा-पति,** वृत्र-हा **वृत्र-हन्ता,** वि-मृधः **विविध प्रकार से युद्ध करनेवाला,** वशी **नियन्त्रक,** जिगीवान् **जयस्वभाव,** अ-पराजितः **अ-पराजित,** सोम-पाः **सोम को पीनेवाला,** अभयम्-करः **भय-रहित करनेवाला,** वृषा **कृपालु** इन्द्रः **इन्द्र** ते मणिम् **तेरी मणि को तेरे** बध्नातु **बांधे।** सः **वह** सर्वतः **सब ओर—बाहर से** त्वा **तुझे** रक्षतु **बचाए,** विश्वतः **विश्व ओर—अन्दर से** दिवा **दिन में** च **और** नक्तम् **रात में बचाए।**

२५६ एतम् इध्मं सम्-आ+हितं जुषाणो, अग्ने! प्रति हर्य होमैः। तस्मिन् विदेम सु-मतिं स्वस्ति, प्र-जां चक्षुः पशून्त् सम्-इद्धे जात-वेदसि ब्रह्मणा। अ १०.६.३५

एतम् सम्-आ-हितम् इध्मम् **इस समर्पित ईंधन को** जुषाणः **स-प्रेम सेवन करनेहारे तुम,** अग्ने! **हे अग्नि!, इसे** होमैः **होमों द्वारा** प्रति हर्य **विपरीत—स्वर्ग की दिशा में ले जाओ।** ब्रह्मणा **उदक/अन्न/धन द्वारा** तस्मिन् जात-वेदसि सम्-इद्धे **उस जात-प्रज्ञ के ख़ूब धधक चुकने पर** सु-मतिम् **सु-मति को,** स्वस्ति **स्वस्ति को,** प्र-जाम् **प्र-जा को,** चक्षुः **चक्षु को** विदेम **हमें पा लेना चाहिए।**

२५७ नमस् ते घोषिणीभ्यो नमस् ते केशिनीभ्यः।

नमो नमस्-कृताभ्यो नमः सं-भुञ्जतीभ्यः।

नमस् ते देव! सेनाभ्यः, स्वस्ति नो अभयं च नः।

अ ११.२.३१

ते तेरी घोषिणीभ्यः घोषवती सेनाओं के लिए नमः अन्न/वज्र, ते तेरी केशिनीभ्यः केशवती सेनाओं के लिए नमः अन्न/वज्र। नमः-कृताभ्यः अन्न-/वज्र-संपन्न सेनाओं के लिए नमः अन्न/वज्र। सम्-भुञ्जतीभ्यः ख़ूब तृप्त सेनाओं के लिए नमः अन्न/वज्र। देव! हे देव! ते तेरी सेनाभ्यः सेनाओं के लिए नमः अन्न/वज्र। नः हमारे लिए स्वस्ति स्वस्ति होवे च और नः हमारे लिए अभयम् भय-रहितता होवे।

२५८ मा नः पश्चान् मा पुरस्तान्, नुदिष्ठा मोत्तराद् अधराद् उत।

स्वस्ति भूमे! नो भव, मा विदन् परि-पन्थिनो,

वरीयो यावया वधम्। अ १२.१.३२

मा न नः हमें पश्चात् पीछे तुम धकेलो मा न पुरस्तात् आगे, मा न उत्तरात् ऊपर उत और अधरात् नीचे नुदिष्ठाः तुम धकेलो। भूमे! हे भूमि! नः हमारे लिए स्वस्ति स्वस्ति भव तुम हो जाओ। परि-पन्थिनः बटमार मा न विदन् पकड़ें किसी को। वधम् हिंसा को वरीयः बहुत दूर यवय रखो।

२५९ सम् इन्धते सं-कसुकं स्वस्तये, शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः।

जहाति रिप्रम् अत्य् एन एति,

सम्-इद्धो अग्निः सु-पुना पुनाति। अ १२.२.११

शुद्धाः शुद्ध, शुचयः उजले, पावकाः पावनकर्ता भवन्तः होतेहुए स्वस्तये स्वस्ति के लिए सम्-कसुकम् भक्षक अग्नि को सम् इन्धते वे ख़ूब धधकारहे हो। रिप्रम् बुराई को जहाति वह छोड़रहा है। एनः पाप को अति एति वह लांघरहा है। सम्-इद्धः ख़ूब धधकाहुआ अग्निः अग्नि सु-पुना 'सु' पौनी द्वारा पुनाति पावन कररहा है।

२६० मा त्वा दभन् परि-यान्तम् आजिं,
स्वस्ति दुर्-गाँ अति याहि शीभम्।
दिवं च सूर्य! पृथिवीं च देवीम्,
अहो-रात्रे वि-मिमानो यद् एषि। अ १३.२.५

सूर्य! हे सूर्य! दिवम् द्यौ को च भी, देवीम् पृथिवीम् देवी पृथिवी को च भी, अहोरात्रे दिन-रात को भी वि-मिमानः विभिन्न प्रकारों से मापतेहुए यत् जो कि एषि तुम चलरहे हो तो आजिम् परि-यान्तम् प्रतिस्पर्धा में आरहे त्वा तुझे मा दभन् वे न दबाएँ। दुः-गान् कठिनाइयों को स्वस्ति स्वस्ति-पूर्वक, शीभम् शीघ्र अति याहि तुम लांघकर आगे निकल जाओ।

२६१ स्वस्ति ते सूर्य! चरसे रथाय,
येनोभाव् अन्तौ परि-यासि सद्यः।
यं ते वहन्ति हरितो वहिष्ठाः,
शतम् अश्वा यदि वा सप्त बह्वीः। अ १३.२.६

सूर्य! हे सूर्य! चरसे चलने की ख़ातिर, ते तेरे रथाय रथ के लिए स्वस्ति स्वस्ति है, येन जिसके द्वारा उभौ अन्तौ दोनो सिरों—ओर-छोर तक सद्यः झट-पट परि-यासि तुम सर्वत्र पहुंचरहे हो, यम् जिसे ते तेरे वहिष्ठाः वाहक-श्रेष्ठ

हरितः घोड़े—शतम् अश्वाः सौ अश्व यदि वा अथ वा सप्त सात अथ वा बह्वीः बहुत सी घोड़ियाँ—वहन्ति खींचरहे हो।

२६२ एमं पन्थाम् अरुक्षाम, सु-गं स्वस्ति-वाहनम्।
यस्मिन् वीरो न रिष्यत्य्, अन्येषां विन्दते वसु। अ १४.२.८

इमम् पन्थाम् इस पथ पर आ अरुक्षाम हमने आ-रोहण किया है जो सु-गम् सु-गम है, स्वस्ति-वाहनम् स्वस्ति को लानेवाला है, यस्मिन् जिस पर वीरः वीर को न रिष्यति कोई ख़तरा नहीं है बल्कि अन्येषाम् अन्यों के वसु धन/रात्रि को विन्दते वह पा लेता है।

२६३ स्वस्त्य् अद्योषसो दोषसश् च,
सर्व आपः! सर्व-गणो अशीय। अ १६.४.६

स्वस्ति स्वस्ति-पूर्वक अद्य आज उषसः उषाओं को च और दोषसः रात्रियों को, आपः! हे जलो!, सर्वः सम्पूर्ण, सर्व-गणः अपने सम्पूर्ण गण के साथ, अशीय मो प्राप्त कर लूं।

२६४ त्वं न इन्द्रोति-भिः शिवाभिः शं-तमो भव। आ-रोहंस् त्रि-दिवं दिवो गृणानः सोम-पीतये, प्रिय-धामा स्वस्तये तवेद् विष्णो! बहु-धा वीर्याणि। त्वं नः पृणीहि पशु-भिर् विश्व-रूपैः, सु-धायां मा धेहि परमे व्य्-ओमन्।
अ १७.१.१०

इन्द्र! हे इन्द्र! शिवाभिः ऊति-भिः शिव रक्षाओं द्वारा त्वम् तुम नः हमारे लिए शम्-तमः भव बिलकुल शान्त हो जाओ। दिवः द्यौ के त्रि-दिवम् तीनों लघु द्यु-खंडों पर आ-रोहन् आ-रोहण करतेहुए, सोम-पीतये सोम पान वाले देव के लिए गृणानः स्तवन करतेहुए, स्वस्तये स्वस्ति के लिए प्रिय-धामा प्रिय स्थान/तेज

वाले तुम हो। विष्णो! हे विष्णु! तव इत् तेरे ही वीर्याणि वीर-कर्म बहु-धा बहु-विध होते हो। विश्व-रूपैः पशु-भिः 'विश्व' रूपों वाले पशुओं से त्वम् तुम नः हमें पृणीहि पूर्ण कर दो। परमे वि-ओमन् परम विराट्-लोक में मा मुझे सु-धायाम् 'सु' स्थिति पर धेहि स्थिर करो।

२६५ आदित्य! नावम् आरुक्षः, शतारित्रां स्वस्तये।
अहर् मात्य् अपीपरो, रात्रिं सत्राति पारय। अ १७.१.२५

आदित्य! हे आदित्य! शत-अरित्राम् सौ चप्पुओं द्वारा चलाई जाने वाली नावम् नौका पर स्वस्तये स्वस्ति के लिए आ अरुक्षः तुम आ-रूढ हुए हो। अहः दिन को मा मुझे अति अपीपरः तुमने अति-पार करवा दिया है, रात्रिम् रात्रि को भी सत्रा लगे-हाथ अति पारय तुम अति-पार करवा दो।

२६६ सूर्य! नावम् आरुक्षः, शतारित्रां स्वस्तये।
रात्रिं मात्य् अपीपरो,हः सत्राति पारय। अ १७.१.२६

सूर्य! हे सूर्य! शत-अरित्राम् सौ चप्पुओं द्वारा चलाई जाने वाली नावम् नौका पर स्वस्तये स्वस्ति के लिए आ अरुक्षः तुम आ-रूढ हुए हो। रात्रिम् रात्रि को मा मुझे अति अपीपरः तुमने अति-पार करवा दिया है, अहः दिन को भी सत्रा लगे-हाथ अति पारय तुम अति-पार करवा दो।

२६७ यौ ते श्वानौ यम! रक्षितारौ,
चतुर्-अक्षौ पथि-षदी नृ-चक्षसा।
ताभ्यां राजन्! परि धेह्य् एनं,
स्वस्त्य् अस्मा अन्+अमीवं च धेहि। अ १८.२.१२

मंत्र-संख्या १४६ पर अर्थ मौजूद है।

२६८ कोशं दुहन्ति कलशं चतुर्-बिलम्,

इडां धेनुं मधु-मतीं स्वस्तये।
ऊर्जं मदन्तीम् अदितिं जनेष्व्,
अग्ने! मा हिंसीः परमे व्यू-ओमन्। अ १८.४.३०

दोहन करनेवाले स्वस्तये स्वस्ति के लिए कोशम् कोश को—चतुः-बिलम् कलशम् चार बिलों वाले कलश को—इडाम् पृथिवी/वाणी/अन्न/गौ को—मधु-मतीम् धेनुम् मधु-मती धेनु को दुहन्ति दुहा करते हो। जनेषु जनों में से अदितिम् अदिति को—ऊर्जम् मदन्तीम् अन्न की अर्चना करनेवाली को, अग्ने! हे अग्नि!, परमे वि-ओमन् परम विराट्-लोक में मा हिंसीः तुम मत मारो।

२६६ स्वस्तितं मे सु-प्रातः सु-सायं,
सु-दिवं सु-मृगं सु-शकुनं मे अस्तु।
सु-हवम् अग्ने! स्वस्त्य् अमर्त्यं,
गत्वा पुनर् आयाभि-नन्दन्। अ १६.८.३

मे मेरे लिए सु-अस्तितम् अस्त काल सु हो, सु-प्रातः प्रातः सु हो, सु-सायम् सायं सु हो। मे मेरे लिए सु-दिवम् दिन सु हो, सु-मृगम् पशु-वर्ग सु हो, सु-शकुनम् अस्तु पक्षि-गण सु हो। सु-हवम् 'सु' पुकार के साथ, अग्ने! हे अग्नि!, स्वस्ति स्वस्ति-पूर्वक अ-मर्त्यम् गत्वा अ-मर्त्य स्थिति को पाकर, अभि-नन्दन् अभि-नन्दित करते हों पुनः पुनः आय तुम आना।

२७० स्वस्ति नो अस्त्व् अ-भयं नो अस्तु,
नमोहोरात्राभ्याम् अस्तु। अ १६.८.७

स्वस्ति स्वस्ति नः हमारे लिए अस्तु हो, अ-भयम् भय-रहितता नः हमारे लिए अस्तु हो, नमः अन्न/वज्र अहो-रात्राभ्याम्

दिन-रात के लिए अस्तु हो।

२७१ ब्रह्म प्रजा-पतिर् धाता लोका, वेदाः सप्त-ऋषयोग्नयः।
तैर् मे कृतं स्वस्त्य्-अयनम् इन्द्रो मे शर्म यच्छतु, ब्रह्मा मे शर्म यच्छतु। विश्वे मे देवाः शर्म यच्छन्तु, सर्वे मे देवाः शर्म यच्छन्तु। अ १६.६.१२

ब्रह्म जल/अन्न/धन, प्रजा-पतिः प्र-जाओं का रक्षक, धाता धाता, लोकाः लोक, वेदाः वेद, सप्त-ऋषयः सात-ऋषि, अग्नयः अग्नि—तैः उन्होंने मे मेरे लिए स्वस्ति-अयनम् स्वस्ति-गमन कृतम् सम्पन्न किया है। इन्द्रः इन्द्र मे मेरे लिए शर्म गृह/सुख यच्छतु देवे। ब्रह्मा ब्रह्मा मे मेरे लिए शर्म गृह/सुख यच्छतु देवे। विश्वे देवाः 'विश्व' नामक आन्तरिक देव मे मेरे लिए शर्म गृह/सुख यच्छन्तु देवों। सर्वे देवाः 'सर्व' नामक बाह्य देव मे मेरे लिए शर्म गृह/सुख यच्छन्तु देवें।

२७२ ये देवानाम् ऋत्विजो यज्ञियासो, मनोर् यजत्रा अमृता ऋत-ज्ञाः।
ते नो रासन्ताम् उरु-गायम् अद्य,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। अ १६.११.५

मंत्र-संख्या ८२ पर अर्थ मौजूद है।

२७३ उरुं नो लोकम् अनु नेषि विद्वान्त्,
स्वर् यज् ज्योतिर् अभयं स्वस्ति।
उग्रा त इन्द्र! स्थविरस्य बाहू, उप क्षयेम शरणा बृहन्ता।
अ १६.१५.४

मंत्र-संख्या ५२ पर अर्थ मौजूद है।

२७४ परीदं वासो अधिथाः स्वस्तये-,
भूर् वापीनाम् अभिशस्ति-पा उ।
शतं च जीव शरदः पुरूचीर्,
वसूनि चारुर् वि भजासि जीवन्। अ १६.२४.६

मंत्र-संख्या २३२ पर अर्थ मौजूद है।

२७५ अग्निर् माग्निनावतु प्राणायापानायायुषे,
वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सु-भूतये स्वाहा। अ १६.४५.६

अग्निः अग्नि मा मुझे अग्निना अग्नि द्वारा अवतु बचाए प्राणाय प्राण के लिए, अप-आनाय अपान के लिए, आयुषे आयु के लिए, वर्चसे अन्न के लिए, ओजसे जल/बल के लिए, तेजसे जल/ज्वलनशीलता के लिए, स्वस्तये स्वस्ति के लिए, सु-भूतये सु-जलत्व के लिए। यह स्वा मेरी अन्तर्वाणी ने आह कहा है।

२७६ इन्द्रो मेन्द्रियेणावतु प्राणायापानायायुषे, वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सु-भूतये स्वाहा। अ १६.४५.७

इन्द्रः इन्द्र मा मुझे इन्द्रियेण धन द्वारा अवतु बचाए प्राणाय प्राण के लिए, अप-आनाय अपान के लिए, आयुषे आयु के लिए, वर्चसे अन्न के लिए, ओजसे जल/बल के लिए, तेजसे जल/ज्वलनशीलता के लिए, स्वस्तये स्वस्ति के लिए, सू-भूतये सु-जलत्व के लिए। यह स्वा मेरी अन्तर्वाणी ने आह कहा है।

२७७ सोमो मा सौम्येनावतु प्राणायापानायायुषे, वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सु-भूतये स्वाहा। अ १६.४५.८

सोमः सोम सौम्येन सोमत्व द्वारा अवतु बचाए प्राणाय प्राण के लि़ए, अप-आनाय अपान के लिए, आयुषे आयु के लिए, वर्चसे अन्न के लिए, ओजसे जल/बल के लिए, तेजसे जल/ज्वलनशीलता के लिए, स्वस्तये स्वस्ति के लिए, सु-भूतये सु-जलत्व के लिए। यह स्वा मेरी अन्तर्वाणी ने आह कहा है।

२७८ भगो मा भगेनावतु प्राणायापानायायुषे, वर्चस ओजसें तेजसे स्वस्तये सु-भूतये स्वाहा। अ १६.४५.६

भगः भग मा मुझे भगेन भगत्व—स्वयं द्वारा अवतु बचाए प्राणाय प्राण के लिए, अप-आनाय अपान के लिए, आयुषे आयु के लिए, वर्चसे अन्न के लिए, ओजसे जल/बल के लिए, तेजसे जल/ज्वलनशीलता के लिए, स्वस्तये स्वस्ति के लिए, सु-भूतये सु-जलत्व के लिए। यह स्वा मेरी अन्तर्वाणी ने आह कहा है।

२७९ मरुतो मा गणैर् अवन्तु प्राणायापानायायुषे, वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सु-भूतये स्वाहा। अ १९.४५.१०

मरुतः मरुत मा मुझे गणैः गणों द्वारा अवन्तु बचाएँ प्राणाय प्राण के लिए, अप-आनाय अपान के लिए, ओजसे जल/बल के लिए, तेजसे जल/ज्वलनशीलता के लिए, स्वस्तये स्वस्ति के लिए, सु-भूतये सु-जलत्व के लिए। यह स्वा मेरी अन्तर्वाणी ने आह कहा है।

२८० एवेद् इन्द्रं वृषणं वज्र-बाहुं,
वसिष्ठासो अभ्य् अर्चन्त्य् अर्कैः।
स नः स्तुतो वीर-वद् धातु गो-मद्,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। अ २०.१२.६

मंत्र-संख्या ७३ पर अर्थ मौजूद है।

२८१ बृहस्पते! युवम् इन्द्रश् च वस्वो,
दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य।
धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद्,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। अ २०.१७.१२

मंत्र-संख्या १३१ पर अर्थ मौजूद है।

२८२ आ सं-यतम् इन्द्र! णः स्वस्तिं,
शत्रु-तूर्याय बृहतीम् अ-मृध्राम्।

यया दासान्य् आर्याणि वृत्रा करो,

वज्रिन्त्! सु-तुका नाहुषाणि। अ २०.३६.१०

मंत्र-संख्या ५० पर अर्थ मौजूद है।

२८३ नू इन्द्र! शूर! स्तवमान ऊती,

ब्रह्म-जूतस् तन्वा वावृधस्व।

उप नो वाजान् मिमीह्य् उप स्तीन्,

यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। अ २०.३७.११

मंत्र-संख्या ६६ पर अर्थ मौजूद है।

२८४ स नः पप्रिः पारयाति, स्वस्ति नावा पुरु-हूतः।

इन्द्रो विश्वा अति द्विषः। अ २०.४६.२

मंत्र-संख्या १३५ पर अर्थ मौजूद है।

२८५ इन्द्र! त्रि-धातु शरणं, त्रि-वरूथं स्वस्ति-मत्।

छर्दिर् यच्छ मघवद्-भ्यश् च,

मह्यं च यावया दिद्युम् एभ्यः। अ २०.८३.१

मंत्र-संख्या ५१ पर अर्थ मौजूद है।

२८६ बृहस्पते! युवम् इन्द्रश् च वस्वो, दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य।

धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद्, यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः।

अ २०.८७.७ मंत्र-संख्या १३१ पर अर्थ मौजूद है।

२८७ आ तू सु-शिप्र! दं-पते! रथं तिष्ठा हिरण्ययम्।

अध द्युक्षं सचेवहि सहस्र-पादम्,

अरुषं स्वस्ति-गाम् अन+एहसम्। अ २०.९२.१३

मंत्र-संख्या १३६ पर अर्थ मौजूद है।

भूर् भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि।

धियो यो नः प्र-चोदयात्। य ३६.३

'शम्'-आ-हुतियां

२८८/१ आ त्वा विशन्त्व् आशवः, सोमास इन्द्र! गिर्वणः!।
शं ते सन्तु प्र-चेतसे। ऋ १.५.७

आशवः तीव्र प्रवाह वाले सोमासः सोम त्वा तुझमें आ विशन्तु प्र-वेश करें; इन्द्र! हे इन्द्र! गिर्वणः हे वाणी-रूप दासी वाले! प्र-चेतसे ते उत्कृष्ट चेतना वाले तेरे लिए शम् सन्तु वे शान्ति बन जाएं।

२८९/२ गाथ-पतिं मेध-पतिं, रुद्रं जलाष-भेषजम्।
तच् छं-योः सुम्नम् ईमहे। ऋ १.४३.४

गाथ-पतिम् वाग्-रक्षक, मेध-पतिम् मेधावी/यज्ञ के रक्षक, जलाष-भेषजम् प्राणियों द्वारा इच्छित ओषधि रूप रुद्रम् रुद्र से शम्-योः शांति-और-मुक्ति की सुम्नम् सुमनस्कता को ईमहे हम मांगरहे हो।

२९०/३ शं नः करत्य् अर्वते, सु-गं मेषाय मेष्ये। नृ-भ्यो नारि-भ्यो गवे।
ऋ १.४३.६

रुद्र नः हमारे लिए, अर्वते अश्व के लिए, मेषाय भेड़ के लिए, मेष्ये भेड़ी के लिए, नृ-भ्यः नरों के लिए, नारि-भ्यः नारियों के लिए, गवे गौ—पृथिवी/द्यौ/आदित्य/वाक्/स्तोता के लिए शम् शांति, सु-गम् सु-गमता करति कररहा है।

२९१;३८१;शं नो मित्रः शं वरुणः, शं नो भवत्व् अर्यमा।
४१८/४ शं न इन्द्रो बृहस्पतिः, शं नो विष्णुर् उरु-क्रमः।
ऋ १.९०.९

नः हमारे लिए मित्रः मित्र देव शम् शांति बन जाए। वरुणः वरुण शम् शांति हो जाए। नः हमारे लिए अर्यमा अर्यमा शम् भवतु शांति बने। नः हमारे लिए इन्द्रः इन्द्र शम् शांति हो, बृहस्-पतिः बृहस्-पति शांति होवे। उरु-क्रमः विष्णुः सर्वत्र पहुंच वाला विष्णु नः हमारे लिए शम् शांति बने।

२६२/५ अग्नीषोमा! हविषः प्र-स्थितस्य, वीतं हर्यतं वृषणा जुषेथाम्।
सु-शर्माणा स्व्-अवसा हि भूतम्,
अथा धत्तं यजमानाय शं योः। ऋ १.९३.७

अग्नि-सोमा! हे अग्नि-और-सोम! तुम दोनों प्र-स्थितस्य भली-भांति रखीगई हविषः हवि का वीतम् भोग करो। हर्यतम् कामना करो। वृषणा! हे वर्षको! जुषेथाम् तुम प्रेम से भर जाओ। हि क्यों कि तुम दोनों सु-शर्माणा मंगलकारी सुख वाले, सु-अवसा कल्याणकारी रक्षा वाले भूतम् हो जाओ; अथ फिर यजमानाय यज्ञकर्त्ता के लिए शम् शांति को, योः अर्थ-काम से निवृत्ति को धत्तम् तुम दोनों धारण करो।

२६३/६ बृहस्पते! सदम् इन् नः सु-गं कृधि,
शं योर् यत् ते मनुर्-हितं तद् ईमहे ।
रथं न दुर्-गाद् वसवः! सु-दानवो!,
विश्वस्मान् नो अंहसो निष् पिपर्तन। ऋ १.१०६.५

बृहस्पते! हे महान् की लाज रखनेवाले! तुम नः हमारी सु-गम् सु-गमता सदम् इत् सदा ही कृधि करो। मनुः-हितम् माननेवाले के लिए नियत, यत् जो ते तेरी शम् शांति, योः अर्थ-काम से निवृत्ति होती है तत् उसे ईमहे हम मांगरहे हैं। वसवः! हे वसुओ! सु-दानवः! हे मंगल के दाताओ! न जैसे दुः-गात् बाधा से रथम् रथ को बचाकर कोई निकाल लेवे वैसे विश्वस्मात् अंहसः विश्व--आंतरिक पाप से अस्मान् हमें निः पिपर्तन निकालकर तुम संभाल लो।

२६४/७ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने, क्षयद्-वीराय प्र भरामहे मतीः।
यथा शम् असद् द्वि-पदे, चतुष्-पदे,
विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्न् अन्-आ-तुरम्। ऋ १.११४.१

कपर्दिने बल-रूप जटा-जूट, क्षयत्-वीराय वीर-निवास रुद्राय रुद्र के लिए इमाः मतीः इन मतियों को हम प्र भरामहे ख़ूब पहुंचारहे हो ताकि अस्मिन् ग्रामे इस ग्राम में विद्यमान विश्वम् विश्व द्वि-पदे दो पैरों वाले के लिए, चतुः-पदे चार पैरों वाले के लिए पुष्टम् पुष्ट, अन्-आ-तुरम् रोग-/मनस्ताप से रहित, शम् शांति-रूप असत् हो जाए।

२६५/८ मृळा नो रुद्रोत नो मयस् कृधि, क्षयद्-वीराय नमसा विधेम ते।
यच् छं च योश् च मनुर् आ-येजे पिता,
तद् अश्याम तव रुद्र! प्र-णीतिषु। ऋ १.११४.२

रुद्र! हे रुद्र! तुम नः हमारे प्रति मृळ प्रसन्न होओ। उत और नः हमारे लिए तुम मयः सुख कृधि संपादन करो। ते क्षयत्-वीराय तुझ वीर-निवास के लिए नमसा अन्न/वज्र द्वारा विधेम हमें सेवा करनी चाहिए। पिता मनुः पिता मनु ने यत् शम् च जिस शांति का भी, योः च अर्थ-काम से निवृत्ति का भी आ-येजे भली भांति अनुष्ठान किया था तत् उसे रुद्र! हे रुद्र! तव तेरी प्र-नीतिषु उत्कृष्ट नीतियों में अश्याम हम पा लेवें।

२६६/९ अर्वाङ् त्रि-चक्रो मधु-वाहनो रथो,
जीराश्वो अश्विनोर् यातु सु-ष्टुतः।
त्रि-वन्धुरो मघ-वा विश्व-सौभगः,
शं न आ वक्षद् द्वि-पदे चतुष्-पदे। ऋ १.१५७.३

अश्विनोः दोनों अश्वियों का त्रि-चक्रः तीन चक्रों वाला मधु-वाहनः मधु का वाहन, जीर-अश्वः तीव्रगामी अश्वों से युक्त, सु-स्तुतः मंगल के लिए प्रशंसित रथः रथ अर्वाङ् आ यातु सामने आ जाए। त्रि-वन्धुरः तीन प्रकार से दृढ़, मघ-वा धन से भरा-पूरा, विश्व-सौभगः विश्व सौभाग्यों वाला वह रथ नः हमारे लिए—द्वि-पदे दो पैरों वाले के लिए, चतुः-पदे चार पैरों

वाले के लिए शम् आ वक्षत् शांति ले आए।

२६७/१० ब्रह्माणि मे मतयः शं सुतासः,
शुष्म इयर्ति प्र-भृतो मे अद्रिः।
आ शासते प्रति हर्यन्त्य् उक्थे,
मा हरी वहतस् ता नो अच्छ। ऋ १.१६५.४

मे ब्रह्माणि मेरे अन्न/जल/धन, मतयः मतियां, सुतासः रस शम् शांति-रूप! मुझमें प्र-भृतः भली भांति भराहुआ मे शुष्मः मेरा बल अद्रिः मेघ बनकर उमड़-घुमड़कर इयर्ति सर्वत्र पहुंचरहा है। आ शासते सब मेरी आ-शंसा कररहे हैं। उक्था स्तुतिवचन प्रति मेरे प्रति हर्यन्ति कामनावान् हो। इमा हरी ये दोनों अश्व ता उन्हें नः हमारे लिए अच्छ वहतः अच्छी तरह लारहे हो।

२६८/११ एवा हि ते शं सवना समुद्र,
आपो यत् त आसु मदन्ति देवीः।
विश्वा ते अनु जोष्या भूद् गौः,
सूरींश् चिद् यदि धिषा वेषि जनान्। ऋ १.१७३.८

हि क्यों कि समुद्रे अन्तरिक्ष में ते तेरे सवना यज्ञ शम् एव शांति-रूप ही होरहे हैं और यत् जो कि अन्तरिक्ष में, आसु इनमें ते तेरी आपः देवीः जल-रूप देवियां मदन्ति अर्चना कररही हो, यदि यदि सूरीन् जनान् स्तोता जनों को भी धिषा कर्म/प्रज्ञा के साथ वेषि तुम चाहरहे हो, चित् तो, विश्वा गौः विश्व-रूप पृथिवी/द्यौ/आदित्य/वाक्/स्तोता अनु धीरे-धीरे ते तेरी जोष्या भूत् प्रिय हो जाती है।

२६९/१२ अग्ने! त्वं पारया नव्यो अस्मान्त्,
स्वस्ति-भिर् अति दुर्-गाणि विश्वा।
पूश् च पृथ्वी बहुला न उर्वी, भवा तोकाय तनयाय शं योः।

ऋ १.१८९.२ मंत्र-संख्या १२ पर अर्थ मौजूद है।

३००/१३ या वो भेषजा मरुतः! शुचीनि,
या शं-तमा वृषणो! या मयो-भु।
यानि मनुर् अवृणीता पिता नस्,
ता शं च योश् च रुद्रस्य वश्मि। ऋ २.३३.१३

मरुतः! हे मरुतो! वः तुम्हारी या भेषजा जो ओषधियां शुचीनि पवित्र हो, वृषणः! हे वर्षको! या जो शम्-तमा अतिशय शांति-रूप हो, या जो मयः-भु सुख-कर हो, यानि जिन्हें नः पिता हमारे पिता मनुः मनु ने अवृणीत चुना था, रुद्रस्य रुद्र की ता उन ओषधियों—शम् च शांति को भी, योः च अर्थ-काम से निवृत्ति को भी वश्मि मो चाहरहा हूँ।

३०१/१४ अस्मभ्यं तद् दिवो अद्-भ्यः पृथिव्यास्,
त्वया दत्तं काम्यं राध आ गात्।
शं यत् स्तोतृ-भ्य आपये भवात्य्,
उरु-शंसाय सवितर्! जरित्रे। ऋ २.३८.११

त्वया तेरे द्वारा अस्मभ्यम् हमारे लिए दत्तम् दियाहुआ, काम्यम् अभिलाषा-योग्य तत् राधः वह धन दिवः द्यौ से, अत्-भ्यः अन्तरिक्ष/जल से, पृथिव्याः पृथिवी से आ गात् आ जाए यत् जो स्तोतृ-भ्यः स्तोताओं के लिए—आपये बन्धु के लिए, उरु-शंसाय जरित्रे बहुत स्तुति करनेवाले स्तोता के लिए शम् शांति भवाति होवे, सवितः! हे सविता!

३०२/१५ उत नो ब्रह्मन्न् अविष, उक्थेषु देव-हूतमः।
शं नः शोचा मरुद्-वृधो,ग्ने! सहस्र-सातमः। ऋ ३.१३.६

उत और नः हमें ब्रह्मन् जल/अन्न/धन के विषय में, उक्थेषु मंत्रों के विषय में देव-हूतमः देवों को अतिशय पुकारनेवाले तुम अविषः बचाओ अग्ने! हे अग्नि!। सहस्र-सातमः सहस्रों के

अतिशय दाता, मरुत्-वृधः मरुतों के साथ बढ़नेवाले, शम् साक्षात् सुख तुम नः हमारे लिए शोच जगमगाओ—दर्शन दो।

३०३/१६ त्रीण्य् आयूंषि तव जात-वेदस्!
तिस्र आ-जानीर् उषसस् ते अग्ने!
ताभिर् देवानाम् अवो यक्षि विद्वान्,
अथा भव यजमानाय शं योः। ऋ. ३.१७.३

जात-वेदः! हे जगद्-वेत्ता! तव तेरी आयूंषि त्रीणि आयुएं तीन। अग्ने! हे अग्नि! आ-जानीः ख़ूब जनमनेवाली ते तेरी उषसः तिस्रः उषाएं तीन। विद्वान् सब कुछ जाननेवाले तुम ताभिः उन उषाओं द्वारा देवानाम् देवों के अवः रक्षण को यक्षि प्रदान करो। अथ और भव तुम हो जाओ यजमानाय भक्त—याजक के लिए शम् साक्षात् सुख, योः अर्थ-काम से मुक्ति।

३०४/१७ उच् छोचिषा 'सहसस् पुत्र'! स्तुतो, बृहद् वयः शशमानेषु धेहि।
रेवद् अग्ने! विश्वामित्रेषु शं योर्,
मर्मृज्मा ते तन्वं भूरि कृत्वः। ऋ. ३.१८.४

सहसः उदक/बल के पुत्र! हे पुत्र! शोचिषा ज्वाला के कारण स्तुतः स्तुति किएगए तुम शशमानेषु अर्चकों में बृहत् वंयः महान् अन्न को उत् धेहि उत्कृष्टता-पूर्वक स्थिर कर दो। अग्ने! हे अग्नि! विश्वामित्रेषु विश्वामित्रों में रेवत् सुषमायुक्त शम् शं को, योः दुर्गुणनिवारण को तुम स्थिर करो। ते तेरे तन्वम् तनू को भूरि कृत्वः बहुत बार मर्मृज्म हमने शोधन किया था।

३०५/१८ सखे! सखायम् अभ्य् आ ववृत्स्वा,शुं न चक्रं रथ्येव रंह्या,स्मभ्यं दस्म! रंह्या। अग्ने! मृळीकं वरुणे सचा, विदो मरुत्-सु विश्व-भानुषु। तोकाय तुजे शुशुचान! शं कृध्य्, अस्मभ्यं दस्म! शं कृधि। ऋ ४.१.३

सखे! हे सखा! न अब, सखायम् अभि सखा की ओर आशु शीघ्र आ ववृत्स्व तुम आ जाओ। रथ्या-इव चक्रम् जैसे रथ का चक्र रंह्या वेग से घूमता है न वैसे, दस्म! हे दर्शनीय! अस्मभ्यम् हमारे लिए रंह्या वेग के साथ तुम आ जाओ। अग्ने! हे अग्नि! सचा अपने साथी वरुणे वरुण में विश्व-भानुषु मरुत्सु विश्व-भानु मरुतों में तुमने मृळीकम् सुखदायी तत्त्व को विदः जान/पा लिया है। तोकाय अगली पीढ़ी के लिए, तुजे उससे भी अगली पीढ़ी के लिए, शुशुचान! हे उज्ज्वल! शम् शं को कृधि तुम करो। अस्मभ्यम् हमारे लिए, दस्म! हे दर्शनीय! शम् शं को कृधि तुम करो।

३०६/१९ महश् चिद् अग्न! एनसो अभीक,
ऊर्वाद् देवानाम् उत मर्त्यानाम्।
मा ते सखायः सदम् इद् रिषाम,
यच्छा तोकाय तनयाय शं योः। ऋ ४.१२.५

देवानाम् देवों के उत और मर्त्यानाम् मनुष्यों के ऊर्वात् आच्छादक, महः एनसः चित् महान् आचारदोष के भी अभीके समीप में, अग्ने! हे अग्नि! ते सखायः तेरे सखा हम सदम् इत् कदापि (सदा ही) मा रिषाम मात न खाएं। तोकाय अगली पीढ़ी के लिए, तनयाय उससे भी अगली पीढ़ी के लिए शम् शं को, योः आचार-शोधन को यच्छ तुम प्रदान करो।

३०७/२० आ यस् ते सर्पिर्-आ-सुते,ग्ने! शम् अस्ति धायसे।
ऐषु द्युम्नम् उत श्रव, आ चित्तं मर्त्येषु धाः। ऋ ५.७.९

सर्पिः-आ-सुते! हे घृत आ-हुतिवाले! यः जो ते तेरा आ पूर्णतया है—अग्ने! हे अग्नि! जो धायसे धाता के लिए शम् अस्ति शं है—ऐसे द्युम्नम् धन को उत और श्रवः अन्न/धन को आ पूर्णतया स्थिर करो, एषु मर्त्येषु इन मनुष्यों में चित्तम् चित्त को धाः तुम ख़ूब स्थिर करो।

३०८/२१ तुभ्येदम् अग्ने! मधुमत्-तमम् वचस्,
तुभ्यं मनीषा इयंम् अस्तु शं हृदे।
त्वां गिरः सिन्धुम्-इवावनीर् महीर्,
आ पृणन्ति शवसा वर्धयन्ति च। ऋ ५.११.५

अग्ने! हे अग्नि! इदम् मधुमत्-तमम् वचः यह अतिशय मधुर वचन तुभ्यम् तुम्हारे लिए होवे। तुभ्यम् तुम्हारे लिए इयम् मनीषा यह मेधा अस्तु हो जाए हृदे हृदय के लिए शम् शम्। त्वाम् तुम्हें गिरः वाणियां आ पृणन्ति ख़ूब भररही हो च और शवसा उदक/बल/धन द्वारा वर्धयन्ति बढ़ारही हो, सिन्धुम्-इव जैसे सिन्धु के पर्याप्त अंश को महीः अवनीः महा पृथिवियां पाट देती हैं और बढ़ाती हो।

३०९/२२ तद् अस्तु मित्रावरुणा! तद् अग्ने!,
शं योर् अस्मभ्यम् इदम् अस्तु शस्तम्।
अशीमहि गाधम् उत प्रति-ष्ठां,
नमो दिवे बृहते सादनाय। ऋ ५.४७.७

इदम् शस्तम् यह सूक्त अस्तु होवे अस्मभ्यम् हमारे लिए शम् शं, योः दोषनिवारक। मित्रावरुणा! हे मित्र-वरुण! तत् वह भी अस्तु होवे शं, दुर्गुणनिवारक; अग्ने! हे अग्नि! तत् वह भी होवे शं, पापशोधक। अशीमहि हमें लगानी चाहिए गाधम् डुबकी उत और पाना चाहिए प्रति-स्थाम् धरातल को। दिवे द्यौ के लिए—बृहते सादनाय महान् आसन के लिए नमः अन्न/वज्र अर्पण करता हूँ।

३१०/२३ एष ते देव! नेता, रथस्पतिः शं रयिः।
शं राये शं स्वस्तय इषः-स्तुतो मनामहे, देव-स्तुतो मनामहे।
ऋ ५.५०.५ मन्त्र-संख्या ३६ पर अर्थ मौजूद है।

३११/२४ अतीयाम निदस् तिरः स्वस्ति-भिर्, हित्वा+वद्यम् अ+रातीः।
वृष्ट्वी शं योर् आप उस्रि, भेषजं स्याम मरुतः! सह।
ऋ ५.५३.१४ मंत्र-संख्या ४२ पर अर्थ मौजूद है।

३१२/२५ प्रातर् देवीम् अदितिं जोहवीमि, मध्यं-दिन उद्-इता सूर्यस्य।
राये मित्रावरुणा! सर्व-ताते,ळे तोकाय तनयाय शं योः।
ऋ ५.६९.३

प्रातः प्रातः देवीम् अदितिम् देवी अदिति को जोहवीमि मो पुकाररहा हूँ। मध्यं-दिने मध्याह्न में—सूर्यस्य सूर्य के उत्-इता ऊपर पहुंच जाने पर भी पुकाररहा हूँ। राये जीवन-सुषमा के लिए, मित्रावरुणा! हे मित्र-वरुणो! सर्व-ताता सर्वोदय के प्रसंग में, तोकाय अगली पीढ़ी के लिए, तनयाय उससे भी अगली पीढ़ी के लिए शम् शं की, योः पाप-शोधन की ईळे मेरी प्रबल कामना है।

३१३/२६ शम् ऊ षु वां मधू-युवा,स्माकम् अस्तु चर्कृतिः।
अर्वाचीना वि-चेतसा!, वि-भिः श्येनेव दीयतम्। ऋ ५७४.९

मधु-युवा! हे दोनों मधु-कामनावानो! वाम् चर्कृतिः तुम्हारा अभ्यास (तुम्हारे लिए अभ्यास) अस्माकम् हमारी शम् उ शान्ति ही अस्तु बने, सु कल्याण बने। वि-चेतसा! हे विशेष-प्रज्ञा वालो! अर्वाचीना हमारी ओर मुख़ातिब तुम, श्येना-इव दो बाज़ों के समान, वि-भिः पंखों द्वारा दीयतम् उड़े चले आओ।

३१४/२७ यस् ता चकार स कुह स्विद् इन्द्रः,
कम् आ जनं चरति कासु विक्षु?
कस् ते यज्ञो मनसे शं वराय,
को अर्क इन्द्र! कतमः स होता? ऋ ६.२१.४

यः जिसने ता उन महान् कर्मों को चकार किया था सः इन्द्रः वह इन्द्र, स्वित् कुह भला, कहां है? वह कम् जनम् किस जनसमुदाय में चरति विचरण

कररहा है? कासु विक्षु किन प्र-जाओं में? कः कौन ते तेरा यज्ञः यज्ञ वराय वरण करने हेतु मनसे शम् मन के लिए साक्षात् सुख होता है? कः कौन अर्कः अन्न/वज्र, इन्द्र! हे इन्द्र! कतमः कौन सा सः होता वह होता नामक ऋत्विक् शं होता है?

३१५/२८ न यं हिंसन्ति धीतयो न वाणीर्,
इन्द्रं नक्षन्तीद् अभि वर्धयन्तीः।
यदि स्तोतारः शतं यत् सहस्रं,
गृणन्ति गिर्वणसं शं तद् अस्मै। ऋ ६.३४.३

धीतयः अंगुलियां यम् न हिंसन्ति जिसकी हिंसा नहीं करती हो, न वाणीः न वाणियाँ; बल्कि इन्द्रम् इन्द्र को वर्धयन्तीः बढ़ातीहुई वे इसे अभि लक्ष्य करके, इस तक नक्षन्ति इत् पहुँच ही जाती हो, अस्मै ऐसे इस इन्द्र के लिए तत् वह सब शम् साक्षात् सुख हो जाता है यदि स्तोतारः यदि स्तोता इस गिर्वणसम् वागीश की शतम् सौ सौ गृणन्ति स्तुति कररहे हो, यत् जो कि सहस्रम् हज़ार-हज़ार स्तुति करते हो।

३१६;३८८;तद् वो गाय सुते सचा, पुरु-हूताय सत्वने।
४४२/२९ शं यद् गवे न शाकिने। ऋ ६.४५.२२

सोम का सुते रसग्रहण हो चुकने पर, वः तुम सबकी ख़ातिर पुरु-हूताय बहुतों द्वारा ख़ूब पुकारेगए, सत्वने परंपरा—प्रवाह के स्वामी के लिए सबके सचा साथ तत् उस साम को गाय तू गा यत् जो गवे गौ के लिए न और शाकिने शक्तिमान् के लिए शम् साक्षात् सुख होवे।

३१७/३० ओमानम् आपो! मानुषीर्! अ-मृक्तं,
धात तोकाय तनयाय शं योः।
यूयं हि ष्ठा भिषजो मातृ-तमा,
विश्वस्य स्थातुर् जगतो जनित्रीः। ऋ ६.५०.७

स्थातुः जगतः **स्थावर, जंगम—विश्व की** जनित्रीः जननी यूयम् तुम हि **क्यों कि** भिषजः **चिकित्सक,** मातृ-तमाः सर्वोपरि माता **स्थ हो अतः** तोकाय **अगली पीढ़ी के लिए,** तनयाय **उससे अगली पीढ़ी के लिए** शम् **शान्ति को,** योः **पाप, आदि से पृथक्ता को,** अ-मृक्तम् ओमानम् **अ-तीक्ष्ण पालन को** धात **तुम स्थापित करो,** मानुषीः! **हे मानुषियो!** आपः! **हे प्रवाहो!**

३१८/३१ सोमारुद्रा! धारयेथाम् असुर्यं, प्र वाम् इष्टयोरम् अश्नुवन्तु। दमे-दमे सप्त रत्ना दधाना, शं नो भूतं द्वि-पदे शं चतुष्-पदे। ऋ ६.७४.१

सोमारुद्रा! हे सोम-और-रुद्र! तुम दोनों असुर्यम् **असुरत्व को** धारयेथाम् **नियन्त्रित करो।** इष्टयः **यज्ञ/इच्छाएँ** वाम् **तुम दोनों को** अरम् **ख़ूब** अश्नुवन्तु **प्राप्त करें।** दमे-दमे **घर-घर में** सप्त रत्ना **सात रत्नों को** दधाना **स्थापित करनेवाले तुम दोनों** नः **हमारे लिए** शम् **साक्षात् सुख** भूतम् **हो जाओ,** द्वि-पदे **दो-पाए के लिए** शम् **सुख,** चतुः-पदे **चौ-पाए के लिए भी सुख होओ।**

३१९/३२ कविं केतुं धासिं भानुम् अद्रेर्, हिन्वन्ति शं राज्यं रोदस्योः। पुरं-दरस्य गीर्-भिर् आ विवासे,ग्नेर् व्रतानि पूर्व्या महानि। ऋ ७.६.२

कविम् मेधावी को, केतुम् **प्रज्ञा को,** धासिम् **अन्न को,** अद्रेः **मेघ के** भानुम् **प्रकाश को,** रोदस्योः **द्यौ-पृथिवी के** राज्यम् **राज्य को,** शम् **शं को** वे हिन्वन्ति **आगे कररहे हो।** पुरम्-दरस्य अग्नेः **पुर्-विदारक अग्नि के** पूर्व्या **पुराने** महानि व्रतानि **महान् कर्मों का** गीः-भिः **वाणियों द्वारा** आ विवासे **मो ख़ूब पालन कररहा हूँ।**

३२०;४२४/३३ शं न इन्द्राग्नी भवताम् अवो-भिः, शं न इन्द्रावरुणा रात-हव्या। शम् इन्द्रासोमा सुविताय शं योः, शं न इन्द्रापूषणा वाज-सातौ। ऋ ७.३५.१

इन्द्राग्नी इन्द्र-अग्नि अपने अवः-भिः रक्षा-साधनों द्वारा नः हमारे लिए शम् शं भवताम् हो जाएं, इन्द्रा-वरुणा इन्द्र-वरुण रात-हव्या हवि दिए जाने पर नः हमारे लिए शम् शं होवें, इन्द्रा-सोमा इन्द्र-सोम शम् शं होवें—सुविताय अभ्युदय के लिए शम् शं, योः दुःख-निवारक होवें। वाज-सातौ अन्न-/बल-प्राप्ति के प्रसंग में इन्द्रा-पूषणा इन्द्र-पूषा नः हमारे लिए शम् शं होवें।

३२१;४२५/ शं नो भगः शम् उ नः शंसो अस्तु,
३४;१३८ शं नः पुरं-धिः शम् उ सन्तु रायः।
शं नः सत्यस्य सु-यमस्य शंसः,
शं नो अर्यमा पुरु-जातो अस्तु। ऋ ७.३५.२

भगः भग नः हमारे लिए शम् शं हो, शम् उ शं ही नः हमारे लिए शंसः स्तुति अस्तु होवे। पुरम्-धिः शरीर और समाज की धारिका नः हमारे लिए शम् शं होवे, शम् उ शं ही सन्तु होवें रायः जीवन के सौन्दर्य। सु-यमस्य सत्यस्य 'सु' यमन-शक्ति वाली परम्परा की शंसः स्तुति नः हमारे लिए शम् शं होवे। पुरु-जातः बहुत रूपों में प्रकट अर्यमा अर्यमा नः हमारे लिए शम् अस्तु शं होवे।

३२२;४२६/ शं नो धाता शम् उ धर्ता नो अस्तु,
३५ शं न उरूची भवतु स्वधाभिः।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः,
शं नो देवानां सु-हवानि सन्तु। ऋ ७.३५.३

नः धाता हमारा भाग्यविधाता हमारे लिए शम् शं होवे, शम् उ शं ही नः धर्ता हमारा आधार अस्तु होवे। उरूची ख़ूब गतिवाली—शक्ति स्वधाभिः प्रवाहों/अन्नों के साथ नः हमारे लिए शम् शं भवतु होवें। बृहती रोदसी महान् द्यौ-पृथिवी शम् शं होवें,

अद्रिः मेघ शम् शं नः हमारे लिए होवे; देवानाम् देवों की सु-हवानि सु पुकारें (सद्गुणों के सत्प्रभाव) नः हमारे लिए शम् शं सन्तु होवें।

३२३;४२७/ शं नो अग्निर् ज्योतिर्-अनीको अस्तु,
३६ शं नो मित्रावरुणाव् अश्विना शम्।
शं नः सु-कृतां सु-कृतानि सन्तु,
शं न इषिरो अभि वातु वातः। ऋ ७.३५.४

ज्योतिः-अनीकः अग्निः ज्योतिर्-मुख अग्नि नः हमारे लिए शम् शं अस्तु होवे। मित्रा-वरुणौ मित्र-वरुण नः हमारे लिए शम् शं होवें, अश्विना दोनों अश्वी शम् शं होवें। सु-कृताम् सु-कर्ताओं के सु-कृतानि सु-कृत नः हमारे लिए शम् सन्तु शं होवें। इषिरः वातः गमनशील वात नः अभि हमारी ओर शम् शं होताहुआ वातु बहे।

३२४;४२८/ शं नो द्यावापृथिवी पूर्व-हूतौ, शम् अन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु।
३७ शं न ओषधीर् वनिनो भवन्तु,
शं नो रजसस् पतिर् अस्तु जिष्णुः । ऋ ७.३५.५

द्यावापृथिवी द्यौ-पृथिवी पूर्व-हूतौ पहली पुकार पर नः हमारे लिए शम् शं होवें। नः दृशये हमारे देखने के लिए अन्तरिक्षम् अन्तरिक्ष शम् अस्तु शं होवे। ओषधीः ओषधियां, वनिनः वन के उत्पादन नः हमारे लिए शम् भवन्तु शं होवें। जिष्णुः जय-स्वभाव रजसः पतिः रात्रि-पति नः हमारे लिए शम् अस्तु शं होवे।

३२५;४२९/ शं न इन्द्रो वसु-भिर् देवो अस्तु,
३८ शम् आदित्येभिर् वरुणः सु-शंसः।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर् जलाषः,

शं नस् त्वष्टा ग्नाभिर् इह शृणोतु । ऋ ७.३५.६

वसु-भिः वसुओं सहित देवः इन्द्रः देव इन्द्र नः हमारे लिए शम् शं अस्तु होवे। आदित्येभिः आदित्यों सहित सु-शंसः सु-स्तुतिवान् वरुणः वरुण शम् शं होवे। रुद्रेभिः रुद्रों सहित रुद्रः रुद्र शम् शं होवे, जलाषः उदक/सुख शं होवे। त्वष्टा त्वष्टा ग्नाभिः अपनी पत्नियों—शक्तियों सहित इह यहां नः हमें शम् शं-पूर्वक शृणोतु सुने।

३२६;४३०/ शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः,
३६ शं नो ग्रावाणः शम् उ सन्तु यज्ञाः।
शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु,
शं नः प्र-स्वः शम् व् अस्तु वेदिः। ऋ ७.३५.७

शम् शं नः हमारे लिए सोमः सोम भवतु होवे। नः हमारे लिए ब्रह्म उदक/अन्न/धन शम् शं होवे। ग्रावाणः पत्थर नः हमारे लिए शम् शं होवें। शम् उ शं ही सन्तु होवें यज्ञाः यज्ञ। स्वरूणाम् स्तम्भों के मितयः माप नः हमारे लिए शम् भवन्तु शं होवें। प्र-स्वः प्र-सूतियां नः हमारे लिए शम् शं होवें, शम् उ शं ही अस्तु होवे वेदिः वेदि।

३२७;४३१/ शं नः सूर्य उरु-चक्षा उद् एतु,
४० शं नश् चतस्रः प्र-दिशो भवन्तु।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु,
शं नः सिन्धवः शम् उ सन्त्व् आपः। ऋ ७.३५.८

नः हमारे लिए शम् शं बनताहुआ उरु-चक्षाः सूर्यः बहु-द्रष्टा सूर्य उत् एतु उद्-अय होवे। चतस्रः प्र-दिशः चारों महा-दिशाएँ नः हमारे लिए शम् भवन्तु शं होवें। ध्रुवयः पर्वताः स्थिरस्वभाव पर्वत नः हमारे लिए शम् भवन्तु शं होवें। शम् शं नः हमारे लिए सिन्धवः नदियां होवें, शम् उ शं ही सन्तु होवें आपः अन्तरिक्ष/जल।

३२८;४३२/ शं नो अदितिर् भवतु व्रतेभिः, शं नो भवन्तु मरुतः स्व्-अर्काः।
४१ शं नो विष्णुः शम् उ पूषा नो अस्तु,
शं नो भवित्रं शं व् अस्तु वायुः। ऋ ७.३५.९

व्रतेभिः कर्मों द्वारा अदितिः अदिति नः हमारे लिए शम् भवतु शं होवे। सु-अर्काः 'सु' अन्नों/वज्रों वाले मरुतः मरुत नः हमारे लिए शम् भवन्तु शं होवें। शम् शं नः हमारे लिए विष्णुः विष्णु होवे। शम् उ शं ही पूषा पूषा नः हमारे लिए अस्तु होवे। भवित्रम् होनहार नः हमारे लिए शम् शं होवे, शम् उ शं ही वायुः वायु अस्तु होवे।

३२९;४३३/ शं नो देवः सविता त्रायमाणः, शं नो भवन्तूषसो वि-भातीः।
४२ शं नः पर्जन्यो भवतु प्र-जाभ्यः,
शं नः क्षेत्रस्य पतिर् अस्तु शं-भुः। ऋ ७.३५.१०

त्रायमाणः राखनहार देवः सविता देव सविता नः हमारे लिए शम् शं होवे, वि-भातीः उषसः प्र-काशवती उषाएँ नः हमारे लिए शम् भवन्तु शं होवें। नः प्र-जाभ्यः हम प्र-जाओं के लिए पर्जन्यः पर्जन्य शम् भवतु शं होवे। क्षेत्रस्य खेत—'क्षेत्र' का शम्-भुः शं-उत्पादक पतिः रखवाला—किसान नः हमारे लिए शम् शं अस्तु होवे।

३३०;४३५/ शं नो देवा विश्व-देवा भवन्तु, शं सरस्वती सह धीभिर् अस्तु।
४३ शम् अभि-षाचः शम् उ राति-षाचः,
शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः। ऋ ७.३५.११

विश्व-देवाः देवाः 'विश्व-देव' नामक देव नः हमारे लिए शम् भवन्तु शं होवें। धीभिः सह कर्मों/प्र-ज्ञाओं के साथ सरस्वती वाणी शम् अस्तु शं होवे। अभि-साचः कुशल सेवक शम् शं होवे, शम् उ शं ही राति-साचः दान-भोगी होवे। दिव्याः द्यौ की वस्तुएँ, पार्थिवाः पृथिवी की वस्तुएँ नः हमारे लिए शम् शं होवें, शम् शं नः हमारे लिए अप्याः अन्तरिक्ष की वस्तुएँ होवें।

३३१;४३४/ शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु,

४४ शं नो अर्वन्तः शम् उ सन्तु गावः।

शं न ऋभवः सु-कृतः सु-हस्ताः,

शं नो भवन्तु पितरो हवेषु। ऋ ७.३५.१२

सत्यस्य परम्परा के पतयः रखवाले नः हमारे लिए शम् भवन्तु शं होवें। अर्वन्तः फुर्तीले नः हमारे लिए शम् शं होवें। शम् उ शं ही सन्तु होवें गावः रश्मि। सु-कृतः सु-कर्मा, सु-हस्ताः कुशल-हस्त ऋभवः ऋभु नः हमारे लिए शम् शं होवें, हवेषु पुकारों पर पितरः पिता लोग नः हमारे लिए शम् भवन्तु शं होवें।

३३२;४३६/ शं नो अज एक-पाद् देवो अस्तु, शं नोहिर् बुध्न्यः शं समुद्रः।

४५ शं नो अपां नपात् पेरुर् अस्तु,

शं नः पृश्निर् भवतु देव-गोपा। ऋ ७.३५.१३

एक-पात् अजः 'एक-पाद् अज' नामक देव नः हमारे लिए शम् अस्तु शं होवे। बुध्न्यः अहिः 'बुध्न्य (पेंदे में) बैठाहुआ अहि' नामक देव नः हमारे लिए शम् शं होवे, समुद्रः समुद्र शम् शं होवे। अपाम् नपात् 'अपां नपात्' नामक पेरुः रक्षक देव नः हमारे लिए शम् अस्तु शं होवे। देव-गोपा देव-रूपी रक्षकों वाली पृश्निः द्यौ/आदित्य नः हमारे लिए शम् भवतु शं होवे।

३३३;३६८;शं नो भवन्तु वाजिनो हवेषु, देव-ताता मित-द्रवः स्व्-अर्काः।

३७३/४६;जम्भयन्तोहिं वृकं रक्षांसि, सनेम्य् अस्मद् युयवन्न् अमीवाः।

८१;८६ ऋ ७.३८.७

देव-ताता देवोदय के प्रसंग में हवेषु पुकारे जाने पर मित-द्रवः सधीहुई चालवाले, सु-अर्काः 'सु' अन्न/वज्र वाले वाजिनः अन्नवान्/बलवान् नः हमारे लिए शम् भवन्तु शं होवें। अहिम् मेघ/जल को, वृकम् वज्र/चोर को, रक्षांसि राक्षसों को

जम्भयन्तः जबड़े में पीसतेहुए, सनेमि अमीवाः पराने रोग

(अकाल, गुंडे, महाव्याधि) अस्मत् हमसे युयवन् दूर हो, जाएं।

३३४/४७ आदित्यानाम् अवसा नूतनेन, सक्षीमहि शर्मणा शं-तमेन। अन्+आगास्-त्वे अदिति-त्वे तुरास, इमं यज्ञं दधतु श्रोषमाणाः। ऋ ७.५१.१

आदित्यानाम् अदिति-पुत्रों के नूतनेन अवसा ताज़े रक्षण के साथ—शम्-तमेन अतिशय शं वाले शर्मणा गृह/सुख के साथ सक्षीमहि हमें सं-गति रखनी चाहिए। अन्+आगाः-त्वे पाप-रहितता में, अदिति-त्वे अदिति-पन में तुरासः जल्दबाज़, श्रोषमाणाः पुकार को सुननेवाले लोग इमम् यज्ञम् इस यज्ञ के दधतु आधार बनें।

३३५/४८ वास्तोष् पते! प्रति जानीह्य् अस्मान्त्,
स्व्-आवेशो अन्+अमीवो भवा नः।
यत् त्वेमहे प्रति तन् नो जुषस्व,
शं नो भव द्वि-पदे शं चतुष्-पदे। ऋ ७.५४.१

वास्तोः गृह के पते! हे राखनहार! तुम अस्मान् हमसे प्रति जानीहि प्रति-ज्ञा करो। नः हमारे लिए सु-आवेशः 'सु' के उत्प्रेरक, अन्-अमीवः रोग-रहित भव हो जाओ। यत् जो त्वा तुझसे ईमहे हम मांगरहे हो नः तत् हमारी उस मांग को प्रति जुषस्व तुम पसन्द/मंजूर करो। नः हमारे लिए तुम शम् भव शं हो जाओ—द्वि-पदे दो पदों वाले के लिए, चतुः-पदे चार पदों वाले के लिए।

३३६/४९ यो ह स्य वां रथिरा! वस्त उस्रा,
रथो युजानः परि-याति वर्तिः।
तेन नः शं योर् उषसो व्यु-उष्टौ,
न्यू अश्विना! वहत यज्ञे अस्मिन्। ऋ ७.६९.५

रथिरा! हे दोनों रथवालो! यः जो—रथ ह वस्तुतः स्यः वह वाम् तुम दोनों के उस्राः रश्मियों को वस्ते अपने में जज़्ब कररहा है, जो रथः रथ युजानः अश्वों से जुड़ताहुआ वर्तिः रास्ते को परि-याति तय कररहा है तेन उस रथ द्वारा उषसः उषा के वि-उष्टौ वि-भावती होने पर अस्मिन् यज्ञे इस यज्ञ में नः हमारे लिए शम् शं को, योः पाप-निवारण को नि पक्की तौर पर वहतम् तुम दोनों ले आओ, अश्विना! हे दोनों अश्वियो!

३३७/५० अयं सु तुभ्यं वरुण! स्वधा-वो!,
हृदि स्तोम उप-श्रितश् चिद् अस्तु।
शं नः क्षेमे शम् उ योगे नो अस्तु,
यूयं पात स्वस्ति-भिः सदा नः। ऋ ७.८६.८

मंत्र-संख्या १२२ पर अर्थ मौजूद है।

३३८/५१ तेन नो वाजिनी-वसू!, पश्वे तोकाय शं गवे।
वहतं पीवरीर् इषः। ऋ ८.५.२०

तेन अतः, वाजिनी-वसू! हे दोनों उषा-रूप धनवालो! नः हमारे लिए, पश्वे पशु के लिए, तोकाय संतति के लिए, गवे पृथिवी/द्यौ/आदित्य/वाणी/स्तुतिकर्त्ता के लिए शम् शं को, पीवरीः इषः पुष्ट अन्नों को वहतम् तुम दोनों पहुंचा दो।

३३९/५२ तूतुजानो महे-मते,श्वेभिः प्रुषितप्सु-भिः।
आ याहि यज्ञम् आशु-भिः, शम् इद् हि ते। ऋ ८.१३.११

महे-मते! हे महा-मति/उत्सव-मति! तूतुजानः फुर्तीले तुम आशु-भिः प्रुषितप्सु-भिः फुर्तीले, चमचमाते रूप वाले अश्वेभिः अश्वों द्वारा यज्ञम् यज्ञ में आ याहि आ जाओ हि क्यों कि ते तेरे लिए तो यह आगमन-क्रिया शम् इत् रुचि-कर ही होती है।

३४०;४४०/ स्वादुष् टे अस्तु सं-सुदे, मधु-मान् तन्वे तव।

५३ सोमः शम् अस्तु ते हृदे। ऋ ८.१७.६

सोमः सोम ते तुझ सम्-सु+दे सं-सु-दाता के लिए स्वादुः अस्तु स्वादु होवे, तव तन्वे तेरे शरीर के लिए मधु-मान् मधु-मान् होवे। ते हृदे तेरे हृदय के लिए शम् अस्तु शं होवे।

३४१/५४ उत त्या दैव्या भिषजा, शं नः करतो अश्विना।

युयुयाताम् इतो रपो अप स्रिधः। ऋ ८.१८.८

उत और त्या वे, दैव्या देव-रूप, भिषजा चिकित्सक अश्विना दोनों अश्वी नः हमारे लिए शम् करतः शं कररहे हो। वे इतः यहां से रपः पाप को, स्रिधः शत्रुओं को अप परे युयुयाताम् पृथक् करें।

३४२/५५ शम् अग्निर् अग्नि-भिः करच्, छं नस् तपतु सूर्यः।

शं वातो वात्व्, अ+रपा अप स्रिधः। ऋ ८.१८.९

अग्निः अग्नि अग्निः-भिः अग्नियों द्वारा शम् शं को करत् करे। सूर्यः सूर्य नः हमारे लिए शम् शं होकर तपतु तपे। वातः वात शम् शं को वातु बहाए; अ-रपाः पाप-रहित वह स्रिधः शत्रुओं को अप परे बहा ले जाए।

३४३/५६ तत्-तद् अग्निर् वयो दधे, यथा-यथा कृपण्यति।

ऊर्जा+हुतिर् वसूनां शं च योश् च, मयो दधे विश्वस्यै देव-हूत्यै, नभन्ताम् अन्यके समे। ऋ ८.३९.४

यथा-यथा जैसे-जैसे कृपण्यति कोई अर्चना करता जाता है वैसे-वैसे अग्निः अग्नि तत्-तत् उस-उस वयः अन्न को दधे धरता जाता है। ऊर्जा-आ-हुतिः ऊर्जा द्वारा पुकारा जारहा वह वसूनाम् वसुओं के शम् च शं को भी, योः चः विषय-निवारण को भी, मयः सुख को दधे धरता जाता है विश्वस्यै देव-हूत्यै

विश्व देव-पुकारों के लिए। अन्यके समे अन्य सब विकार नभन्ताम् मारे जाएँ।

३४४/५७ शं नो भव हृद आ पीत इन्दो!, पितेव सोम! सूनवे सु-शेवः।
सखेव सख्य उरु-शंस! धीरः,
प्र ण आयुर् जीवसे सोम! तारीः। ऋ ८.४८.४

सोम! हे सोम! सूनवे पुत्र के लिए पिता-इव पिता-समान सु-शेवः सु-सुखवाले तुम, इन्दो! हे इन्दु!, पीतः पिए जा चुके तुम नः हमारे लिए, हृदे हृदय के लिए शम् भव शं हो जाओ। उरु-शंस! हे बहु-कीर्त्ति!, सख्ये सखा के लिए सखा-इव सखा-समान, धीरः धीर तुम, सोम! हे सोम!, जीवसे जीवन के लिए नः आयुः हमारे अन्न को प्र तारीः खूब बढ़ाओ।

३४५/५८ अग्निं द्वेषो योतवै नो गृणीमस्य्, अग्निं शं योश् च दातवे।
विश्वासु विक्ष्व् अवितेव, हव्यो भुवद् वस्तुर् ऋषूणाम्।
ऋ ८.७१.१५

नः अपने द्वेषः द्वेषों को योतवै पृथक् करने के लिए अग्निम् अग्नि की गृणीमसि हम स्तुति कररहे हो। शम् शं को च और योः विषय-मोचन को दातवे देने के लिए अग्निम् अग्नि की हम स्तुति कररहे हैं। विश्वासु विक्षु विश्व प्र-जाओं में अविता-इव रक्षक-समान, हव्यः पुकारे जाने योग्य वह ऋषूणाम् ऋषियों का वस्तुः आ-श्रय भुवत् हो गया है।

३४६/५९ सु-शेवो नो मृळयाकुर्, अदृप्त-क्रतुर् अ+वातः। भवा नः सोम! शं हृदे। ऋ ८.७९.७

नः हमारे लिए सु-शेवः सु-सुखवाले, मृळयाकुः सुख करनेवाले, अदृप्त-क्रतुः घमण्ड-रहित कर्म/प्र-ज्ञा वाले, अ-वातः वात-रहित तुम, सोम! हे सोम!, नः हमारे लिए, हृदे हृदये के लिए शम् भव शं हो जाओ।

३४७/६० इषा मन्दस्वाद् उ ते,रं वराय मन्यवे।

भुवत् त इन्द्र! शं हृदे। ऋ ८.८२.३

इसके आत् उ पश्चात् ही, स्वतृप्ति के लिए तुम इषा अन्न द्वारा मन्दस्व मन्द हो जाओ। वह अन्न मन्यवे मन्यु के लिए ते तेरे प्रयोजनार्थ अरम् वराय पर्याप्त शुभ है। इन्द्र! हे इन्द्र! ते तेरे लिए, हृदे हृदये के लिए वह अन्न शम् भुवत् शं हो गया है।

३४८/६१ स नः पवस्व शं गवे, शं जनाय शम् अर्वते।

शं राजन्न्! ओषधीभ्यः। ऋ ६.११.३

राजन्! हे राजा! सः वह—नः हमारे लिए, गवे पृथिवी/द्यौ/आदित्य/ वाणी/स्तोता के लिए शम् शं-पूर्वक पवस्व तुम बहो; जनाय जनता के लिए शम् शं-पूर्वक, अर्वते अश्व के लिए शम् शं-पूर्वक, ओषधीभ्यः ओषधियों के लिए शम् शं-पूर्वक बहो।

३४६/६२ अमित्र-हा वि-चर्षणिः, पवस्व सोम! शं गवे।

देवेभ्यो अनुकाम-कृत्। ऋ ६.११.७

अमित्र-हा अस्नेहियों को मारनेवाला, वि-चर्षणिः वि-द्रष्टा, देवेभ्यः देवों के लिए अनुकाम-कृत् अनुक्रम से कामनाओं की पूर्ति करनेवाले तुम, सोम! हे सोम!, गवे पृथिवी/द्यौ/आदित्य/वाणी/स्तोता के लिए शम् शं-पूर्वक पवस्व बहो।

३५०/६३ इन्द्रस्य सोम! राधसे, शं पवस्व वि-चर्षणे!।

प्रजा-वद् रेत आ भर। ऋ ६.६०.४

सोम! हे सोम! इन्द्रस्य इन्द्र के राधसे धन के लिए तुम शम् शं-पूर्वक पवस्व बहो, वि-चर्षणे! हे वि-द्रष्टा!, प्रजा-वत् रेतः प्रजा-वान् उदक (—वीर्य) को आ भर इन्द्र में ख़ूब भर दो (इन्द्र का आ-भरण बना दो)।

३५१/६४ अर्षा णः सोम! शं गवे, धुक्षस्व पिप्युषीम् इषम्। वर्धा समुद्रम् उक्थ्यम्। ऋ ९.६१.१५

सोम! हे सोम! नः हमारे लिए, गवे पृथिवी/द्यौ/आदित्य/वाणी/स्तोता के लिए तुम शम् शं-पूर्वक अर्ष ऋषित्व-प्रवाह बनो। पिप्युषीम् भर-पूर इषम् अन्न का धुक्षस्व तुम दोहन करो। वर्ध तुम बढ़ो; समुद्रम् अन्तरिक्ष को तुम उक्थ्यम् प्रशंसनीय करो।

३५२/६५ सिन्धोर्-इव प्र-वणे निम्न आशवो,
वृष-च्युता मदासो गातुम् आशत।
शं नो नि-वेशे द्वि-पदे चतुष्-पदे-,
स्मे वाजाः सोम! तिष्ठन्तु कृष्टयः। ऋ ९.६९.७

सिन्धोः-इव जैसे नदी के निम्ने प्र-वणे निम्न बहाव में आशवः द्रुत जल मार्ग बना लेते हो वैसे वृष-च्युताः मदासः वृष से प्रकट अर्चनाओं ने गातुम् पृथिवी—अपने गन्तव्य को आशत पा लिया है। नः हमारे नि-वेशे नि-वेश में द्वि-पदे दो पदों वाले के लिए, चतुः-पदे चार पदों वाले के लिए शम् शं होकर सोम! हे सोम! वाजाः अन्न/बल और कृष्टयः मनुष्य अस्मे तिष्ठन्तु हममें स्थिर रहें।

३५३/६६ एवा पुनानो अपः स्वर् गा, अस्मभ्यं तोका तनयानि भूरि।
शं नः क्षेत्रम् उरु ज्योतींषि सोम!,
ज्योङ् नः सूर्यं दृशये रिरीहि। ऋ ९.९१.६

एव अवश्य ही, पुनानः शुद्ध होतेहुए तुम अस्मभ्यम् हमारे लिए भूरि ख़ूब दो अपः उदक को, स्वः द्यौ/आदित्य/उदक को, गाः रश्मियों को, तोका अगली पीढ़ी को, तनयानि वंशजों को। उरु शम् क्षेत्रम् विराट्, शांत क्षेत्र को नः हमारे लिए दो, ज्योतींषि ज्योतियों को दो, सोम! हे सोम!। ज्योक् चिर काल तक नः हमें सूर्यम् सूर्य को दृशये रिरीहि देखने दो।

३५४/६७ शुक्रः पवस्व देवेभ्यः सोम!, दिवे पृथिव्यै शं च प्र-जायै।

ऋ ६.१०६.५

सोम! हे सोम! शुक्रः शुक्र तुम देवेभ्यः देवों के लिए पवस्व बहो। दिवे द्यौ के लिए, पृथिव्यै पृथिवी के लिए च और प्र-जायै प्र-जा के लिए शम् शांत होओ।

३५५;३८४; शं नो देवीर् अभिष्टय, आपो भवन्तु पीतये।

३८७;३६६/ शं योर् अभि स्रवन्तु नः। ऋ १०.६.४

६८ नः हमारे अभिष्टये संकल्प/यज्ञ के लिए, पीतये पीने के लिए आपः देवीः उदक देवियां शम् भवन्तु शांत होवें। शम् उपशमन को, योः अनू-आसक्ति को वे नः अभि हमारे ऊपर स्रवन्तु सींचें।

३५६;३७२/ बर्हि-षदः! पितर! ऊत्य् अर्वाग्, इमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम्।

६६ त आ गतावसा शं-तमेना,था नः शं योर् अ-रपो दधात।

ऋ १०.१५.४

बर्हि-सदः! हे बर्हि पर बैठने वालो! पितरः! हे पिताओ! ऊती रक्षा के साथ अर्वाक् संमुख आओ। इमा हव्या ये हवियां वः तुम्हारे लिए चकृम हमने की थीं ; इन्हें जुषध्वम् प्रीति-पूर्वक सेवन करो। ते वे—शमू-तमेन अतिशय शांत अवसा रक्षा के साथ आ गत तुम आ जाओ। अथ फिर नः हमारे लिए शम् शं के, योः अनू-आसक्ति के, अ-रपः पाप-रहितता के दधात तुम आधार हो जाओ।

३५७/७० शं नो भव चक्षसा शं नो अह्ना,

शं भानुना शं हिमा शं घृणेन।

यथा शम् अध्वञ् छम् असद् दुरोणे,

तत् सूर्य! द्रविणं धेहि चित्रम्। ऋ १०.३७.१०

चक्षसा दर्शन-शक्ति द्वारा नः हमारे लिए तुम शम् शान्ति भव

हो जाओ अहूमा चौबीस घंटे के पूरे दिन द्वारा नः हमारे लिए शम् शांति हो जाओ। भानुना दिन के प्रकाशवाले भाग द्वारा शम् शांति होओ, हिमा रात्रि द्वारा शम् शांति होओ, घृणेन उमस—उष्णता द्वारा शम् शांति हो जाओ। यथा जिस प्रकार अध्वन् रास्ते में शम् शांति, दुरोणे घर में शम् शांति असत् हो जाए तत् उस चित्रम् अद्भुत—माननीय द्रविणम् बल/धन का, सूर्य! हे सूर्य!, तुम धेहि आधार बनो।

३५८/७१ अस्माकं देवा उभयाय जन्मने, शर्म यच्छत द्वि-पदे चतुष्-पदे।
अदत् पिबद् ऊर्जयमानम् आशितं,
तद् अस्मे शं योर् अ-रपो दधातन। ऋ १०.३७.११

देवाः! हे देवो! तुम अस्माकम् हमारे उभयाय जन्मने दोनों प्रकार के जीवनों के लिए—द्वि-पदे द्विविध के लिए, चतुः-पदे चतुर्विध के लिए शर्म आधार/सुख यच्छत दो। अस्मे हमारे लिए तत् उस शम् शांति का, योः अनु-आसक्ति का, अ-रपः पाप-रहितता का दधातन तुम आधार बनो जो अदत् पिबत् खान-पान, ऊर्जयमानम् बलवत्ता आशितम् बहुलता से युक्त हो।

३५९/७२ शं रोदसी सु-बन्धवे, यह्वी ऋतस्य मातरा।
भरताम् अप यद् रपो द्यौः! पृथिवि! क्षमा रपो,
मो षु ते किं चनाममत्। ऋ १०.५९.८

दोनों यह्वी महान्, ऋतस्य मातरा ऋत की माताएं—रोदसी द्यौ-पृथिवी सु-बन्धवे सु-बन्धु के लिए शम् शांति को लाएँ। यत् रपः जो पाप/कठिनाई है उसे वे दोनों अप दूर भरताम् पटक दें। द्यौः! हे द्यौ! पृथिवि! हे पृथिवि! क्षमा सहनशीलता—भूमि रपः पाप/कठिनाई को दूर करे। ते तेरा किम् चन कुछ भी, सु सही- सलामत रहतेहुए मा उ आममत् बिलकुल ही नष्ट न होवे।

३६०;४४३/ वृषभो न तिग्म-शृङ्गो,न्तर् यूथेषू रोरुवत्।
७३ मन्थस् त इन्द्र! शं हृदे, यं ते सुनोति भावयुर्,
विश्वस्माद् इन्द्र उत्-तरः। ऋ १०.८६.१५

तिग्म-शृङ्गः वृषभः तीखे सींगों वाला साण्ड न जैसे यूथेषु झुण्डों में, अन्तः अन्दर रोरुवत् गर्जनाशील होता है वैसे यह ते तेरी मन्थः 'मन्थ' नामक हवि, इन्द्र! हे इन्द्र!, तेरे हृदे हृदय के लिए शम् शांति बन जाए यम् जिसे कि भावयुः भावनाभिलाषी ते तेरे लिए सुनोति तैयार कररहा है। इन्द्रः इन्द्र विश्वस्मात् विश्व से उत्-तरः अधिक उच्च है।

३६१;३६६/ या ओषधीः सोम-राज्ञीर्, बह्वीः शत-विचक्षणाः।
७४;८२ तासां त्वम् अस्य् उत्-तमा,रं कामाय शं हृदे। ऋ १०.९७.१८

याः ओषधीः जिन ओषधियों का सोम-राज्ञीः राजा सोम है, जो संख्या में बह्वीः बहुत हो, जिन ओषधियों की शत-विचक्षणाः सौ विविध-दृष्टियां हो तासाम् उनमें से त्वम् तू उत्-तमा असि उत्-तम ओषधि है—कामाय कामना की पूर्ति के लिए अरम् पर्याप्त है, हृदे हृदय के लिए शम् साक्षात् शांति है।

३६२/७५ देवाः! कपोत इषितो यद् इच्छन्,
दूतो निर्-ऋत्या इदम् आ-जगाम।
तस्मा अर्चाम कृणवाम निष्-कृतिं,
शं नो अस्तु द्वि-पदे शं चतुष्-पदे। ऋ १०.१६५.१

देवाः! हे देवो! निः-ऋत्याः निष्-क्रियता का दूतः दूत—कपोतः कपोत इषितः किसी मंशा से यत् जो इच्छन् चाहताहुआ इदम् इस स्थल पर आ-जगाम आ गया था तस्मै उसके लिए अर्चाम हम अर्चना करें और निः-कृतिम् कृणवाम निष्-क्रियता का संपादन करें—समाधिस्थ हो जाएँ। नः हमारे लिए शम् अस्तु

शान्ति होवे। द्वि-पदे दो पदों वाले के लिए और चतुः-पदे चार पदों वाले के लिए शम् शांति होवे।

३६३/७६ हेतिः पक्षिणी न दभात्यू अस्मान्,
आष्ट्र्यां पदं कृणुते अग्नि-धाने।
शं नो गोभ्यश् च पुरुषेभ्यश् चास्तु,
मा नो हिंसीद् इह देवाः! कपोतः। ऋ १०.१६५.३

पक्षिणीः विकल्पों भरी हेतिः हिंसा अस्मान् हमें न दभाति नहीं दबारही है। वह आष्ट्र्याम् अग्नि-धाने विस्तृत अग्नि-शाला में पदम् कृणुते प्रवेश कररही है। नः हमारे लिए, गोभ्यः च गौओं के लिए भी, पुरुषेभ्यः च पुरुषों के लिए भी शम् अस्तु शांति होवे। देवाः! हे देवो! कपोतः कपोत इह यहां नः हमें मा हिंसीत् न मारे।

३६४/७७ बृहस्पतिर् नयतु दुर्-गहा तिरः, पुनर् नेषद् अघ-शंसाय मन्म।
क्षिपद् अ+शस्तिम् अप दुर-मतिं हन्न्,
अथा करद् यजमानाय शं योः। ऋ १०.१८२.१

दुः-गहा बुराइयों पर निगाह रखनेवाला बृहस्पतिः बृहस्पति (बड़प्पन का रक्षक) सबको बुराइयों से तिरः परे नयतु ले जाए। अघ-शंसाय पाप की चर्चा में रस लेने वाले के लिए वह उसकी मन्म मननशीलता को पुनः पुनः नेषत् सक्रिय करे। अ-शस्तिम् पाप के प्रति चुप्पी को वह अप क्षिपत् परे तोड़ दे। दुः-मतिम् पाप-बुद्धि को अप हन् दूर हटा दे। अथ फिर यजमानाय यजमान के लिए शम् शांति को, योः अनु-आसक्ति को करत् करे।

३६५/७८ उप-हूता इह गाव, उप-हूता अजावयः। अथो अन्नस्य कीलाल, उप-हूतो गृहेषु नः। क्षेमाय वः शान्त्यै प्र पद्ये,

शिवं शग्मं शं-योः शं-योः। य ३.४३

इह यहां गावः गौओं को उप-हूताः अनुमति, अजावयः बकरे-भेड़ों को उप-हूताः अनुमति। अथ फिर नः गृहेषु हमारे घरों में अन्नस्य अन्न के कीलालः रस को भी उप-हूतः अनुमति। क्षेमाय रक्षा के लिए, शान्त्यै शांति के लिए वः तुम्हारी प्र पद्ये मो शरण (—प्र-पत्ति) में हूँ। शम्-योः शम्-योः प्रत्येक शं-अभिलाषी का शिवम् शिव हो, शग्मम् सुख हो।

३६६/७९ एदम् अगन्म देव-यजनं पृथिव्या,
यत्र देवासो अजुषन्त विश्वे।
ऋक्-सामाभ्यां सं-तरन्तो यजुर्-भी,
रायस् पोषेण सम् इषा मदेम।
इमा आपः शम् उ मे सन्तु देवीर्,
ओषधे! त्रायस्व स्व-धिते! मैनं हिंसीः। य ४.१

हम पृथिव्याः पृथिवी के देव-यजनम् देव-यजन स्थान पर आ अगन्म आ गए हो यत्र जहां विश्वे देवासः 'विश्व' देवों ने अजुषन्त प्रीति से हवि का सेवन किया है। ऋक्-सामाभ्याम् ऋक्-साम द्वारा, यजुः-भिः यजुओं द्वारा सम्-तरन्तः सं-तरण करतेहुए हमें रायः पोषेण जीवन-सुषमा के पोषण से, इषा अन्न से सम् मदेम सं-अर्चना करनी चाहिए। इमाः आपः देवीः ये जल देवियां मे मेरे लिए शम् उ सन्तु शं ही होवें। ओषधे! हे ओषधि! तुम त्रायस्व रक्षा करो। स्व-धिते! छुरी!—हे स्व-धारणाशक्ति—वैराग्यशस्त्र! एनम् इसे मा हिंसीः तुम मत मारो।

३६७/८० देवीर्! आप! एष वो गर्भस्, तं सु-प्रीतं सु-भृतं बिभृत।
देव! सोमैष ते लोकस्, तस्मिञ् छं च वक्ष्व परि च वक्ष्व।
य ८.२६

आपः! देवीः! हे जलो! हे देवियो! एषः यह वः तुम्हारा गर्भः

गर्भ—तम् सु-प्रीतम् उस 'सु' प्रीतिवाले, सु-भृतम् 'सु' पुष्ट गर्भ को बिभृत तुम भरण-पोषण करो। सोम! हे सोम! देव! हे देव! एषः यह ते लोकः तेरा लोक—तस्मिन् उसमें शम् शं को वक्ष्व च तुम ले भी जाओ और परि वक्ष्व च सर्वत्र पहुंचाओ भी।

३६८/८१ शं नो भवन्तु वाजिनो हवेषु, देव-ताता मित-द्रवः स्व्-अर्काः।
जम्भयन्तोहिं वृकं रक्षांसि, सनेम्य् अस्मद् युयवन्न् अमीवाः।
य ६.१६ मंत्र-संख्या ३३३ पर अर्थ मौजूद है।

३६६/८२ या ओषधीः सोम-राज्ञीर्, बह्वीः शत-विचक्षणाः।
तासाम् असि त्वम् उत्-तमा,रं कामाय शं हृदे। य १२.६२
मंत्र-संख्या ३६१ पर अर्थ मौजूद है।

३७०/८३ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने, क्षयद्-वीराय प्र भरामहे मतीः।
यथा शम् असद् द्वि-पदे चतुष्-पदे,
विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्न् अन्+आ-तुरम्। य १६.४८
मंत्र-संख्या २६४ पर अर्थ मौजूद है।

३७१/८४ शं च मे, मयश् च मे, प्रियं च मेनु-कामश् च मे, कामश् च मे, सौमनसश् च मे, भगश् च मे, द्रविणं च मे, भद्रं च मे, श्रेयश् च मे, वसीयश् च मे, यशश् च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्। य १८.८

यज्ञेन यज्ञ द्वारा कल्पन्ताम् समर्थ हो जाएं—मे मेरा शम् च शं भी, मे मयः च मेरा सुख भी, मे प्रियम् च मेरा प्रिय भी, मे अनु-कामः च मेरी पश्चाद्वर्त्ती कामना भी, मे कामः च मेरी कामना भी, मे सौमनसः च मेरी सु-मनस्कता भी, मे भगः च मेरा धन भी, मे द्रविणम् च मेरा नश्वर धन भी, मे भद्रम् च मेरा कल्याण भी, मे श्रेयः च मेरा श्रेयः भी, मे वसीयः च मेरा

निवास-स्थान भी, मे यशः च मेरा उदक/अन्न/धन भी।

३७२/८५ बर्हि-षदः पितर ऊत्य् अर्वाग्, इमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम्।
त आ गतावसा शं-तमेना,था नः शं योर् अ-रपो दधात।
य १९.५५ मंत्र-संख्या ३५६ पर अर्थ मौजूद है।

३७३/८६ शं नो भवन्तु वाजिनो हवेषु, देव-ताता मित-द्रवः स्व्-अर्काः।
जम्भयन्तोहिं वृकं रक्षांसि, सनेम्य् अस्मद् युयवन्न् अमीवाः।
य २१.१० मंत्र-संख्या ३३३ पर अर्थ मौजूद है।

३७४/८७ शं ते परेभ्यो गात्रेभ्यः, शम् अस्त्व् अवरेभ्यः।
शम् अस्थ-भ्यो मज्ज-भ्यः, शम् व् अस्तु तन्वै तव।
य २३.४४

ते तेरे परेभ्यः गात्रेभ्यः परवर्ती अवयवों के लिए शम् शं, अवरेभ्यः अवर अवयवों के लिए शम् अस्तु शं होवे। अस्थ-भ्यः अस्थियों के लिए, मज्जभ्यः मज्जाओं के लिए शम् शं होवे। तव तेरे तन्वै शरीर के लिए शम् उ शं ही अस्तु होवे।

३७५/८८ ब्रह्माणि मे मतयः शं सुतासः, शुष्म इयर्ति प्र-भृतो मे अद्रिः।
आ शासते प्रति हर्यन्त्य् उक्थे,मा हरी वहतस् ता नो अच्छ।
य ३३.७८ मंत्र-संख्या २६७ पर अर्थ मौजूद है।

३७६/८९ अन्व् इद् अनु-मते! त्वं, मन्यासै शं च नस् कृधि।
क्रत्वे दक्षाय नो हिनु, प्र ण आयूंषि तारिषः। य ३४.८

अनु-मते! हे अनु-मति! त्वम् तुम अनु मन्यासै इत् अनु-मतिवान्—जागरूक हो ही जाओ च और नः हमारे लिए शम् कृधि शं करो। क्रत्वे कर्म/प्र-ज्ञा के लिए, दक्षाय बल के लिए नः हमें हिनु तुम ले चलो। नः हमारी आयूंषि आयुओं को प्र तारिषः ख़ूब बढ़ाओ।

३७७/६० सविता ते शरीराणि, मातुर् उप-स्थ आ वपतु।
तस्मै पृथिवि! शं भव। य ३५.५

सविता सविता ते शरीराणि तेरे शरीरों को मातुः माता की उप-स्थे गोद में आ वपतु स्थिर करे। तस्मै उसके लिए पृथिवि! हे अन्तरिक्ष! तू शम् शं भव हो जा।

३७८/६१ शं वातः शं हि ते घृणिः, शं ते भवन्त्व् इष्टकाः।
शं ते भवन्त्व् अग्नयः, पार्थिवासो मा त्वाभि शूशुचन्।
य ३५.८

वातः वात शम् शं हो हि क्यों कि ते तेरे लिए घृणिः दिन शम् शं है। इष्टकाः ईंटें ते तेरे लिए शम् भवन्तु शं हों। अग्नयः अग्नि ते तेरे लिए शं भवन्तु शम् होवें। पार्थिवासः अन्तरिक्ष के तत्त्व त्वा तुझे मा अभि शूशुचन् अभि-शोक न दें।

३७९/६२ यन् मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वा,ति-तृण्णं बृहस्पतिर् मे तद् दधातु। शं नो भवतु भुवनस्य यस् पतिः। य ३६.२

यत् जो मे मेरे चक्षुषः चक्षु का छिद्रम् छिद्र, हृदयस्य हृदय का छिद्र वा या मनसः मन का अति-तृण्णम् अति-विदीर्ण छिद्र है, मे मेरे तत् उस छिद्र को बृहस्-पतिः महान् रक्षक दधातु संभाले। भुवनस्य उदक का यः जो पतिः रक्षक है, वह नः हमारे लिए शम् भवतु शं होवे।

३८०/६३ इन्द्रो विश्वस्य राजति। शं नो अस्तु द्वि-पदे शं चतुष्-पदे।
य ३६.८

इन्द्रः इन्द्र विश्वस्य विश्व का राजति जगमगाता स्वामी है। नः हमारे लिए—द्वि-पदे दो पदों वाले के लिए शम् अस्तु शं हो, चतुः-पदे चार पदों वाले के लिए शम् शं हो।

३८१/६४ शं नो मित्रः शं वरुणः, शं नो भवत्व् अर्यमा।

शं न इन्द्रो बृहस्पतिः, शं नो विष्णुर् उरु-क्रमः। य ३६.९

मंत्र-संख्या २९१ पर अर्थ मौजूद है।

३८२/९५ शं नो वातः पवतां, शं नस् तपतु सूर्यः।
शं नः कनिक्रदद् देवः, पर्जन्यो अभि वर्षतु। य ३६.१०

वातः वात नः हमारे लिए शम् शं होतेहुए पवताम् बहे। सूर्यः सूर्य नः हमारे लिए शम् शं होतेहुए तपतु तपे। कनिक्रदत् देवः गर्जनशील देव पर्जन्यः पर्जन्य नः हमारे लिए शम् शं होतेहुए अभि वर्षतु सर्वत्र वृष्टि करे।

३८३/९६ अहानि शं भवन्तु नः, शं रात्रीः प्रति धीयताम्। शं न इन्द्राग्नी भवताम् अवो-भिः, शं न इन्द्रावरुणा रात-हव्या। शं न इन्द्रापूषणा वाज-सातौ, शम् इन्द्रासोमा सुविताय शं योः। य ३६.११

अहानि दिन नः हमारे लिए शम् भवन्तु शं होवें। रात्रीः रात्रियों को शम् शं-पूर्वक प्रति धीयताम् वह स्थापित करे। इन्द्राग्नी इन्द्र-अग्नि अवः-भिः अपनी रक्षाओं द्वारा नः हमारे लिए शम् भवताम् शं होवें। रात-हव्या हव्यों को जिनके लिए दिया जा चुका है वे इन्द्रा-वरुणा इन्द्र-वरुण नः हमारे लिए शम् शं होवें। वाज-सातौ अन्न/बल के दान में निमित्त बनेहुए इन्द्रा-पूषणा इन्द्र-पूषा नः हमारे लिए शम् शं होवें। इन्द्रा-सोमा इन्द्र-सोम सुविताय सु-गमता के लिए शम् शं होवें, योः वैराग्य होवें।

३८४/९७ शं नो देवीर् अभिष्टय, आपो भवन्तु पीतये। शं योर् अभि स्रवन्तु नः। य ३६.१२ मंत्र-संख्या ३५५ पर अर्थ मौजूद है।

३८५/९८ यतो-यतः सम्-ईहसे, ततो नो अभयं कुरु।
शं नः कुरु प्र-जाभ्यो,भयं नः पशु-भ्यः। य ३६.२२

यतः-यतः जिस जिस हेतु से तू सम्-ईहसे सं-प्रयत्न कररहा

है ततः उससे नः हमारे लिए अ-भयम् कुरु तू भय-रहितता को कर। नः प्र-जाभ्यः हम प्र-जाओं के लिए तू शम् कुरु शं को कर, नः पशु-भ्यः हम पशुओं—भोग-दर्शियों के लिए तू अ-भयम् भय-रहितता को कर।

३८६/९९ दिवि धा इमं यज्ञम्, इमं यज्ञं दिवि धाः।
स्वाहाग्नये यज्ञियाय, शम् यजुर्-भ्यः। य ३८.११
दिवि द्यौ पर धाः तू धर दे इमम् यज्ञम् इस यज्ञ को। इमम् यज्ञम् इस यज्ञ को दिवि द्यौ पर धाः तू धर दे। यज्ञियाय अग्नये यज्ञिय अग्नि के लिए स्वा मेरी—अन्तर्वाणी ने यह आह कहा है। यजुः-भ्यः यजुओं के लिए शम् शं होवे।

३८७/१०० शं नो देवीर् अभिष्टये, शं नो भवन्तु पीतये।
शं योर् अभि स्रवन्तु नः। सा ३३
मंत्र-संख्या ३५५ पर अर्थ मौजूद है।

३८८/१०१ तद् वो गाय सुते सचा, पुरु-हूताय सत्वने।
शं यद् गवे न शाकिने। सा ११५
मंत्र-संख्या ३१६ पर अर्थ मौजूद है।

३८९/१०२ शं पदं मघं रयीषिणे, न कामम् अव्रतो हिनोति,
न स्पृशद् रयिम्। सा ४४१
शम् पदम् शं अवस्था रयीषणे धनैषणा-वान् के लिए मघम् अभीष्ट धन है। अव्रतः व्रत-हीन कामम् इस कामना को न हिनोति नहीं पाता है, न न रयिम् धन को स्पृशत् वह छू पाता है।

३९०/१०३ स नः पवस्व शं गवे, शं जनाय शम् अर्वते। शं राजन्न् ओषधीभ्यः। सा ६२२
मंत्र-संख्या ३४८ पर अर्थ मौजूद है।

३६१/१०४ शुक्रः पवस्व देवेभ्यः सोम!। दिवे पृथिव्यै शं च प्रजा-भ्यः।
सा १२४२ मंत्र-संख्या ३५४ पर अर्थ मौजूद है।

३६२/१०५ अर्षा नः सोम! शं गवे, धुक्षस्व पिप्युषीम् इषम्।
वर्धा समुद्रम् उक्थ्यः। सा १३३७
मंत्र-संख्या ३५१ पर अर्थ मौजूद है।

३६३/१०६ अमित्र-हा वि-चर्षणिः, पवस्व सोम! शं गवे!।
देवेभ्यो अनुकाम-कृत्। सा १४४७;
मंत्र-संख्या ३४६ पर अर्थ मौजूद है।

३६४/१०७ तद् वो गाय सुते सचा, पुरु-हूताय सत्वने।
शं यद् गवे न शाकिने। सा १६६६
मंत्र-संख्या ३१६ पर अर्थ मौजूद है।

३६५/१०८ अर्वाङ् त्रि-चक्रो मधु-वाहनो रथो,
जीराश्वो अश्विनोर् यातु सु-ष्टुतः।
त्रि-वन्धुरो मघवा विश्व-सौभगः,
शं न आ वक्षद् द्वि-पदे चतुष्-पदे। सा १७६०
मंत्र-संख्या २६६ पर अर्थ मौजूद है।

३६६/१०६ शं नो देवीर् अभिष्टय, आपो भवन्तु पीतये। शं योर् अभि स्रवन्तु नः। अ १.६.१ मंत्र-संख्या ३५५ पर अर्थ मौजूद है।

३६७/११० शं न आपो धन्वन्याः, शम् उ सन्त्व् अनूप्याः।
शं नः खनित्रिमा आपः, शम् उ याः कुम्भ आ-भृताः,
शिवा नः सन्तु वार्षिकीः। अ १.६.४

धन्वन्याः मरुभूमि के आपः जल नः हमारे लिए शम् शं हों, अनूप्याः दल-दली भूमि के जल शम् उ सन्तु शं ही हों। खनित्रिमाः खोदने

से प्राप्य आपः जल नः हमारे लिए शम् शं हों। याः जो कुम्भे घड़े में आ-भृताः आ-पूर्ण जल हों वे शम् उ शं ही हों। वार्षिकीः वर्षा-जल नः हमारे लिए शिवाः सन्तु शिव हों।

३६८/१११ शं मे परस्मै गात्राय, शम् अस्त्व् अवराय मे।
शं मे चतुर्-भ्यो अङ्गेभ्यः, शम् अस्तु तन्वे मम।
अ १.१२.४

मे मेरे परस्मै गात्राय परवर्ती अवयव के लिए शम् शं, मे मेरे अवराय अवर अवयव के लिए शम् अस्तु शं हो। मे मेरे चतुः-भ्यः अंगेभ्यः चारों अंगों के लिए शम् शं हो, मम मेरे तन्वे शरीर के लिए शम् अस्तु शं हो।

३६६/११२ हिरण्य-वर्णाः शुचयः पावका,
यासु जातः सविता यास्व् अग्निः।
या अग्निं गर्भं दधिरे सु-वर्णास्,
ता न आपः शं स्योना भवन्तु। अ १.३३.१

याः सु-वर्णाः जिन 'सु' वर्ण वालियों ने अग्निम् अग्नि को गर्भम् गर्भ रूप में दधिरे धारण किया था ताः आपः वे जल नः हमारे लिए शम् शं और स्योनाः सुख-मय भवन्तु हो जाएँ—हिरण्य-वर्णाः हिरण्य वर्ण वाले, शुचयः उजले, पावकाः शोधक जल यासु जिनमें सविता जातः सविता जन्मा था, यासु जिनमें अग्निः अग्नि जन्मा था।

४००/११३ यासां राजा वरुणो याति मध्ये, सत्यानृते अव-पश्यन् जनानाम्।
या अग्निं गर्भं दधिरे सु-वर्णास्,
ता न आपः शं स्योना भवन्तु। अ १.३३.२

याः सु-वर्णाः जिन 'सु' वर्ण वालियों ने अग्निम् अग्नि को

गर्भम् गर्भ रूप में दधिरे धारण किया था ताः आपः वे जल नः

हमारे लिए शम् शं और स्योनाः सुख-मय भवन्तु हो जाएं—यासाम् मध्ये जिनके मध्य में राजा वरुणः राजा वरुण, जनानाम् जनों के सत्य-अनृते सत्य और ऋत-हीनता को अव-पश्यन् अव-दर्शन करतेहुए, याति घूमरहा है।

४०१/११४ यासां देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं, या अन्तरिक्षे बहु-धा भवन्ति।
या अग्निं गर्भं दधिरे सु-वर्णास्,
ता न आपः शं स्योना भवन्तु। अ १.३३.३

याः सु-वर्णाः जिन 'सु' वर्ण वालियों ने अग्निम् अग्नि को गर्भम् गर्भ रूप में दधिरे धारण किया था ताः आपः वे जल नः हमारे लिए शम् शं और स्योनाः सुख-मय भवन्तु हो जाएं—यासाम् जिनका देवाः देव दिवि द्यौ में भक्षम् कृण्वन्ति भक्षण करते हो, याः जो अन्तरिक्षे अन्तरिक्ष में बहु-धा बहु-विध भवन्ति हो जाते हो।

४०२/११५ शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः!, शिवया तन्वोप स्पृशत त्वचं मे।
घृत-श्चुतः शुचयो याः पावकास्,
ता न आपः शं स्योना भवन्तु। अ १.३३.४

ताः आपः वे जल नः हमारे लिए शम् शं और स्योनाः सुख-मय भवन्तु हो जाएं याः घृत-श्चुतः जो घृत चुआनेवाले, शुचयः उजले, पावकाः शोधक हो। आपः! हे जलो! शिवेन चक्षुषा शिव चक्षु द्वारा मा मुझे पश्यत तुम देखो, शिवया तन्वा शिव शरीर द्वारा मे मेरी त्वचम् त्वचा को तुम उप स्पृशत उप-स्पर्श करो।

४०३/११६ शं नो भवन्त्व् अप ओषधयः शिवाः।
इन्द्रस्य वज्रो अप हन्तु रक्षस,
आराद् वि-सृष्टा इषवः पतन्तु रक्षसाम्। अ २.३.६

अपः जलों के प्रति ओषधयः ओषधियां नः हमारी ख़ातिर शम् शं और शिवाः शिव भवन्तु हो जाएं। इन्द्रस्य वज्रः इन्द्र का

वज्र रक्षसः बाधकों को अप हन्तु परे ही मार देवे। रक्षसाम् बाधकों के वि-सृष्टाः इषवः छोड़ेहुए तीर आरात् दूरी पर पतन्तु गिरें।

४०४/११७ शं ते अग्निः सहाद्-भिर् अस्तु, शं सोमः सहौषधीभिः। एवाहं त्वां क्षेत्रियान् निर्-ऋत्या जामि-शंसाद्, द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्। अन्+आगसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम्। अ २.१०.२

ब्रह्मणा जल/अन्न/धन द्वारा त्वा तुझे मैं अन्-आगसम् पाप-रहित कृणोमि कररहा हूँ। द्यावा-पृथिवी द्यौ-पृथिवी, उभे दोनों ते तेरे लिए शिवे स्ताम् शिव होवें। त्वाम् तुझे लक्ष्य करके अहम् मैं मुञ्चामि एव छूट ही रहा हूं क्षेत्रियात् क्षेत्रगत विकार से, निः-ऋत्या ऋति-हीनता से, जामि-शंसात् सह-जन्माओं के कथन से, द्रुहः द्रोह से, वरुणस्य पाशात् वरुण के फन्दे से। अत्-भिः सह जलों के साथ अग्निः अग्नि ते तेरे लिए शम् अस्तु शं हो, सोमः सोम ओषधीभिः सह ओषधियों के साथ शम् शं होवे।

४०५/११८ शं ते वातो अन्तरिक्षे वयो धाच्, छं ते भवन्तु प्र-दिशश् चतस्रः। एवाहं त्वां क्षेत्रियान् निर्-ऋत्या जामि-शंसाद्, द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्। अन्+आगसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि, शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम्। अ २.१०.३

ब्रह्मणा जल/अन्न/धन द्वारा त्वा तुझे मैं अन्-आगसम् पाप-रहित कृणोमि कररहा हूं। द्यावा-पृथिवी द्यौ-पृथिवी, उभे दोनों ते तेरे लिए शिवे स्ताम् शिव होवें। त्वाम् तुझे लक्ष्य करके अहम् मैं मुञ्चामि एव छूट ही रहा हूं क्षेत्रियात् क्षेत्रगत विकार से, निः-ऋत्याः ऋति-हीनता से, जामि-शंसात् सह-जन्माओं के कथन से, द्रुहः द्रोह से, वरुणस्य पाशात्

वरुण के फन्दे से। वातः वात अन्तरिक्षे अन्तरिक्ष में ते तेरे लिए शम् शं को, वयः उम्र को धातु स्थिर करे। चतस्रः चार प्र-दिशः प्र-दिशाएँ ते तेरे लिए शम् भवन्तु शं हो जाएँ।

४०६/११६ शं नो देवी पृश्नि-पर्ण्य् अ-शं निर्-ऋत्या अकः।
उग्रा हि कण्व-जम्भनी, ताम् अभक्षि सहस्+वतीम्।
अ २.२५.१

पृश्नि-पर्णी देवी चितकबरे पत्तों वाली देवी ने नः हमारे लिए शम् शं को बनाया, निः-ऋत्यै ऋति-हीनता के लिए अ-शम् शं-हीनता को अकः किया। हि क्यों कि कण्व-जम्भनी कण्व की नाशयित्री उग्रा उग्र है, ताम् सहस्-वतीम् उस बल-वती का अभक्षि मैंने भक्षण किया है।

४०७/१२० मध्वा पृञ्चे नद्यः, पर्वता गिरयो मधु।
मधु परुष्णी शीपाला, शम् आस्ने अस्तु शं हृदे। अ ६.१२.३

मध्वा मधु द्वारा पृञ्चे मैं लेप कररहा हूँ। नद्यः नदियां, पर्वताः पर्वत, गिरयः गिरि मधु मधु हैं। शीपाला शैवालयुक्त परुष्णी परुष्णी नामक नदी मधु मधु है। आस्ने मुख के लिए शम् अस्तु शांति हो, हृदे हृदय के लिए शम् शांति हो।

४०८/१२१ देवस्य सवितुः सवे, कर्म कृण्वन्तु मानुषाः।
शं नो भवन्त्व् अप, ओषधीः शिवाः। अ ६.२३.३

सवितुः देवस्य सविता देव की सवे प्रेरणा पर मानुषाः मनुष्य कर्म कृण्वन्तु कर्म करें। आपः जल नः हमारे लिए शम् भवन्तु शं हो जाएं, ओषधीः ओषधियां शिवाः शिव हो जाएं।

४०९/१२२ शं च नो मयश् च नो, मा च नः किं चनाममत्।
क्षमा रपो विश्वं नो अस्तु भेषजं, सर्वं नो अस्तु भेषजम्।

अ ६.५७.३

शम् च शं भी नः हमारे लिए, मयः च सुख भी नः हमारे

लिए। च और नः हमारे लिए किम् चन कोई भी मा आममत् रोग न होवे। रपः पाप क्षमा सह्य होवे। विश्वम् विश्व—अन्तःकरण नः हमारे लिए भेषजम् अस्तु ओषधि होवे, सर्वम् सब—बहिर्-जगत् नः हमारे लिए भेषजम् अस्तु ओषधि होवे।

४१०/१२३अन्व् इद् अनु-मते! त्वं, मंससे शं च नस् कृधि।
जुषस्व हव्यम् आ-हुतं, प्र-जां देवि! ररास्व नः। अ ७.२०.२

अनु-मते! हे अनु-मति! त्वम् तुम अनु मंससे इत् अनु-मति दे ही दो च और नः हमारे लिए शम् कृधि शांति को करो। आ-हुतम् हव्यम् आ-हुत हव्य को जुषस्व स-प्रीति सेवन करो। देवि! हे देवी! तुम नः हमारे लिए प्र-जाम् प्र-जा को ररास्व दो।

४११/१२४शं नो वातो वातु, शं नस् तपतु सूर्यः। अहानि शं
भवन्तु नः, शं रात्री प्रति धीयतां,
शम् उषा नो व्य् उच्छतु। अ ७.६६.१

वातः वात नः हमारे लिए शम् शान्ति-पूर्वक वातु बहे। सूर्यः सूर्य नः हमारे लिए शम् शांति-सहित तपतु तपे। नः हमारे लिए अहानि दिन शम् शांति भवन्तु हो जाएं। रात्री रात्रि शम् शान्ति के साथ प्रति धीयताम् प्रति-ष्ठित होवे। उषाः उषा नः हमारे लिए शम् शांति के साथ वि उच्छतु चमके।

४१२/१२५ तुभ्यं वातः पवतां मातरिश्वा, तुभ्यं वर्षन्त्व् अमृतान्य् आपः।
सूर्यस् ते तन्वे शं तपाति, त्वां मृत्युर् दयतां मा प्र मेष्ठाः।
अ ८.१.५

मातरि-श्वा माता में श्वास लेनेवाला वातः वात तुभ्यम् तेरे लिए पवताम् बहे। आपः जल तुभ्यम् तेरे लिए अमृतानि मृत भाव से रहित तत्त्वों को देतेहुए वर्षन्तु बरसें। सूर्यः सूर्य ते

तन्वे तेरे शरीर के लिए शम् शांति-पूर्वक तपाति तपे। मृत्युः मृत्यु त्वाम् तुझ पर दयताम् दया करे। मा प्र मेष्ठाः तू बिलकुल मत मर।

४१३/१२६ शिवे ते स्तां द्यावापृथिवी, अ+सं-तापे अभि-श्रियौ।
शं ते सूर्य आ तपतु, शं वातो वातु ते हृदे।
शिवा अभि क्षरन्तु त्वापो दिव्याः पयस्वतीः। अ ८.२.१४

ते तेरे लिए द्यावा-पृथिवी द्यौ-पृथिवी शिवे स्ताम् शिव होवें—अ-सम्-तापे संताप-रहित, अभि-श्रियौ श्री-युक्त होवें। ते तेरे लिए सूर्यः सूर्य शम् शं-पूर्वक आ तपतु ख़ूब तपे। ते हृदे तेरे हृदय के लिए वातः वात शम् शं-सहित वातु बहे। दिव्याः द्यौ पर स्थित, पयस्वतीः चिकनाई वाले, शिवाः आपः शिव जल त्वा तेरी ओर अभि दोनों ओर से क्षरन्तु बहें।

४१४/१२७ या रोहन्त्य् आङ्गिरसीः, पर्वतेषु समेषु च।
ता नः पयस्-वतीः शिवा, ओषधीः सन्तु शं हृदे।
अ ८.७.१७

पर्वतेषु पर्वतों पर च और समेषु मैदानों में याः जो आङ्गिरसीः अंगिराओं की ओषधियां रोहन्ति उगरही हो ताः वे पयस्वतीः चिकनाई वाली, शिवाः ओषधीः शिव ओषधियां नः हमारे लिए—हृदे हृदये के लिए शम् सन्तु शं होवें।

४१५/१२८ शं त आपो हैमवतीः, शम् उ ते सन्तूत्स्याः।
शं ते सनिष्य-दा आपः, शम् उ ते सन्तु वर्ष्याः।
अ १९.२.१

शम् शं होवें ते तेरे लिए हैम-वतीः आपः बर्फ़ीले जल, शम् उ शं ही सन्तु होवें ते तेरे लिए उत्स्याः स्रोत के जल। शम् शं होवें ते तेरे लिए सनिष्य-दाः आपः बहतेहुए जल; शम् उ शं ही ते तेरे लिए सन्तु होवें वर्ष्याः वृष्टि के जल।

४१६/१२६ शं त आपो धन्वन्याः, शं ते सन्त्व् अनूप्याः।
शं ते खनित्रिमा आपः, शं याः कुम्भेभिर् आ-भृताः।
अ १६.२.२

शम् शं होवें ते तेरे लिए धन्वन्याः आपः मरुभूमि के जल; शम् सन्तु शं होवें ते तेरे लिए अनूप्याः दल-दल के पानी। शम् शं होवें ते तेरे लिए खनित्रिमाः आपः खनि-ज (नहर, कूप, आदि के) जल; शम् शं होवें वे जल याः जो कुम्भेभिः घड़ों द्वारा आ-भृताः आ-गृहीत हो।

४१७/१३० सु-हवम् अग्ने! कृत्तिका रोहिणी,
चास्तु भद्रं मृग-शिरः शम् आर्द्रा।
पुनर्-वसू सूनृता चारु पुष्यो,
भानुर् आ-श्लेषा अयनं मघा मे। अ १६.७.२

अग्ने! हे अग्नि! कृत्तिकाः कृत्तिकाएं, रोहिणी रोहिणी (नक्षत्र) मेरे लिए सु-हवम् सु आह्वानयोग्य होवे। च और अस्तु होवे भद्रम् भद्र मृग-शिरः मृगशिरा (नक्षत्र), शम् शं होवे आर्द्रा आर्द्रा (नक्षत्र)। पुनः-वसू पुनर्-वसुद्वय (नक्षत्र) सूनृता उषामयी/अन्न होवे, पुष्यः पुष्य (नक्षत्र) चारु चारु होवे; आ-श्लेषाः आ-श्लेषाएं (नक्षत्र) भानुः भानु होवें, मघा मघा (नक्षत्र) मे मेरे लिए अयनम् प्रगति होवे।

४१८/१३१ शं नो मित्रः शं वरुणः, शं विष्णुः शं प्रजा-पतिः।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः, शं नो भवत्व् अर्यमा। अ १६.६.६

मंत्र-संख्या २६१ पर अर्थ मौजूद है।

४१६/१३२ शं नो मित्रः शं वरुणः, शं विवस्वाँ छम् अन्तकः।
उत्-पाताः पार्थिवान्तरिक्षाः, शं नो दिवि-चरा ग्रहाः।
अ १६.६.७

शम् शं हो जाए नः हमारे लिए मित्रः मित्र देव, शम् शं होवे वरुणः वरुण, शम् शं होवे विवस्वान् विवस्वान्, शम् शं होवे अन्तकः अन्त

करनेवाला। पार्थिवाः पृथिवी के, आन्तरिक्षाः अन्तरिक्ष के उत्-पाताः उत्-पात, दिवि-चराः ग्रहाः द्यु-चारी ग्रह नः हमारे लिए शम् शं होवें।

४२०/१३३ शं नो भूमिर् वेप्यमाना, शम् उल्का निर्-हतं च यत्।
शं गावो लोहित-क्षीराः, शं भूमिर् अव-तीर्यतीः। अ १९.९८

शम् शं होवे नः हमारे लिए वेप्यमाना भूमिः कंपाई जारही भूमि। शम् शं होवे उल्का उल्का च और यत् जो निः-हतम् निर्-हत है वह। लोहित-क्षीराः गावः रक्त-क्षीरा गौएँ शम् शं होवें। अव-तीर्यतीः भूमिः ढाल वाली भूमि शम् शं होवे।

४२१/१३४ नक्षत्रम् उल्काभि-हतं शम् अस्तु नः,
शं नोभि-चाराः शम् उ सन्तु कृत्याः।
शं नो नि-खाता वल्गाः शम् उल्का,
देशोप-सर्गाः शम् उ नो भवन्तु। अ १९.९.९

उल्का-अभि-हतम् उल्का द्वारा चोट खायाहुआ नक्षत्रम् नक्षत्र नः हमारे लिए शम् अस्तु शं होवे। नः हमारे लिए अभि-चाराः अभि-चार शम् शं होवें, कृत्याः कृत्याएँ शम् उ शं ही सन्तु होवें। नि-खाताः गहरे गाढ़ेहुए वल्गाः अशुभ पदार्थ नः हमारे लिए शम् शं होवें, उल्काः उल्काएँ शम् शं होवें, देशोप-सर्गाः देशोपद्रव नः हमारे लिए शम् उ भवन्तु शं ही हो जाएं।

४२२/१३५ शं नो ग्रहाश् चान्द्रमसाः, शम् आदित्यश् च राहुणा।
शं नो मृत्युर् धूम-केतुः, शं रुद्रास् तिग्म-तेजसः।
अ १९.९.१०

चान्द्रमसाः ग्रहाः चन्द्रमा-वाले ग्रह (भूमि, शनिश्चर, आदि) नः हमारे लिए शम् शं होवें। च और राहुणा राहु के साथ आदित्यः आदित्य शम् शं होवे। धूम-केतुः मृत्युः धूम-केतु मृत्यु नः हमारे लिए शम् शं होवे, तिग्म-तेजसः रुद्राः तीव्र तेज वाले रुद्र शम् शं होवें।

४२३/१३६ शं रुद्राः शं वसवः, शम् आदित्याः शम् अग्नयः।
शं नो महर्षयो देवाः, शं देवाः शं बृहस्पतिः। अ १६.६.११

रुद्राः रुद्र शम् शं होवें, वसवः वसु शम् शं होवें; आदित्याः आदित्य शम् शं होवें, अग्नयः अग्नि शम् शं होवें। देवाः महर्षयः देव कोटि के महर्षि नः हमारे लिए शम् शं हों; देवाः देव शम् शं हों, बृहस्पतिः बृहस्पति शम् शं हो।

४२४/१३७ शं न इन्द्राग्नी भवताम् अवोभिः, शं न इन्द्रावरुणा रात-हव्या।
शम् इन्द्रासोमा सुविताय शं योः, शं न इन्द्रापूषणा वाज-सातौ।
अ १६.१०.१ मंत्र-संख्या ३२० पर अर्थ मौजूद है।

४२५/१३८ शं नो भगः शम् उ नः शंसो अस्तु,
शं नः पुरं-धिः शम् उ सन्तु रायः।
शं नः सत्यस्य सु-यमस्य शंसः,
शं नो अर्यमा पुरु-जातो अस्तु। अ १६.१०.२
मंत्र-संख्या ३२१ पर अर्थ मौजूद है।

४२६/१३६ शं नो धाता शम् उ धर्ता नो अस्तु,
शं न उरुची भवतु स्वधाभिः।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः,
शं नो देवानां सु-हवानि सन्तु। अ १६.१०.३
मंत्र-संख्या ३२२ पर अर्थ मौजूद है।

४२७/१४० शं नो अग्निर् ज्योतिर्-अनीको अस्तु,
शं नो मित्रावरुणाव् अश्विना शम्।
शं नः सु-कृतां सु-कृतानि सन्तु,
शं न इषिरो अभि वातु वातः। अ १६.१०.४

मंत्र-संख्या ३२३ पर अर्थ मौजूद है।

४२८/१४१ शं नो द्यावापृथिवी पूर्व-हूतौ, शम् अन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु।
शं न ओषधीर् वनिनो भवन्तु,
शं नो रजसस् पतिर् अस्तु जिष्णुः। अ १६.१०.५
मंत्र-संख्या ३२४ पर अर्थ मौजूद है।

४२६/१४२ शं न इन्द्रो वसु-भिर् देवो अस्तु,
शम् आदित्येभिर् वरुणः सु-शंसः।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर् जलाषः,
शं नस् त्वष्टा ग्नाभिर् इह शृणोतु। अ १६.१०.६
मंत्र-संख्या ३२५ पर अर्थ मौजूद है।

४३०/१४३ शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः,
शं नो ग्रावाणः शम् उ सन्तु यज्ञाः।
शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु,
शं नः प्र-स्वः शम् व् अस्तु वेदिः। अ १६.१०.७
मंत्र-संख्या ३२६ पर अर्थ मौजूद है।

४३१/१४४ शं नः सूर्य उरु-चक्षा उद् एतु,
शं नो भवन्तु प्र-दिशश् चतस्रः।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु,
शं नः सिन्धवः शम् उ सन्त्व् आपः। अ १६.१०.८
मंत्र-संख्या ३२७ पर अर्थ मौजूद है।

४३२/१४५ शं नो अदितिर् भवतु व्रतेभिः,
शं नो भवन्तु मरुतः स्व्-अर्काः।
शं नो विष्णुः शम् उ पूषा नो अस्तु,
शं नो भवित्रं शम् व् अस्तु वायुः। अ १६.१०.६
मंत्र-संख्या ३२८ पर अर्थ मौजूद है।

४३३/१४६ शं नो देवः सविता त्रायमाणः, शं नो भवन्तूषसो वि-भातीः।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्र-जाभ्यः, शं नः क्षेत्रस्य पतिर्
अस्तु शं-भुः। अ १६.१०.१० मंत्र-संख्या ३२६ पर अर्थ मौजूद है।

४३४/१४७ शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु, शं नो अर्वन्तः शम् उ सन्तु गावः।
शं न ऋभवः सु-कृतः सु-हस्ताः, शं नो भवन्तु पितरो हवेषु।
अ १६.११.१ मंत्र-संख्या ३३१ पर अर्थ मौजूद है।

४३५/१४८ शं नो देवा विश्व-देवा भवन्तु, शं सरस्वती सह धीभिर् अस्तु।
शम् अभि-षाचः शम् उ राति-षाचः,
शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः। अ १६.११.२
मंत्र-संख्या ३३० पर अर्थ मौजूद है।

४३६/१४६ शं नो अज एक-पाद् देवो अस्तु, शम् अहिर् बुध्न्यः शं समुद्रः।
शं नो अपां नपात् पेरुर् अस्तु,
शं नः पृश्निर् भवतु देव-गोपा। अ १६.११.३
मंत्र-संख्या ३३२ पर अर्थ मौजूद है।

४३७/१५० तद् अस्तु मित्रावरुणा! तद् अग्ने!,
शं योर् अस्मभ्यम् इदम् अस्तु शस्तम्।
अशीमहि गाधम् उत प्रति-ष्ठां,
नमो दिवे बृहते सादनाय। अ १६.११.६
मंत्र-संख्या ३०६ पर अर्थ मौजूद है।

४३८/१५१ मा नो मेधां मा नो दीक्षां, मा नो हिंसिष्टं यत् तपः।
शिवा नः शं सन्त्व् आयुषे, शिवा भवन्तु मातरः।
अ १६.४०.३

तुम दोनों मा न तो नः मेधाम् हमारी मेधा को, मा न नः दीक्षाम्

हमारी दीक्षा को, मा न यत् जो भी नः तपः हमारा तप है उसे

हिंसिष्टम् तुम चोट पहुंचाओ। नः शिवाः हमारी शिवाएँ आयुषे अन्न के लिए शम् सन्तु शं होवें। मातरः माताएँ शिवाः भवन्तु शिव हों।

४३९/१५२ आयुषोसि प्र-तरणं, विप्रं भेषजम् उच्यसे।
तद् आञ्जन! त्वं शं-ताते, शम् आपो अ+भयं कृतम्।
अ १९.४४.१

तू आयुषः आयु को प्र-तरणम् खूब बढ़ानेवाला असि है। तू विप्रम् विप्र कोटि की भेषजम् ओषधि उच्यसे कहाता है। तत् तो, आ-अञ्जन! हे आ-अञ्जन! शम्-ताते! हे शं के प्रसार! त्वम् तू, आपः जल, अ-भयम् अ-भयत्व, कृतम् कृत—ये सब शम् शं हो जाएं।

४४०/१५३ स्वादुष् टे अस्तु सं-सुदे, मधुमान् तन्वे तव।
सोमः शम् अस्तु ते हृदे। अ २०.४.३

मंत्र-संख्या ३४० पर अर्थ मौजूद है।

४४१/१५४ आ त्वा विशन्त्व् आशवः, सोमास इन्द्र! गिर्वणः।
शं ते सन्तु प्र-चेतसे। अ २०.६९.५

मंत्र-संख्या २८८ पर अर्थ मौजूद है।

४४२/१५५ तद् वो गाय सुते सचा, पुरु-हूताय सत्वने।
शं यद् गवे न शाकिने। अ २०.७८.१

मंत्र-संख्या ३१६ पर अर्थ मौजूद है।

४४३/१५६ वृषभो न तिग्म-शृङ्गो,न्तर् यूथेषु रोरुवत्।
मन्थस् त इन्द्र! शं हृदे, यं ते सुनोति भावयुर्,
विश्वस्माद् इन्द्र उत्-तरः। अ २०.१२६.१५

मंत्र-संख्या ३६० पर अर्थ मौजूद है।

भूर् भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्र-चोदयात्। य ३६.३

'शान्ति'-आ-हुतियां

४४४/१ द्यौः शान्तिर्, अन्तरिक्षं शान्तिः, पृथिवी शान्तिर्, आपः शान्तिर्, ओष+धयः शान्तिः। वनस्+पतयः शान्तिर्, विश्वे देवाः शान्तिर्, ब्रह्म शान्तिः, सर्वं शान्तिः, शान्तिर् एव शान्तिः, सा मा शान्तिर् एधि। य ३६.१७

शान्तिः द्यौः **शांति द्यौ है,** शान्तिः अन्तरिक्षम् **शांति अन्तरिक्ष है,** शान्तिः पृथिवी **शांति पृथिवी है,** शान्तिः आपः **शांति जल है,** शान्तिः ओष-धयः **शांति ओष-धियां है।** शान्तिः वनस्-पतयः **शांति वनस्-पति है;** शान्तिः विश्वे देवाः **शांति 'विश्व' देव है,** शान्तिः ब्रह्म **शांति जल/अन्न/धन है,** शान्तिः सर्वम् **शांति सब कुछ है,** शान्तिः **शांति तो अद्वितीय**—शान्तिः एव **शांति ही है।** सा शान्तिः **वह शांति** मा एधि **मुझे मिल जाए।**

४४५/२ शान्ता द्यौः शान्ता पृथिवी, शान्तम् इदम् उर्व् अन्तरिक्षम्। शान्ता उदन्वतीर् आपः, शान्ता नः सन्त्व् ओषधीः।
अ १९.९.१

शान्ता **शांत होवे** द्यौः **द्यौ,** शान्ता **शांत होवे** पृथिवी **पृथिवी,** शान्तम् **शांत होवे** इदम् **यह** उरु **अन्तरिक्षम् विराट् अन्तरिक्ष।** शान्ताः **शांत होवें** उदन्वतीः आपः **नमीवाले जल,** शान्ताः सन्तु **शांत होवें** नः **हमारे लिए** ओष-धीः **ओष-धियां।**

४४६/३ शान्तानि पूर्व-रूपाणि, शान्तं नो अस्तु कृताकृतम्। शान्तं भूतं च भव्यं च, सर्वम् एव शम् अस्तु नः।
अ १९.९.२

शान्तानि **शांत होवें** पूर्व-रूपाणि **पूर्व-रूप,** शान्तम् अस्तु **शांत होवे** नः **हमारे लिए** कृत-अकृतम् **कृत और अकृत।** शान्तम् च **शांत होवे वह भी जो** भूतम् **हो चुका है और वह** च **भी जो** भव्यम्

होगा। नः हमारा सर्वम् एव सब कुछ ही शम् अस्तु शं होवे।

४४७/४ इयं या परमे-ष्ठिनी, वाग् देवी ब्रह्म-संशिता।
यथैव ससृजे घोरं, तयैव शान्तिर् अस्तु नः। अ १६.६.३

ब्रह्म-संशिता जल/अन्न/धन द्वारा ख़ूब प्रखर बनचुकी, इयम् यह या जो परमे-स्थिनी परम पर स्थिर देवी वाक् देवी वाणी है—यया एव जिस वाणी द्वारा ही घोरम् घोर का ससृजे सर्जन किया था तया एव उस वाणी द्वारा ही नः हमारे लिए शान्तिः अस्तु शांति होवे।

४४८/५ इदं यत् परमे-ष्ठिनं, मनो वा ब्रह्म-संशितम्।
येनैव ससृजे घोरं, तेनैव शान्तिर् अस्तु नः। अ १६.६.४

वा अथ वा, ब्रह्म-संशितम् जल/अन्न/धन द्वारा ख़ूब प्रखर बनचुका, इदम् यह यत् जो परमे-स्थिनम् परम पर स्थिर मनः मन है—येन एव जिस मन द्वारा ही घोरम् घोर का ससृजे सर्जन किया था तेन एव उस मन द्वारा ही नः हमारे लिए शान्तिः अस्तु शांति होवे।

४४९/६ इमानि यानि पंचेन्द्रियाणि मनः-षष्ठानि, मे हृदि ब्रह्मणा सं-शितानि। यैर् एव ससृजे घोरं, तैर् एव शान्तिर् अस्तु नः। अ १६.६.५

मे हृदि मेरे हृदय में ब्रह्मणा जल/अन्न/धन द्वारा सम्-शितानि ख़ूब प्रखर बनचुके इमानि ये यानि जो पञ्च इन्द्रियाणि पांच इन्द्रिय हो, मनः-षष्ठानि मन जिनके साथ छठा इन्द्रिय है—यैः एव जिन इन्द्रियों द्वारा ही घोरम् घोर का ससृजे सर्जन किया था तैः एव उन इन्द्रियों द्वारा ही नः हमारे लिए शान्तिः अस्तु शांति होवे।

४५०/७ यानि कानि चिच् छान्तानि, लोके सप्त-ऋषयो विदुः।
सर्वाणि शं भवन्तु मे, शं मे अस्त्व् अभयं मे अस्तु।
अ १६.६.१३

सप्त-ऋषयः **सप्त-ऋषि** यानि कानि चित् **जिन किन्हीं भी,** लोके शान्तानि **लोक-स्थ शांतों को** विदुः **जानते हो** सर्वाणि **वे सब** मे **मेरे लिए** शम् भवन्तु **शं हो जाएँ।** शम् **शं** मे अस्तु **मेरे लिए होवे।** अभयम् **भय-रहितता** मे अस्तु **मेरे लिए होवे।**

४५१/८ पृथिवी शान्तिर्, अन्तरिक्षं शान्तिर्, द्यौः शान्तिर्, आपः शान्तिर्, ओष-धयः शान्तिर्, वनस्+पतयः शान्तिर्, विश्वे मे देवाः शान्तिः, सर्वे मे देवाः शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः शान्ति-भिः। ताभिः शान्ति-भिः सर्व-शान्तिभिः शम् अयामोहं, यद् इह घोरं, यद् इह क्रूरं, यद् इह पापं, तच् छान्तं तच् छिवं सर्वम् एव शम् अस्तु नः। अ १९.९.१४

शान्तिः पृथिवी **शांति पृथिवी है,** शान्तिः अन्तरिक्षम् **शांति अन्तरिक्ष है,** शान्तिः द्यौः **शांति द्यौ है,** शान्तिः आपः **शांति जल है,** शान्तिः ओष-धयः **शांति ओष-धियां है,** शान्तिः वनस्-पतयः **शांति वनस्-पति है,** मे शान्तिः **मेरी शांति** 'विश्वे' देवाः **'विश्व' देव है,** मे शान्तिः **मेरी शांति** 'सर्वे' देवाः **'सर्व' देव है।** शान्तिः **शांति,** शान्ति-भिः शान्तिः **शांतियों के साथ शांति है।** ताभिः **उन** सर्व-शान्ति-भिः शान्ति-भिः **सब-शांतियों वाली शांतियों द्वारा** अहम् **मैं** शम् **शं को** अयामः **पारहा हूं।** यत् **जो कुछ** इह **यहां** घोरम् **घोर है,** यत् **जो कुछ** इह **यहां** क्रूरम् **क्रूर है,** यत् **जो कुछ** इह **यहां** पापम् **पाप है** तत् शान्तम् **वह शांत होवे,** तत् शिवम् **वह शिवं होवे**—नः **हमारे लिए** सर्वम् एव **सब ही** शम् अस्तु **शं होवे।**

भूर् भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्र-चोदयात्। य ३६.३

'नमः'-आ-हुतियां

४५२/१ उप त्वाग्ने! दिवे-दिवे, दोषा-वस्तर्! धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि। ऋ १.१.७

अग्ने! हे प्रकाश (परमेश्वर)! दोषा-वस्तः! हे मावस को पूनम करनेवाले! नमः अपना सर्वस्व—अन्न (भोग)/वज्र (संयम-साधना) त्वा तुझे भरन्तः अर्पण करतेहुए धिया अपनी धारणा द्वारा वयम् हम उप तेरे समीप दिवे-दिवे नित्य—प्रतिपल आ इमसि चले आरहे हो।

४५३/२ देवं नरः सवितारं, विप्रा यज्ञैः सु+वृक्ति-भिः।
नमस्यन्ति धियेषिताः। ऋ ३.६२.१२

धिया इषिताः धारणा द्वारा प्रेरित विप्राः मेधावी मनुष्य सु+वृक्ति-भिः भले के लिए यत्नशील यज्ञैः यज्ञों द्वारा सवितारम् देवम् सविता देव को नमस्यन्ति समर्पण कररहे हो।

४५४;४६६/३ इन्द्रे अग्ना नमो बृहत्, सु-वृक्तिम् एरयामहे।
धियोया धेना अवस्यवः। ऋ ७.९४.४

बृहत् नमः सम्पूर्ण समर्पण को, सु-वृक्तिम् भले के लिए यत्न को, धेनाः स्तुतियों को हम अवस्यवः रक्षणेच्छुक लोग इन्द्रे इन्द्र में, अग्ना अग्नि में धिया धारणा द्वारा आ ईरयामहे प्रस्तुत कररहे हो।

४५५;४६८/४ सम् अस्य मन्यवे विशो, विश्वा नमन्त कृष्टयः।
समुद्रायेव सिन्धवः। ऋ ८.६.४

अस्य इस(इन्द्र) के मन्यवे स्तवनार्थ/क्रोध(शमन) हेतु इसमें कृष्टयः आकृष्ट और प्रविष्ट विशः सब प्रजाएँ, (इसे) सम् स्वतः नमन्त समर्पण कररही हो अपने भले के लिए, समुद्राय-इव जैसे समुद्रार्थ सिन्धवः जल-प्रवाह स्वतः समर्पित होरहे हो।

४५६;४६७; नमस् ते अग्न ओजसे, गृणन्ति देव कृष्टयः।
४७१/५ अमैर् अमित्रम् अर्दय। ऋ ८.७५.१०

अग्ने! हे अग्नि! ते तेरे ओजसे ओज के लिए नमः प्रणाम है। देव! हे देव! तुझसे कृष्टयः आकृष्ट प्रजाएँ तेरी गृणन्ति स्तुति कररही हो। अपने अमैः बलों द्वारा हमारे अ-मित्रम् अ-स्नेही को तू अर्दय कुचल दे।

४५७;४७०/ दाशेम कस्य मनसा, यज्ञस्य सहसो यहो!।
६ कद् उ वोच इदं नमः। ऋ ८.८४.५

यज्ञस्य सहसः यहो! हे यज्ञ-बल के प्रत्यक्ष रूप! हमें कस्य ईश्वरीय/कौन से—मनसा मन से तेरे लिए दाशेम समर्पण करना चाहिए? उ भला, मैं कत् कब इदम् नमः इस नमन/समर्पण को वोचे बोल पारहा हूं।

४५८/७ शिवो नामासि स्व-धितिस् ते पिता,
नमस् ते अस्तु मा मा हिंसीः।
नि वर्तयाम्य् आयुषेन्नाद्याय प्र-जननाय,
रायस् पोषाय सु+प्र+जास्-त्वाय सु-वीर्याय। य ३.६३

नाम असि तू नाम है शिवः कल्याण, ते तेरा पिता रक्षक तेरा स्व-धितिः निज-आधार है। ते तेरे लिए हमारा नमः समर्पण अस्तु होवे। तू मा मेरी मा हिंसीः हिंसा मत कर। आयुषे आयु, अन्न-अद्याय भोग, प्र-जननाय प्र-जनन, रायः पोषाय धन के पोषण, सु-प्र-जाः-त्वाय सु-प्रजा की प्राप्ति, सु-वीर्याय सु-वीरता के लिए नि वर्तयामि मैं तुझे स्वतन्त्र कररहा हूं।

४५९/८ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे, महो देवाय तद् ऋतं सपर्यत।
दूरे-दृशे देव-जाताय केतवे, दिवस् पुत्राय सूर्याय शंसत।
य ४.३५

मित्रस्य मित्र देव और वरुणस्य नियामक आत्मा के चक्षसे दर्शन के लिए नमः नमन। हे लोगो! उस देवाय देव के लिए तत् उस महः ऋतम् महान् सत्य को तुम सपर्यत सेवन करो। दूरे-दृशे दूर-द्रष्टा, देव-जाताय देवों के जनक, केतवे ज्ञानमूर्ति दिवः पुत्राय द्यौ के रूप सूर्याय सूर्य का शंसत तुम लोग स्तवन करो।

४६०;४६६/ अग्ने! नय सु-पथा राये अस्मान्,
९ विश्वानि देव! वयुनानि विद्वान्।
युयोध्य् अस्मज् जुहुराणम् एनो,
भूयिष्ठां ते नम-उक्तिं विधेम। य ५.३६

अग्ने! हे अग्नि! अपने राये जीवन-सौन्दर्य के लिए अस्मान् हमें तुम सु-पथा सु-मार्ग से नय ले चलो। देव! हे देव! तुम विश्वानि आंतरिक वयुनानि गुत्थियों को विद्वान् समझते हो। जुहुराणम् कुटिल एनः पाप/अपराध को तुम अस्मत् हमसे परे युयोधि खदेड़ दो। ते तुम्हारे लिए भूयिष्ठाम् अधिकाधिक नमः-उक्तिम् विनम्र-विनय विधेम हमें करनी चाहिए।

४६१/१० नमः शम्-भवाय च मयो-भवाय च, नमः शं-कराय च मयस्-कराय च, नमः शिवाय च शिव-तराय च। य १६.४१

शम्-भवाय शांति-रूप च च और मयः-भवाय सुख-रूप आत्मा के लिए नमः समर्पण। शम्-कराय शांति-कर च च और मयः-कराय सुखकर आत्मा के लिए नमः समर्पण। शिवाय कल्याण च च और शिव-तराय अधिक कल्याण आत्मा के लिए नमः समर्पण।

४६२;४६४/ नमस् ते हरसे शोचिषे, नमस् ते अस्त्व् अर्चिषे।
११ अन्यॉंस् ते अस्मत् तपन्तु हेतयः,
पावको अस्मभ्यं शिवो भव। य १७.११

ते हरसे तुझ आकर्षण के लिए, शोचिषे पवित्रता के लिए नमः समर्पण। ते अर्चिषे तुझ लपट के लिए नमः समर्पण अस्तु होवे। तुम अस्मभ्यम् हमारे लिए पावकः पावनकर्ता, शिवः कल्याण भव हो जाओ। ते हेतयः तेरे ताप अस्मत् अन्यान् हमसे भिन्न—अन्- ऋषियों को लक्ष्य करके तपन्तु तपें।

४६३/१२ यो देवेभ्य आ-तपति, यो देवानां पुरो-हितः।
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो, नमो रुचाय ब्राह्मये। य ३१.२०

यः जो देवेभ्यः देवों के लिए आ-तपति ख़ूब तपरहा है, यः जो देवानाम् देवों में से पुरः-हितः पूर्व दिशा में स्थित देव है, यः पूर्वः जो पुरखा देवेभ्यः देवों से जातः प्रकटहुआ उस रुचाय ब्राह्मये रुचिमय वर्धनशाली के लिए नमः समर्पण।

४६४/१३ नमस् ते हरसे शोचिषे, नमस् ते अस्त्व् अर्चिषे।
अन्याँस् ते अस्मत् तपन्तु हेतयः,
पावको अस्मभ्यं शिवो भव। य ३६.२०

मंत्र-संख्या ४६२ पर अर्थ मौजूद है।

४६५/१४ नमस् ते अस्तु वि-द्युते, नमस् ते स्तनयित्नवे।
नमस् ते भग-वन्न्! अस्तु, यतः स्वः सम्-ईहसे। य ३६.२१

यतः क्यों कि हमारे लिए स्वः सुख को सम्-ईहसे तू कररहा है अतः ते तुझ वि-द्युते विशेष प्रकाश के लिए नमः समर्पण अस्तु होवे। ते तुझ स्तनयित्नवे गर्जन के लिए नमः समर्पण होवे। भग-वन्! हे भग-वान्! ते तेरे लिए नमः समर्पण अस्तु होवे।

४६६/१५ अग्ने! नय सु-पथा राये अस्मान्,
विश्वानि देव! वयुनानि विद्वान्।
युयोध्य् अस्मज् जुहुराणम् एनो,

भूयिष्ठां ते नम-उक्तिं विधेम। य ४०.१६

मंत्र-संख्या ४६० पर अर्थ मौजूद है।

४६७/१६ नमस् ते अग्न! ओजसे, गृणन्ति देव! कृष्टयः।
समुद्रायेव सिन्धवः। सा ११

मंत्र-संख्या ४५६ पर अर्थ मौजूद है।

४६८/१७ सम् अस्य मन्यवे विशो, विश्वा नमन्त कृष्टयः।
समुद्रायेव सिन्धवः। सा १३७

मंत्र-संख्या ४५५ पर अर्थ मौजूद है।

४६६/१८ इन्द्रे अग्ना नमो बृहत्, सु-वृक्तिम् एरयामहे।
धिया धेना अवस्यवः। सा ८००

मंत्र-संख्या ४५४ पर अर्थ मौजूद है।

४७०/१६ दाशेम कस्य मनसा, यज्ञस्य सहसो यहो!।
कद् उ वोच इदं नमः। सा १५५०

मंत्र-संख्या ४५७ पर अर्थ मौजूद है।

४७१/२० नमस् ते अग्न! ओजसे, गृणन्ति देव! कृष्टयः।
अमैर् अमित्रम् अर्दय। सा १६४८

मंत्र-संख्या ४५६ पर अर्थ मौजूद है।

४७२/२१ दिव्यो गन्धर्वो भुवनस्य यस् पतिर्,
एक एव नमस्यो विक्ष्व् ईड्यः।
तं त्वा यौमि ब्रह्मणा, दिव्य! देव!,
नमस् ते अस्तु दिवि ते सध-स्थम्। अ २.२.१

दिव्यः गन्धर्वः दिव्य गन्धर्व—यः जो भुवनस्य प्रवाह का पतिः रक्षक, विक्षु प्राणियों में एकः एव एक-मात्र नमस्यः प्रणम्य, ईड्यः प्रशंस्य है उस, दिव्य! हे दिव्य! देव! हे देव! ते तेरे लिए मेरा नमः समर्पण अस्तु होवे। दिवि द्यौ में मेरा और ते तेरा सध-स्थम् सह-निवास है। तम् उसे—त्वा तुझे ब्रह्मणा

अन्न/जल/धन द्वारा मैं यौमि मिलारहा हूँ।

४७३/२२ यस्य भूमिः प्र-मा,न्तरिक्षम् उतोदरम्।
दिवं यश् चक्रे मूर्धानं, तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।
अ १०.७.३२
तस्मै उस ज्येष्ठाय ब्रह्मणे श्रेष्ठ ब्रह्म के लिए नमः समर्पण है यस्य जिसका प्र-मा पैर भूमिः भूमि है उत और जिसका उदरम् पेट अन्तरिक्षम् अन्तरिक्ष है, यः जिसने अपना मूर्धानम् सिर दिवम् द्यौ को चक्रे बनाया था।
४७४/२३ यस्य सूर्यश् चक्षुश्, चन्द्रमाश् च पुनर्-णवः।
अग्निं यश् चक्र आस्यं, तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।
अ १०.७.३३
तस्मै उस ज्येष्ठाय ब्रह्मणे श्रेष्ठ ब्रह्म के लिए नमः समर्पण है यस्य जिसका चक्षुः चक्षु-द्वय सूर्यः सूर्य च और पुनः-नवः पुनर् नवीन चन्द्रमाः चन्द्रमा है, यः जिसने अपना आस्यम् मुख अग्निम् अग्नि को चक्रे बनाया था।
४७५/२४ यस्य वातः प्राणापानौ, चक्षुर् अङ्गिरसोभवन्।
दिशो यश् चक्रे प्र-ज्ञानीस्, तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।
अ १०.७.३४
तस्मै उस ज्येष्ठाय ब्रह्मणे श्रेष्ठ ब्रह्म के लिए नमः समर्पण है यस्य जिसके प्राणापानौ प्राण-अपान वातः वात हैं, जिसका चक्षुः चक्षु अंगिरसः अंगिरा लोग अभवन् हुए, यः जिसने अपने प्र-ज्ञानीः कान दिशः दिशाओं को चक्रे बनाया था।
४७६/२५ यः श्रमात् तपसो जातो, लोकान्त् सर्वान्त् सम्-आनशे।
सोमं यश् चक्रे केवलं, तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।

अ १०.७.३६
तस्मै उस ज्येष्ठाय ब्रह्मणे श्रेष्ठ ब्रह्म के लिए नमः समर्पण है

यः जो श्रमात् श्रम, तपसः तप से जातः प्रादुर्भूत है, यः जिसने सर्वान् लोकान् सब लोकों को सम्-आनशे एकीभाव से व्यापा हुआ है, यः जिसने केवलम् सोमम् अद्भुत सोम को चक्रे बनाया था।

४७७/२६ यो भूतं च भव्यं च, सर्वं यश् चाधि-तिष्ठति।
स्वर् यस्य् च केवलं, तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।
अ १०.८.१

तस्मै उस ज्येष्ठाय ब्रह्मणे श्रेष्ठ ब्रह्म के लिए नमः समर्पण है यः जो भूतम् भूत च और भविष्यत् भविष्यत् का, च और यः जो सर्वम् सबका अधि-तिष्ठति अधि-ष्ठाता है; च और यस्य जिसका केवलम् एकमात्र स्वरूप तो स्वः प्रकाश है।

४७८/२७ प्राणाय नमो, यस्य सर्वम् इदं वशे।
यो भूतः सर्वस्येश्वरो, यस्मिन्त् सर्वं प्रति-ष्ठितम्।
अ ११.४.१

उस प्राणाय प्राण के लिए नमः समर्पण है यस्य जिसके वशे वश में इदम् सर्वम् यह सब है, यः जो सर्वस्य सबका ईश्वरः स्वामी भूतः हो गया है, यस्मिन् जिस पर सर्वम् सब प्रति-स्थितम् आश्रित है।

भूर् भुवः स्वः। तत् सवितुर् वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो न प्र-चोदयात्। य ३६.३

याग-पद्धति का शेष

स्विष्टकृद्-आहुति

यद् अस्य कर्मणोत्य् अरीरिचं, यद् वा न्यूनम् इहाकरम्। अग्निष् टत् स्विष्ट-कृद् विद्यात्, सर्वं स्व्-इष्टं सु-हुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्ट-कृते सुहुत-हुते, सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां सम्-अर्धयित्रे, सर्वान्. नः कामान्त् सम्-अर्द्धय। स्वाहा। इदम् अग्नये स्विष्ट-कृते, इदं न मम। शतपथब्राह्मण १४ ९.४.२४

प्राजापत्य्-आहुति

प्रजा-पतये। स्वाहा। इदं प्रजापतये, इदं न मम।

पूर्णाहुति

सर्वं वै पूर्णम्। स्वाहा। (तीन बार)

आशीर्-वाद (पुष्पवर्षा-सहित)

(ब्रह्मा बुलवाए और सब बोलें)

ओं, सत्याः सन्तु यजमानस्य/यजमानानां कामाः। य १२.४४

ओं, सौभाग्यम् अस्तु ।

ओं, शुभं भवतु ।

ओं, स्वस्ति। (तीन बार)

वामदेव्य-गान

१ कया नश् चित्र आ भुवद्, ऊती सदा-वृधः सखा।
कया शचिष्ठया वृता। ऋ ४.३१.१; य २७.३९; ३६.४; सा १६९; ६८२; अ २०.१२४.१

सदा सु महान्, चित्र,
होवे हमारा सखा,
आनन्दमयी रक्षा, आनन्दमयी प्रबल प्रेम गति के साथ।

२ कस् त्वा सत्यो मदानां, मंहिष्ठो मत्सद् अन्धसः। दृढा चिद् आ-रुजे वसु।
ऋ ४.३१.२; य २७.४०; ३६.५; सा ६८३; अ २०.१२४.२
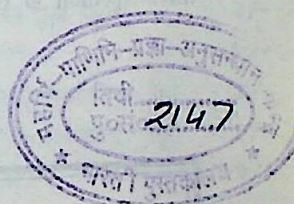
आनन्दों का बढ़ानेवाला कौन-सा सत्य,
तुझे प्रसन्न करे आनन्द-हवि से?
न्योछावर करता हूँ दृढ़ प्राण।

३ अभी षु णः सखीनाम्, अविता जरितॄणाम्। शतं भवास्यूतये।
ऋ ४.३१.३; य २७.४१; ३६.६; सा ६८४; अ २०.१२४.३

स्तुति करनेवाले हम सखाओं का
होरहा तू सर्वतः सुष्ठु रक्षक,
शतशः सुरक्षाओं के साथ।

पाठक से

वेद-संस्थान इस पुस्तक की विषय-वस्तु, लेखनशैली और आकार-प्रकार के बारे में आपके विचारों के लिए आभारी होगा। अन्य कोई सुझाव आप देना चाहें तो उन्हें जानकर भी हमें प्रसन्नता होगी। हमारा पता है :

वेद-संस्थान, सी २२, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली ११० ०२७
(दूरभाष : (०११)-५१० २३ १६)

पंचम संस्करण : नवम्बर, २००२ ई.
ISBN : 81-85724-04-0
प्रकाशक : वेद-संस्थान, सी २२, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली ११० ०२७
मुद्रक : बी. बी. ग्राफिक्स प्रिंटर, १६६२/२ गोविंदपुरी कालकाजी नई दिल्ली-११००१९

वेद-संस्थान के प्रकाशन

(अ-कारादि-क्रम से)

पुस्तक	मूल्य
अध्यात्म-सुधा (पुष्प १२)	२१/-
ईशावास्योपनिषत्	१५/-
ईशोपनिषत्	१५/-
ओंकारोपासना	२/-
कल्पपुरुष दयानन्द	४/-
गायत्री	४/-
गायत्री मंत्र का अनुष्ठान	१०/-
गृहस्थविज्ञान	८/-
गृहस्थाश्रम	३/-
गृहस्थाश्रम की सुव्यवस्था (पु०२)	२/-
ढाई अक्षर वेद के	५०/-
जगती का आनंदमयीकरण (पु०१६)	७/-
जीवन-ज्योतियाँ	३/-
जीवन-पाथेय	३/-
जीवनसंग्राम-शास्त्र (पु०६)	३/-
जौहर-गान	१/-
दयानन्द और उनका वेदभाष्य	१०/-
दयानन्द-चरितामृत	६/-
दिव्य दंपतियों का निर्माण (पु०५)	२/-
परमयोग	७/-
पृथिवी का दिव्यीकरण (पु०४)	२/-
प्रगतिशील भारतीयता को वेदों की देन	१२/-
प्रभु से विनय	६/-
भारत के अध्यापकों से	२/-
भारत के विद्यार्थियों से	४/-
भावी वेदभाष्य के संदर्भ-सूत्र	१५/-
महमृत्युंजय मंत्र का अनुष्ठान	५/-
मानवधर्म	२/-
यजुर्वेद-व्याख्या (दूसरा भाग)	१२०/-
यज्ञमय जीवनपद्धति (पु० १८)	४/-
यज्ञोपवीत-रहस्य	१/-
योग-जीवनपद्धति (पु० ११)	४/-
योगतरंग	४/-
योगशास्त्र (पु० ८)	४/-
योगालोक	१६/-
रक्षाशास्त्र (पु० १६)	३/-
रामचरित	५/-
राष्ट्रनिर्माण-शास्त्र (पु० १०)	३/-
वाचस्पति-संस्थान (पु० ७)	३/-
विजययाग	२/-
विजययाग (अर्थसहित)	१५/-
'विदेह'-गाथा	५०/-
'विदेह'-गीतांजलि (कैसेट)	३०/-
'विदेह'-गीतावली	८/-
'विदेह'-वाणी (तीन भाग) प्रत्येक भाग : १०/-	३०/-
विवेकमय जीवन (पु० २०)	७/-
विश्वकल्याण (पु० १३)	२/-
विश्वसुधार	२/-
वृष्टियज्ञ-पद्धति	२/-
वेदमाता	३/-
वेद में सुपर्ण (पत्रिका विशेषांक)	१०/-
वेद में सृष्टिविचार	२५/-
वेदालोक (दो भाग) प्रथम भाग ४००/- द्वितीय भाग ८०/-	४८०/-

वेदालोक (प्रथम भाग) पुस्तकालय सं.	८००/-
वेदों की सूक्तियाँ	१०/-
वैदिक एकेश्वरवाद और ओंकार	४/-
वैदिक बालशिक्षा (दो भाग)	८/-
प्रथम भाग ५/-	
चतुर्थ भाग ३/-	
वैदिक योगपद्धति	२/-
वैदिक सत्संग	५/-
वैदिक स्त्रीशिक्षा (दो भाग)	४/-
प्रत्येक भाग २/-	
व्यक्तित्व का सुनिर्माण (पु० १)	२४/-
शिक्षाशास्त्र (पु० ६)	२/-
शिव-संकल्प	४/-
सत्यनारायण की कथा	४/-
सन्ध्या-मंत्रों के भावार्थ	२/-
सन्ध्या-योग	४/-
समृद्धिकरण (पु० १७)	४/-
संस्कृत-स्वयं-शिक्षक	५/-
साधना	८/-
साधना-विज्ञान (पु० ३६)	२/-
सार्वभौम ध्रुवता (पु० १४)	२/-
सार्वभौम मानवता (पु० १५)	४/-
सुपर्णांक (पत्रिका-विशेषांक)	१०/-
स्वास्थ्य और सौन्दर्य	१०/-
हिन्दु जाति के अस्तित्व की रक्षा	४/-
Health and Beauty	10/-
Sandhya and Agnihotra	10/-
The Science of Yoga	10/-
The Vedic Prayers	10/-
Vedic Havan-Therapy	10/-

'सविता' पत्रिका की पुरानी वार्षिक जिल्दें

वर्ष २०	८/-
" २१	८/-
" २२	८/-
" २७	८/-
" २८	२०/-
" ३०	८/-
" ३१	१७.५०/-
" ३२	१३/-

'वेद-सविता' पत्रिका की पुरानी वार्षिक जिल्दें

वर्ष १	१२/-
" २	१७/-
" ३	१७/-
" ४	१७/-
" ५	२०/-
" ६	२२.५०/-
" ८	२५/-
" ९	२५/-

('सविता'/'वेद-सविता' के कुछ अन्य वर्षों के कुछ फुटकर अंक भी सुलभ हो।)

श्रीमति बिमला रानी आहूजा - श्री नरोत्तम लाल आहूजा

(1926-1986) (1922-1998)

स्वामी विद्यानन्द 'विदेह'
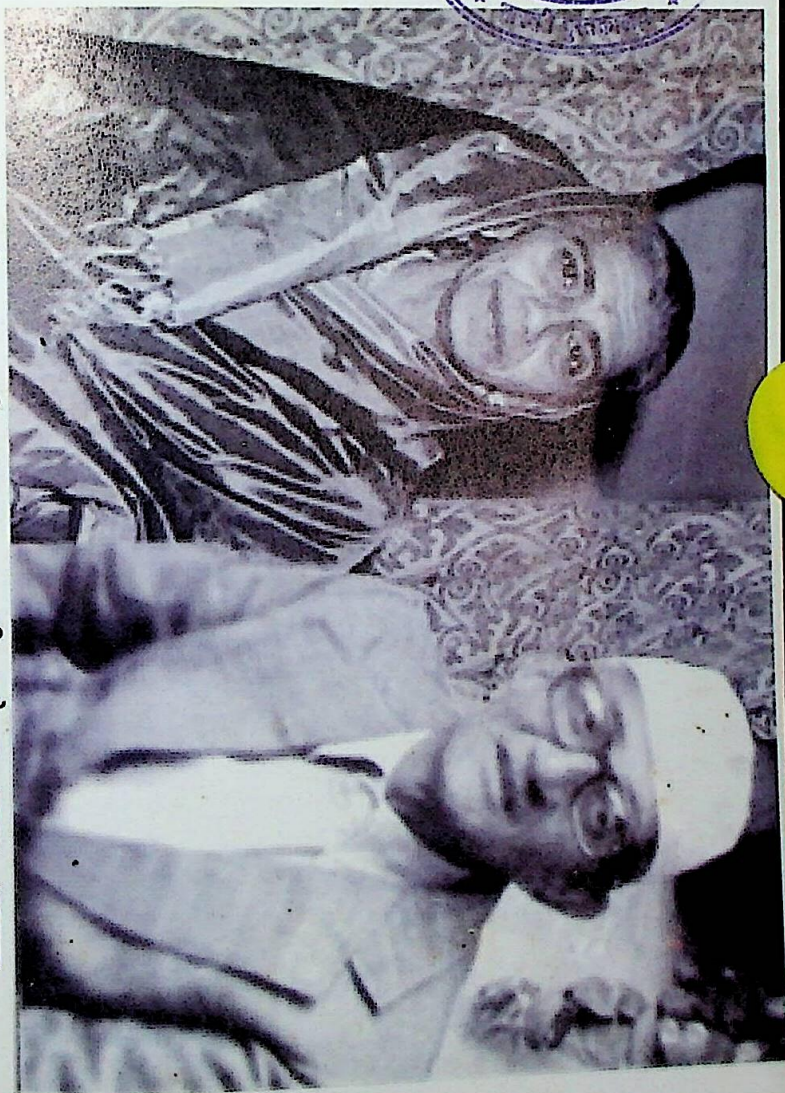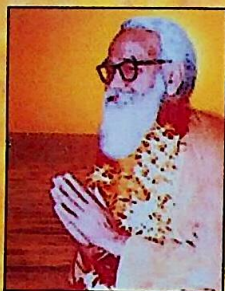
जन्म : १५ नवंबर, १८९९ ई.; निधन : ५ मार्च, १९७८ ई.। वेद-संस्थान के संस्थापक-अध्यक्ष। वेदों के मार्मिक व्याख्याता, चिन्तक,कवि और संन्यासाश्रमी सन्त। वाणी में अद्भुत माधुर्य और हृदय को छू लेने की क्षमता। व्यक्तित्व जो तत्काल आकर्षित कर लेता था आत्मीयता, स्नेह, सरलता से। सतत कर्मरत, प्रतिक्षण साधनामय, भक्ति और निष्ठा से ओतप्रोत जीवन। लेखन की शैली ललित, प्रसादगुणयुक्त, अनावश्यक विस्तार से रहित।

'विदेह' का बीसवीं शताब्दी के वेदज्ञों में एक विशिष्ट स्थान है। वे वेदों के मर्मज्ञ व्याख्याकार होने के साथ एक प्रखर, मौलिक चिन्तक और कवि थे। वे मूलतः योग और अध्यात्म के व्यक्ति थे। अतः वेदों के वास्तविक मर्म तक उनकी पहुँच अद्भुत थी। उनकी वाणी और लेखनी में वेदमंत्रों का वास्तविक आशय ऐसे खिल उठता था जैसे सूर्य के प्रकाश से खिलकर कली पुष्प हो जाती है। उन जैसा वेदव्याख्याता इस बीसवीं शताब्दी में ही क्या पूर्व की शताब्दियों में भी विरल ही दृष्टिगोचर होता है जिसे वेद-रहस्यों का ऐसा उन्मेष हुआ हो और साथ ही जिसने वेद को इतना सरल, सरस और दैनन्दिन जीवन से जुड़ाहुआ प्रस्तुत किया हो।
श्री स्वामी 'विदेह' ने कामना-विशेष से होम करने की दृष्टि से 'स्वस्ति-याग' और 'विजय-याग' शीर्षक से दो मंत्रसंकलन तैयार किए थे। उनमें मंत्रों के अर्थ नहीं थे। स्वाध्यायशील वैदिकों की मांग पर 'विजय-याग' का अर्थ-सहित संस्करण पहले ही प्रकाशित हो चुका है। 'स्वस्ति-याग' के इस संस्करण में मंत्रार्थ भी दिए जारहे हैं।

रु ३०/-